# सर्वोत्तम सूक्तियां

भाग्य है युक्ति का अवशिष्ट.
—ब्रांच रिकी (१८८१-१९६५),
बेसबाल विशेषज्ञ

यौवन तो हर व्यक्ति देख चुका होता है, पर बुज़ुर्गीयत नहीं.
—अफ़्रीकी कहावत

तगड़े तिरस्कार में ही निहित होता है एक तगड़ा व्याख्यान.
—राल्फ़ वाल्डो एमरसन (१८०३-८२),
कवि एवं निबंधकार

आप के विकास की धारा अविरल हो तो आप उस की कलकल भी सुन सकते हैं.
—ऐन ज़्विंगर,
'रन, रिवर रन' (हार्पर एंड रो)

मूढ़ सोचते हैं कि बिल्लियों के आपसी झगड़े से उठने वाला शोर ही जुगुप्सा उत्पन्न किया करता है. पर सच्चाई यह नहीं—इस का मूल कारण होता है उन के द्वारा प्रयुक्त व्याकरण.
—मार्क ट्वेन (१८३५-१९१०),
लेखक एवं व्यंग्यकार

इतिहास इस तथ्य को कभी अनदेखा नहीं कर पाएगा कि सामाजिक संक्रांति के इस युग की सब से बड़ी त्रासदी बुरे लोगों का चित्कार नहीं, अपितु भले लोगों की चुप्पी रही है.
—मार्टिन लूथर किंग (१९२९-६८),
अश्वेत मानवाधिकारवादी

## सर्वोत्तम रीडर्स डाइजेस्ट

चौथा वर्ष : अंक ४७ दिसंबर १९८४

भारतीय संस्करणों के प्रमुख संपादक : अशोक महादेवन
संपादक : अरविंद कुमार
सहायक संपादक : ललित सहगल, सुशील कुमार
संपादन मंडल:
अरुण कुमार, महेश नारायण भारती

विज्ञापन विभाग :
चंद्रन थरूर (निदेशक)
विवियन डी सूज़ा (क्षेत्रीय प्रबंधक, दिल्ली)
पी एस माधवन (क्षेत्रीय प्रबंधक, मद्रास)
रंजन बक्शी (क्षेत्रीय प्रबंधक, कलकत्ता)

अन्य विभाग :
विनायक उकिडवे (वित्त निदेशक)
संजय जौहरी (वितरण नियंता)
सुहास विसने (मुद्रण प्रबंधक)
मुकुल गुप्ता (वितरण अधिकारी)

शुल्क :
रु. ९०.०० प्रति वर्ष, डाक व्यय अतिरिक्त
जानकारी के लिए लिखें : सर्वोत्तम रीडर्स डाइजेस्ट,
बी-१५, झिलमिल इंडस्ट्रियल एरिया, दिल्ली-११००३२
'सर्वोत्तम रीडर्स डाइजेस्ट' आर डी आई प्रिंट एंड पब्लिशिंग प्राइवेट लिमिटेड द्वारा प्रकाशित किया जाता है.
पंजीकृत कार्यालय : ओरियंट हाउस, मंगलौर स्ट्रीट, बलार्ड एस्टेट, बंबई ४०००३८

प्रकाशक तथा प्रबंध निदेशक : अनील गोरे

रीडर्स डाइजेस्ट
प्लेज़ेंटविल, न्यू यार्क
संस्थापक : डी विट वालेस और लीला एचेसन वालेस

रीडर्स डाइजेस्ट के अंतरराष्ट्रीय संस्करण
प्रमुख संपादक : केनेथ ओ गिलमोर
संचालन संपादक : आर्ले द लाइरो
अध्यक्ष एवं मुख्य संचालन अधिकारी : जार्ज वी ग्रून

अंतरराष्ट्रीय संस्करण १७ भाषाओं में प्रकाशित किए जाते हैं और उन के प्रमुख कार्यालय इस प्रकार हैं : अम्सटर्डम (डच), एथेंस (ग्रीक), ओसलो (नारवेजियन), केप टाउन (अंगरेजी), कोपेनहेगन (डेनिश), ज़्यूरिख़ (जरमन और फ़्रेंच), तोकियो (जापानी), दिल्ली (हिंदी), पेरिस (फ़्रेंच और अरबी), बंबई (अंगरेजी), मिलान (इटालियन), मेक्सिको सिटी (स्पेनिश), मैड्रिड (स्पेनिश), मौंटरीयल (अंगरेजी और फ़्रेंच), लंदन (अंगरेजी), लिसबन (पुर्तगाली), सिडनी (अंगरेजी), सीयोल (कोरियन), स्टटगार्ट (जरमन), स्टाकहोम (स्वीडिश), हांगकांग (चीनी), हेलसिंकी (फिनिश).


Published by Anil Gore for RDI Print & Publishing Pvt. Ltd., from B-15, Jhilmil Industrial Area, Delhi 110 032 and printed by him at Tej Press, Bahadur Shah Zafar Marg, New Delhi 110 002.

कतरनें

# "वे नहीं रहीं"

नई दिल्ली, ३१ अक्तूबर. "मेरी घड़ी में समय था ९ बज कर ८ मिनट और २७ सेकंड. मुझे पहले तीन धमाके सुनाई दिए. लोगों ने कहा—यह पटाख़ों की आवाज़ है. और तब आई धमाकों की तड़ातड़—जो स्पष्टतः स्टेनगन के चलने की आवाज़ थी. इस के बाद लंबा ठहराव, और फिर स्टेनगन के दो धमाके सुनाई दिए."

विश्व प्रसिद्ध अभिनेता, निर्देशक और लेखक पीटर उस्तीनोव श्रीमती गांधी के निवास स्थल के घास के मैदान में बैठे उन से इंटरव्यू का इंतज़ार कर रहे थे. वे अपनी फ़िल्म सीरीज़ 'उस्तीनोव्ज़ पीपुल' की एक कड़ी का फ़िल्मांकन करने यहां आए थे, जिस का विषय था श्रीमती इंदिरा गांधी. ("मैं उन से पूछना चाहता था कि एकमात्र संतान होने के नाते उन्हों ने अपने अकेलेपन को कैसे भोगा?")तभी उस्तीनोव ने 'मौत की आवाज़' सुनी.

—'हिंदुस्तान टाइम्स', नई दिल्ली : १ नवंबर १९८४

बुधवार की सुबह श्रीमती गांधी की निर्मम हत्या इस अर्थ में पूर्णतः विडंबनापूर्ण थी कि हत्यारे वहीं थे जिन्हें इस प्रकार की दुर्घटना से उन की रक्षा करने के लिए तैनात किया गया था. लेकिन जनमानस पर इस विडंबना से भी अधिक जो चीज़ अपनी छाप छोड़ेगी वह है देश के सर्वाधिक महत्वपूर्ण व्यक्ति की सुरक्षा व्यवस्था का निंदनीय रूप से फ़ेल हो जाना.

—संपादकीय, 'टाइम्स आफ इंडिया', नई दिल्ली : २ नवंबर

तीन गार्ड आक्रमणकारियों से जूझ रहे थे. दो गार्डों ने श्रीमती गांधी को एक कार तक ले जाने में मदद की. अपनी पुत्रवधु सोनिया की गोदी में सिर रखे श्रीमती गांधी को आल इंडिया इंस्टीट्यूट आफ़ मेडिकल साइंसेज़ ले जाया गया. वे बेहोश नज़र आती थीं; संभव है अस्पताल पहुंचने तक वे मर चुकी हों. "किसी के शरीर में इतनी सारी गोलियां लगी हों तो बचना मुश्किल है," एक डाक्टर ने कहा, जिस ने आपात्कक्ष में उन्हें बचाने की कोशिश की थी. फिर भी उन्हें आपरेशन रूम में ले जाया गया. वहां १२ डाक्टरों का दल उन के दिल की धड़कन वापस लाने की कोशिश में जुट गया. लेकिन १६ गोलियां उन के शरीर के मर्मपूर्ण अवयव पर लगी थीं—हृदय की महाधमनी, फेफड़े और जिगर छलनी हो चुके थे. डाक्टरों ने बड़े पैमाने पर रक्त दिया, हृदय के 'बाई पास' आपरेशन के प्रयत्न किए और कुछ गोलियां निकालने की कोशिश की. अंततः तीसरे पहर २ बज कर २० मिनट पर इंस्टीट्यूट के मेडिकल सुपरिनटेंडेंट डाक्टर ए एन सफ़ाया को यह मानना पड़ा : "प्रधान मंत्री मर गई हैं."

—'न्यूज़वीक', न्यू यार्क : १२ नवंबर

श्रीमती इंदिरा गांधी की भयानक हत्या ऐसे समय हुई जब अधिकांश महत्वपूर्ण लोग राजधानी से बाहर थे...

राष्ट्रपति ज्ञानी ज़ैल सिंह विदेशी दौरे पर थे. वे

अपना कार्यक्रम दो घंटे काट कर ५ बजे शाम दिल्ली पहुंचे.

श्री राजीव गांधी वित्त मंत्री प्रणव मुखर्जी और रेल मंत्री अब्दुल ग़नी ख़ां चौधरी के साथ पश्चिम बंगाल के दौरे पर थे. उन्हें लाने विशेष विमान भेजा गया. गृह मंत्री श्री पी वी नरसिंह राव आंध्र प्रदेश में वारंगल में थे. रक्षा मंत्री शंकर राव चव्हाण कल ही मास्को गए थे...

कैबिनेट सेक्रेटरी श्री कृष्णस्वामी राव साहब और प्रधान मंत्री के प्रमुख सचिव पी सी अलेग्ज़ांडर आणविक ऊर्जा पर एक कान्फ्रेंस में भाग लेने बंबई में थे. वे दोनों जल्दी जल्दी दिल्ली पहुंचे और नीति आयोजक समिति के अध्यक्ष श्री जी पार्थसारथी के साथ आल इंडिया इंस्टीट्यूट आफ़ मेडिकल साइंसेज़ आए.

—टाइम्स आफ़ इंडिया, नई दिल्ली : १ नवंबर

"हे भगवान, उन्हें माफ़ कर दे जिन्हों ने यह ग़लत काम किया है और मेरी बहन इंदिरा को बचा ले," आल इंडिया मेडिकल इंस्टीट्यूट में बैठी एक बूढ़ी औरत बार बार यही कह रही थी. अपने दो संरक्षकों द्वारा गोली मारे जाने के बाद श्रीमती गांधी को जल्दी जल्दी यहां लाया गया था. अस्पताल में बैठी वह बूढ़ी अनेक देवताओं का, राम रहीम का, शेरां वाली देवी का, सभी पीर पैग़ंबरों का आवाहन कर रही थी कि वे 'हिंदुस्तान की मलिका' और 'भारत की मां' को बचा लें.

उस के पास ही एक लंगड़ी औरत बैसाखियों के सहारे खड़ी थी और गायत्री मंत्र का जाप किए जा रही थी. उसे इस मंत्र की शक्ति में पूरा भरोसा था. वह गिड़गिड़ा कर रक्षा गार्डों से कह रही थी कि उसे इंदिरा जी के पास जाने दें क्योंकि उस के गायत्री जाप से वे ठीक हो जाएंगी.

लेकिन उन सब की प्रार्थना नाकाम रही ... ४:१० पर एक महिला संसद सदस्या कैजुअल्टी वार्ड से बाहर आई. उस ने बताया कि इंदिरा जी नहीं रहीं. इंतज़ार करती भीड़ विलाप कर उठी.

कुछ औरतें छाती पीट पीट कर सियापा करने लगीं, कुछ कहने लगीं, दाना पानी उठ गया. एक आदमी ने हाथों से चेहरा ढक लिया और दहाड़ें मार कर रोने लगा.

फ़ोटो : प्रमोद पुष्करणा (इंडिया टुडे)
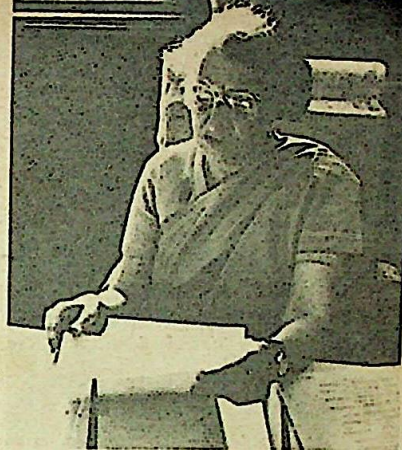
एक बच्चा ख़बर सुन कर स्कूल से सीधा अस्पताल चला आया था. उस ने कहा, "मैं ने कभी सोचा तक न था कि इंदिरा गांधी भी मर सकती हैं."

—स्टेट्समैन, नई दिल्ली : १ नवंबर

ख़बर फैलती गई जैसे शरारती बच्चों के तालाब में पत्थर फेंकने पर लहरें चारों ओर व्यापती जाती हैं.

'वे नहीं रहीं' — यह ख़बर आज देर तक इस मुंह से उस मुंह तक फैलती रही — क्योंकि तब तक आकाशवाणी और दूरदर्शन मौन थे.

'वे नहीं रहीं' —इन शब्दों ने अंतरतम में निराशा के तारों को झनझना दिया. आल इंडिया इंस्टीट्यूट आफ़ मेडिकल साइंसेज़ के चारों ओर जमा भीड़ जो अब तक कोलाहल पूर्ण प्रार्थनाओं में मगन थी, अचानक प्रतिहिंसक हो उठी...

वे नहीं रहीं—लगा जैसे अस्पताल की विषाणु रहित दीवारों के बीच दुनिया थम गई और उन्माद के कीटाणु भाग निकले, एक जाति विशेष के प्रति क्रोध फूट कर बह निकला और भीड़, जो भी सामने पड़ा, उस पर पथराव करने लगी.

—चांद जोशी, 'हिंदुस्तान टाइम्स', नई दिल्ली : १ नवंबर

हिंदू प्रतिहिंसा की अविश्वसनीय क्रूरता को न सिर्फ़ हत्या की तथा सिख आतंकवादियों की हिंदुओं के प्रति हिंसा की पृष्ठभूमि में देखा जाना चाहिए, बल्कि इस परिप्रेक्ष्य में भी कि सिखों के धार्मिक और राजनीतिक नेतृत्व ने हत्या की निंदा करने से और

प्रधान मंत्री की मृत्यु पर शोक प्रदर्शन से इनकार कर दिया.

—संपादकीय, 'हेरल्ड रिव्यू', बंगलौर : ११ नवंबर

इंदिरा गांधी की हत्या में विपक्ष के उन अनेक नेताओं के लिए भी एक पाठ निहित है, जो राष्ट्रीय हित को ताक पर रख कर अपने दलगत लाभ के लिए असद्भाषण तक उतर आते थे. इंदिरा गांधी की राजनीतिक प्रगल्भ उद्घोषणाओं का मुकाबला न कर पाने पर वे उन के सिद्धांतों की निंदा करने लगते और उन के कथनों की सत्यता में संदेह प्रकट करने लगते. जब इंदिरा जी ने देश पर मंडराते ख़तरे की और आतंकवाद से भय की बात की तो उन्हों ने इस को चुनाव के हथकंडे बता कर मज़ाक उड़ाया.

शोक, वे इस त्रासद विधि से ग़लत सिद्ध हुए.

—संपादकीय, 'हिंदुस्तान टाइम्स', नई दिल्ली : १ नवंबर

वे (इंदिरा जी) इस से अनभिज्ञ नहीं हो सकती थीं कि वे ख़तरे में हैं. यह जानने के लिए उन्हें सुरक्षा अधिकारियों से सूचना की ज़रूरत नहीं थी. यह तभी से स्पष्ट था जब देश की एकता के संरक्षक की हैसियत से अपना कर्त्तव्य सरअंजाम देने के लिए उन्हों ने ६ जून को स्वर्ण मंदिर में सेना के प्रवेश के आदेश दिए. पर इस के बाद भी उन्हें तो अपने दायित्व निभाने थे और इस के लिए उन्हें दिन प्रति दिन देश के विभिन्न भागों में जाना पड़ता था. इस का मतलब था : ख़तरा, जिस की उन्हों ने अवहेलना की. करनी ही थी. लोकतंत्रों के नेता पूर्णत: सुरक्षित क़िलों में बैठे रह कर तो काम नहीं कर सकते.

—संपादकीय, 'टाइम्स आफ इंडिया', नई दिल्ली

प्रेस ट्रस्ट आफ़ इंडिया की रपट के अनुसार श्रीमती गांधी को अपने पर होने वाले आघात की आशंका पहले ही हो गई थी.

उड़ीसा के दो दिन के दौरे के अपने अंतिम भाषण में मंगलवार की शाम को भारी भीड़ से भावुक स्वर में उन्हों ने कहा कि अगर वे देश की ख़ातिर मर भी गईं तो उन्हें अपने पर गर्व होगा. "मेरे ख़ून का कतरा कतरा देश की उन्नति के काम आएगा और उसे सुदृढ़ और गतिशील बनाएगा," उन्हों ने कहा.

उन के दल के सदस्यों को प्रधान मंत्री के इस वक्तव्य पर आश्चर्य हुआ. उन में से एक ने अपने साथ यात्रा करने वाले संवाददाता से कहा, "ख़ून की बात करने की ज़रूरत क्या थी?"

यूनाइटेड न्यूज़ आफ़ इंडिया ने कहा है कि उड़ीसा से लौट कर श्रीमती गांधी ने अपने घर पर काम करने वालों से कहा कि इस वर्ष १९ नवंबर को उन का जन्म दिन नहीं मनाया जाएगा. "देख लेना इस साल मेरे जन्म दिन पर समारोह नहीं होगा. देश कई आवश्यक चीज़ों में व्यस्त है, और पता नहीं उस दिन मैं कहां हूंगी."

—'स्टेट्समैन', नई दिल्ली : १ नवंबर

भाग्य, संयोग या नियति मुझे (बंबई से) दिल्ली ले आई और मैं सफ़दरजंग रोड से कुछ ही मील की दूरी पर मौजूद था, जब इंदिरा गांधी पर १६ गोलियां चलाई गई.

मैं ने दिल्ली के रेडियो स्टेशन भवन में जब यह ख़बर सुनी, तो मुझे अचानक श्रीमती गांधी की एक बात याद आ गई, जो उन्हों ने मुझ से एक मुलाकात में कही थी, लेकिन मुझ से वादा ले लिया था कि वह बात उन की मौत के पहले मैं प्रकाशित नहीं करूंगा. मैं ने कहा था कि मेरे पहले उन की मौत मुमकिन नहीं है; क्योंकि मैं उन से उम्र में बड़ा हूं. तब वे मुस्कराई थीं : "कौन जानता है, अब्बास साहब?"

हम गांधी जी के बारे में बात कर रहे थे कि अचानक वे बोल पड़ीं : "मैं... मेरी इच्छा है कि मेरी मौत गांधी जी की तरह हो, अचानक, किसी लंबी बीमारी के बाद नहीं— क्योंकि मैं जानती हूं कि ज़िंदगी और मौत के संघर्ष में मेरे पिता ने कितनी असहनीय वेदना झेली थी."

वह उसी तरह मरीं, जैसी उन की कामना थी, जैसी उन्हों ने उम्मीद की थी.

—ख़्वाजा अहमद अब्बास, 'हिंदी ब्लिट्ज़', बंबई : १० नवंबर

मैं उन का प्रशंसक था क्योंकि वे राष्ट्र से प्रेम करती थीं, वे भारत के लिए उठी थीं, वे भारत की प्रतीक बन गई थीं. उन का अहं देश का अहं था. "हम हिंदुस्तानी यह नहीं कर सकते" या "हम कोई भी चीज़ ठीक से नहीं कर सकते" कहते रहने वाले हर हिंदुस्तानी से वह सौ बार कहती थीं कि हम कर सकते हैं. बहुत से लोग हैं जिन्हों ने अपने क्षेत्र में सफलता पाई है या बहुत पैसा जमा किया है. वे बैठे
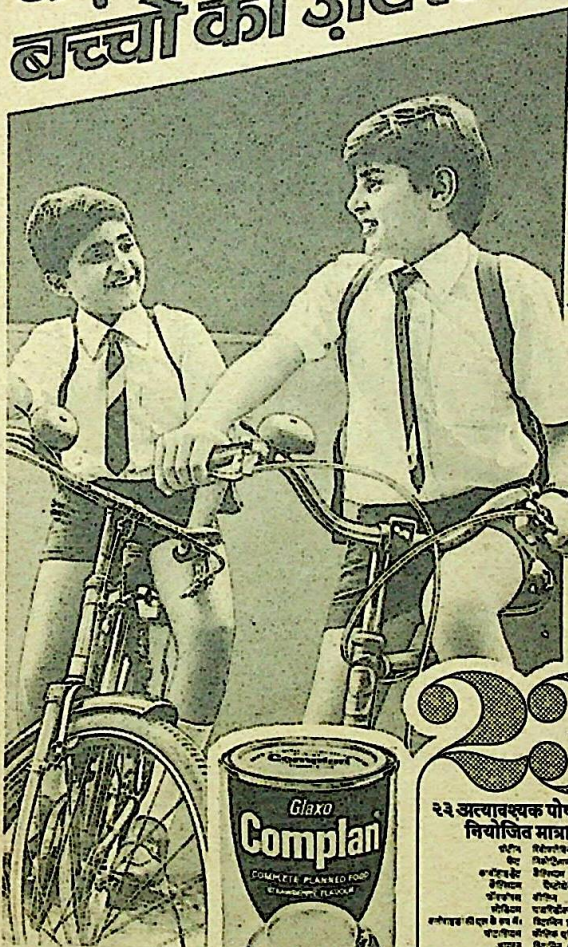
बढ़ते
बच्चों की ज़रूरत कॉम्प्लान
सिर्फ़ कॉम्प्लान में ही २३ अत्यावश्यक पोषक तत्त्व हैं जिनकी उनको रोज़ाना ज़रूरत है.
साधारणतया १५ या १६ की उम्र तक बच्चों के शरीर का पूर्ण विकास हो जाता है.
शरीर के विकास में जो पोषक तत्व सीधे सहायक होते हैं वे प्रोटीन हैं. इसीलिए आपके बच्चों को कॉम्प्लान की ज़रूरत है, इसी समय.
कॉम्प्लान में सर्वोत्तम प्रोटीन– दुग्ध प्रोटीन (२०%) है. इसमें २२ अन्य अत्यावश्यक पोषक तत्व भी हैं
कॉम्प्लान स्वादभरे ज़ायकों में मिलता है.
Glaxo
Complan
23
२३ अत्यावश्यक पोषक तत्व नियोजित मात्रा में
दूध मिलाने की ज़रूरत नहीं.
कॉम्प्लान®–परिपूर्ण नियोजित आहार
GK&E.B84.GLC 68 Hin

बैठे देश की निंदा करते नहीं थकते. लेकिन इंदिरा जी अपने देशवासियों का आत्मविश्वास जगाने का प्रयास करती थीं. ऐसा नहीं कि उन का देश प्रेम संकुचित था, बल्कि बस इतना था कि वे जानती थीं कि यह देश क्या कर सकता है, देश ने क्या कर दिखाया है. इस लिए वे हमारे समाज की कमियों और कमज़ोरियों पर बहुत ज़ोर नहीं देती थीं. बहुत से लोगों को हमारी कमियां देखने में, हमारी गंदगी की इंस्पेक्टरी करने में और विदेशियों का ध्यान उन की तरफ़ आकर्षित करने में मज़ा आता है, लेकिन इंदिरा जी को हमारे गौरव और राष्ट्र की भावी महानता पर विचार करना पसंद था.

—अबु अब्राहम, 'हिंदुस्तान टाइम्स', नई दिल्ली
११ नवंबर

"वे भारत के आत्मसम्मान और आत्मविश्वास का अदमनीय प्रतीक बन गईं. मृत्यु उन के पास तब आई जब वे अपने चरमोत्कर्ष पर थीं, जब उन की प्रतिष्ठा और उन का प्रभाव पूरे विश्व में प्रतिध्वनित हो रहा था."

—भारत सरकार द्वारा प्रशस्ति

महात्मा गांधी की हत्या से अब तक इस से बड़ा सदमा भारतीय राजनीति को नहीं पहुंचा था. इंदिरा गांधी पर आक्रमण भारत पर, भारत की स्थिरता पर, और लोकतांत्रिक परंपरा पर आक्रमण था. हत्या और हिंसा की राजनीति को सफल होने नहीं दिया जा सकता. यह हमारे देश के तमाम नैतिक मूल्यों के विपरीत है...

—संपादकीय, 'इंडियन एक्सप्रेस', नई दिल्ली : १ नवंबर

हम सब उन की आलोचना करते थे, कभी कभी बड़ी तीखी आलोचना भी करते थे. ७० करोड़ लोगों के इस विशाल देश में जो भी ग़लत होता था या लगता था कि ग़लत हो रहा है उस के लिए उन्हें ज़िम्मेदार ठहराते थे. एक प्रकार से उन के प्रति यह हमारा सामूहिक अभिनंदन था, प्रशस्ति थी. उन के आलोचक भी उन के प्रशंसकों की तरह उन के अस्तित्व पर निर्भर थे. अगर उन के समर्थकों को अपनी ध्वजा फहराते रहने के लिए, एक सूत्र में बंधे रहने के लिए, उन की आवश्यकता थी तो उन के विरोधियों को भी उन की ज़रूरत थी ताकि हर बात के लिए उन पर दोष मढ़ा जा सके, और उन का हौवा दिखा कर विपक्ष की एकता बनाई जा सके. १९६६ में पहली बार प्रधान मंत्री पद पर चुने जाने के बाद से भारत की जनता के लिए पिछले दो दशकों में इंदिरा गांधी सर्वाधिक महत्वपूर्ण संदर्भ बिंदु रही हैं. उन की हत्या से वह संदर्भ हट गया है.

—संपादकीय, 'टाइम्स आफ़ इंडिया', नई दिल्ली
१ नवंबर

जो लोग यह सोचते और समझते हैं कि श्रीमती इंदिरा गांधी की हत्या कर देने से उन की बुनियादी नीतियों को बदला जा सकता है, वे कल्पना की दुनिया में रह रहे हैं. श्रीमती गांधी सिर्फ़ एक व्यक्ति नहीं थीं, वे संपूर्ण राष्ट्र की इच्छाओं और आकांक्षाओं की प्रतीक थीं.

—विनोद कुमार मिश्र, 'हिंदुस्तान', नई दिल्ली : १ नवंबर

राष्ट्र और व्यक्ति के जीवन में शोक के अनेक अवसर आते हैं. हमारी सच्ची कसौटी इन शोकों से उबरने में है, इन में डूब जाने में नहीं.

—इंदिरा गांधी, एक जन सभा में
'द वीक', कोट्टयम (११ नवंबर) से उद्धृत

श्रीमती इंदिरा गांधी की जघन्य हत्या कुछ व्यक्तियों के उन्माद का कृत्य थी, यह उन्माद या तो उन की निजी धारणाओं से उपजा था या दूसरों द्वारा उकसाया गया था. संपूर्ण सिख जाति की सहमति या समर्थन इसे कभी प्राप्त नहीं हो सकता था... बहुसंख्यक समाज को हृदय की विशालता दिखानी चाहिए, बांहें पसार कर कहना चाहिए, "तुम भी भारत के हो, सिखो, तुम विदेशी नहीं हो."

—मेजर जनरल नरिंदर सिंह से भेंटवार्ता.
'पैट्रियट', नई दिल्ली : ९ नवंबर

अनेक लोग समझते हैं कि हिंदुओं और सिखों के बीच दीवार खड़ी हो गई है. आश्चर्य की बात है जब मैं ने लोगों से बातचीत की तो मुझे यह दीवार दिखाई नहीं दी. कम से कम सतह पर तो यह दीवार दिखाई नहीं देती. स्वर्ण मंदिर में सैनिक कार्रवाई से सिखों की भावनाओं को गहरी चोट निस्संदेह पहुंची थी. लेकिन वे अपनी इस भावना से उबर रहे थे.

एक सिख ने कहा : "स्वर्ण मंदिर में सैनिक

## बजाज अपनी इस्तरियों में तीन धातुओं की प्लेटिंग क्यों करते हैं?
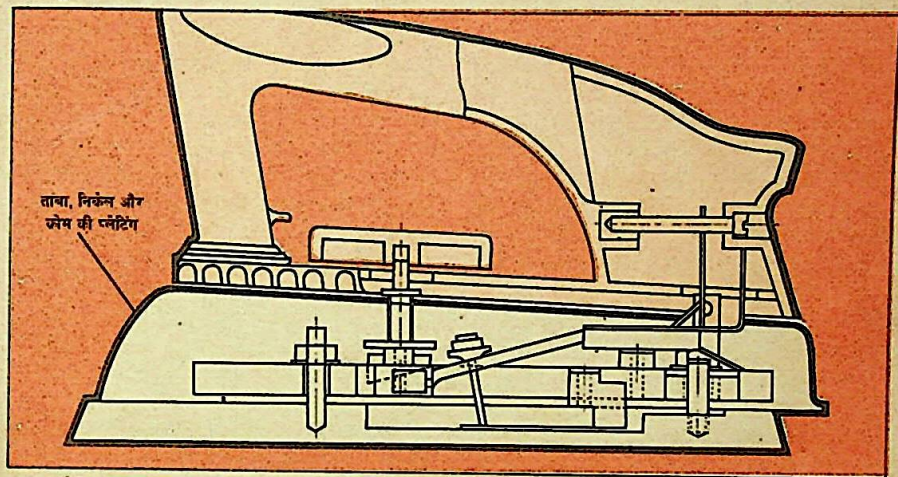
## इसलिए कि प्लेटिंग की तीन अलग परतें उन्हें टिकाऊ बनाती हैं, जंग से बचाती हैं, और आसानी से चिप्पियां नहीं उखड़ने देतीं.

अपनी इस्तरियों को मजबूत और टिकाऊ बनाने के लिये बजाज इस्तरी के निचले तले और ऊपरी प्लेट पर भी, तांबा, निकेल और क्रोम की १० माइक्रोन मोटी तीन परतें चढ़ाते हैं. जबकि अधिकांश इस्तरियों में दो ही परतें होती हैं.

और इसका हीटिंग एलिमेंट बढ़िया क्वालिटी के रूबी माइका और इंपोर्टेड निक्रोम तारों से बनता है. फिर इनकी कड़ी जांच परख जिससे आप बिजली के झटकों से बचे रहें.

आप की पसंद के चुनाव के लिये बजाज इस्तरी की कई किस्में उपलब्ध हैं— ऑटोमेटिक और नॉन-ऑटोमेटिक आई.एस.आई. के माप दण्डों के अनुरूप, साथ ही बजाज की कड़ी कसौटी पर भी खरी. इसीलिये बजाज इस्तरियां देश की सबसे अधिक बिकने वाली इस्तरियां हैं. सिर्फ यही नहीं,. हमारे घरेलू उपकरणों की सबसे व्यापक श्रेणी से ले कर देशभर में फैले ३५०० विक्रेताओं के जरिये बिक्री के बाद की तत्पर सेवा—यही कारण है कि घरेलू साधना की उत्कृष्टता, मजबूती और सुरक्षा के लिये एक ही प्रमाण-पत्र काफी है—बजाज.
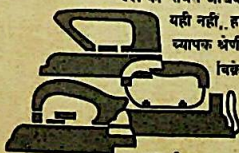
Heros' BE-776 C HN

**बजाज** आटो सुपर इस्तरी

दिखने में सुंदर, चलने में बढ़िया।

आज ही खरीदें
बजाज ही खरीदें

**बजाज मिक्सर, प्रेशर कुकर, इस्तरी, हीटर, पंखे, ओवन, गैस स्टोव, वाटर फिल्टर, टोस्टर**

कार्रवाई के लिए जो भी परिस्थितियां रही हों, प्रधान मंत्री इंदिरा गांधी की हत्या कर के न सिर्फ़ सिख गुरुओं के उपदेशों के विरुद्ध काम किया गया है बल्कि सारी सिख जाति को बदनाम किया गया है. उन्हों ने हमें हमारे देश में ही संदेहास्पद बना दिया है, हालांकि देश की आज़ादी पाने और बचाने के लिए हम ने सब से ज़्यादा कुरबानी दी है."

उस की बात पूरी भी नहीं हुई थी कि पास खड़े एक और सिख नौजवान ने गुस्से से कहा, "ये सिरफिरे लोग चाहते क्या थे, जो मानवता, देश और इन से भी बढ़ कर गुरु के उपदेशों के विरुद्ध किए गए इस जघन्य अपराध पर वे अपने होंठ सिए रहे?"

स्वाभाविक ही था कि इस बात पर हिंदू भी प्रतिक्रिया व्यक्त करते. एक अधेड़ हिंदू बोला, "आतंकवादियों और उन के गुर्गों के कारनामों की सज़ा पूरे सिख समुदाय को क्यों दी जाए! कोई भी भारतीय यह सहन नहीं कर सकता."

मैं ने पाया कि चाहे इंदिरा गांधी मर गई हैं, पर उन्हों ने इस देश की जो धर्म निरपेक्ष इमारत बनाई थी, वह अक्षत है.

—वी डी चोपड़ा, 'पैट्रियट', नई दिल्ली : ४ नवंबर

एक उदाहरण है दो स्त्रियों और एक नवयुवक का, जो सब के सब हिंदू थे. जब दक्षिण दिल्ली की एक कालोनी में भीड़ एक सिख की छोटी सी दुकान को आग लगाने बढ़ रही थी, तो वे तीनों उसे बचाने के लिए आगे बढ़ आए. एक और घटना है. एक नौजवान सिख को पत्थर लगा था. काफ़ी ख़ून बह रहा था. उस ने ख़ान मार्केट के एक घर का दरवाज़ा खटखटाया. गृहिणी ने दरवाज़ा खोला. यह देख कर कि कुछ गुंडे उस की जान के प्यासे हैं, उस ने उस नौजवान सिख को अंदर ले लिया, प्राथमिक उपचार किया और उसे पुलिस के संरक्षण में दे दिया. जमनापार की कालोनियों में व्यापक उत्पात की ख़बर सुन कर एक अन्य हिंदू महिला अपने बेटे को साथ ले कर कार से वहां जा पहुंची. पूरे दिन वह एक के बाद एक घायल को अस्पताल पहुंचाती रही. इन सब ने हमारा मस्तक गर्व से ऊंचा कर दिया है.

धर्म निरपेक्षता भारत का आधार है. इस की रक्षा का दायित्व केवल सरकार का नहीं है.

—आर के मिश्र, 'पैट्रियट', नई दिल्ली : ६ नवंबर

भारत के कटुतम आलोचक भी नहीं कह सकते कि हमारा समाज उदार नहीं है. यह हमारा आत्मविश्वास ही है जो उन लोगों को लगभग पूरी और खुली छूट देता है जो स्थापित व्यवस्था के हिंसात्मक विध्वंस का प्रचार करते रहते हैं. लेकिन यह भारतीय लोकतंत्र की वयस्कता का मापदंड है कि ऐसे लोग हाशिए से आगे नहीं बढ़ पाए हैं. किसी और समाज में इस बात की अनुमति नहीं दी जा सकती थी कि सांप्रदायिक घृणा के दुष्ट अलमबरदारों का सम्मान शहीदों की तरह किया जाए. लेकिन सहिष्णुता की जो भारी क़ीमत हमें देनी पड़ी है, उसे सहिष्णुता के विरुद्ध तर्क के तौर पर कभी इस्तेमाल नहीं किया जाना चाहिए. तथापि उदार समाज का अपने सदस्यों से तकाज़ा है कि वे सही व्यवहार करें.

लोकप्रिय भागीदारी के आधार पर ही जीवित लोकतंत्र कार्यक्षम हो सकते हैं. (इंदिरा जी के बाद) हर नागरिक को समाज के भविष्य के बारे में सोचना चाहिए कि क्या भारत को धर्म, जाति, संप्रदाय व परस्पर घृणा से विभाजित रहना है? क्या हिंदू, सिख और मुसलमान हमेशा एक दूसरे की गरदन काटते रहेंगे?... अगर ऐसा ही होना है तो भारत सिकुड़ कर हिंदी भाषी हिंदुओं के आर्यावर्त तक ही सीमित रह जाएगा. बार बार लोगों ने साबित किया है कि वे नहीं चाहते कि ऐसा हो. अब फिर समय आ गया है कि इस भावना को रेखांकित किया जाए.

—संपादकीय, 'स्टेट्समैन', नई दिल्ली : २ नवंबर

वक़्त आ गया है कि हम छिछोरेपन से उबरें और अर्थहीन मतभेदों को तोड़ डालें. वक़्त आ गया है कि हम सब मिल कर एक हो जाएं—न सिर्फ़ बेहतर वस्तुओं के लिए, बल्कि उन मूल्यों की प्राप्ति के लिए भी जो हमें बेहतर बनाते हैं. आइए, विश्व की गरिमा और साहस की थाती में, आह्लाद और भलमनसाहत में, सौंदर्य और समझदारी में हम सब कुछ न कुछ जोड़ें, कुछ न कुछ दें, चाहे हमारा यह योगदान कितना ही कम क्यों न हो.

—इंदिरा गांधी, 'हिंदुस्तान टाइम्स', नई दिल्ली : (११ नवंबर) में श्याम रत्न गुप्ता द्वारा उद्धृत

**स्वर्गीय श्रीमती इंदिरा गांधी विषयक विशेष सामग्री के कारण इस अंक से 'संवाद मंच' तथा अन्य कुछ स्तंभ मजबूरन स्थगित कर देने पड़े हैं.**

**—संपादक**

# शब्द संपदा सर्वोत्तम धन

कुसुम कुमार

बात यह है कि इस बार बात कुछ है भी और नहीं भी है. आप चाहें तो नीचे के बीसों बात संबंधी अर्थ बात की बात में बता सकते हैं क्योंकि बातचीत में इन का इस्तेमाल आप के लिए रोज़मर्रा की बात है. पर हो सकता है कि इन में से कोई कोई बात आप के बस की बात न हो.
अब हम बातें बनाना बंद करते हैं. नीचे लिखे हर शब्द या वाक्यांश के सामने दिए चार संभावित अर्थों में से निकटतम पर सही का निशान लगाइए और पृष्ठ बारह के सही उत्तर से मिला कर देखिए, बात बनी या नहीं.

१. **बतरस**— अ. बातचीत का मज़ा. आ. शृंगार रस. इ. इशारेबाज़ी. ई. एक मिठाई.
२. **कड़ी बात**— अ. पक्की बात. आ. वचनबद्धता. इ. डांट फटकार. ई. गाली.
३. **बड़ी बात**— अ. महान उपलब्धि. आ. कठिन काम. इ. अहंकार. ई. वचनबद्धता.
४. **छोटी बात**— अ. क्षुद्र व्यवहार आ. वचन भंग. इ. चालाकी. ई. तोतली बोली.
५. **बतोला**— अ. बातों का शौक़ीन. आ. झांसा. इ. मधुमक्खी की भिनभिनाहट. ई. झगड़ा.
६. **बातूनी**— अ. दार्शनिक. आ. खोखला. इ. बातों का शौक़ीन. ई. संवाददाता.
७. **पते की बात**— अ. पता ठिकाना. आ. सुलझी बात. इ. तत्व की बात. ई. ख़बर.
८. **टकसाली बात**— अ. मुहावरेदार भाषा. आ. सिक्के की इबारत. इ. शेर बकरी का खेल. ई. पक्की बात.
९. **कानाबाती**— अ. कान साफ़ करने की सलाई. आ. गुप्त मंत्रणा. इ. बातों का एक खेल. ई. कानाफूसी
१०. **घर की बात**— अ. घर का मामला. आ. आटे दाल का भाव. इ. गृहकलह. ई. गोपनीय.
११. **बतबढ़ाव**— अ. मेलजोल. आ. लंबी कहानी. इ. चरखा. ई. झगड़ा.
१२. **बात बेबात**— अ. वार्ता भंग. आ. प्रसंग अप्रसंग. इ. बेतुकी बातें. ई. डांट फटकार.
१३. **बात की पुड़िया**— अ. भूली याद. आ. इतिहास कथा. इ. गप्प. ई. बातूनी स्त्री.
१४. **बातों की झड़ी**— अ. गाली गुफ़्तार. आ. वर्षा गीत. इ. उपदेश. ई. बातों का सिलसिला.
१५. **बतौल कुंती**— अ. पांचाली कथा. आ. कुंती का झूठ. इ. बातचीत का दिखावा. ई. कुंती कर्ण संवाद.
१६. **बात का धनी**— अ. कथाकार. आ. बात का पक्का. इ. चुटकुलेबाज़. ई. दिखावटी बातें करने वाला
१७. **बातों का धनी**— अ. कथाकार. आ. बात का पक्का. इ. चुटकुलेबाज़. ई. दिखावटी बातें करने वाला.
१८. **बातफ़रोश**— अ. वार्तालापजीवी. आ. धोखेबाज़. इ. गपोड़ा. ई. बाजीगर.
१९. **चिकनी चुपड़ी बातें**— अ. लोरी. आ. चापलूसी. इ. प्रेम वार्ता. ई. डिनर भाषण.
२०. **बात की तह**— अ. तात्पर्य. आ. रहस्य वार्ता. इ. झगड़े की जड़. ई. अध्यात्म.
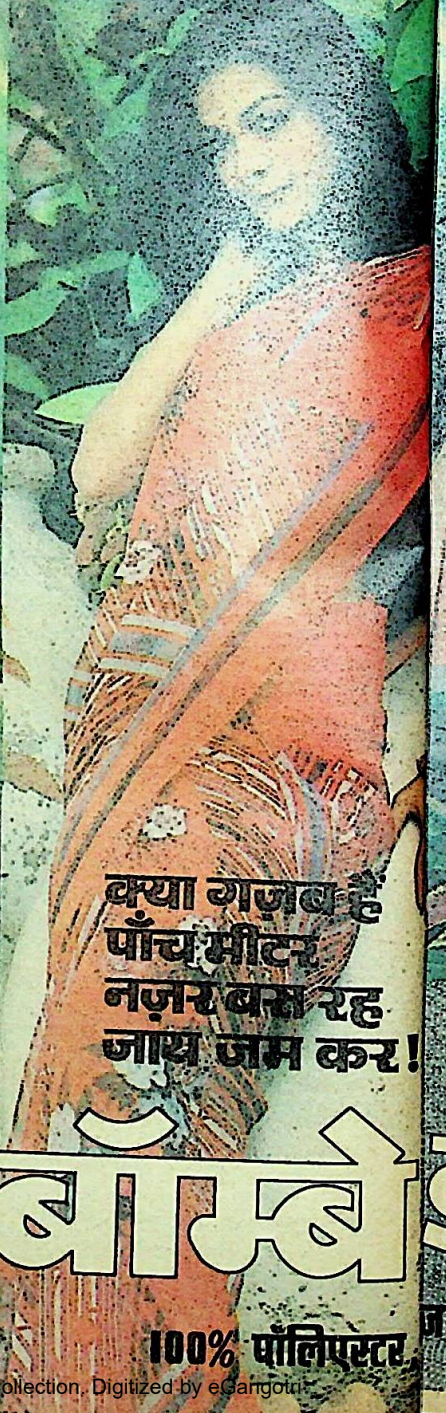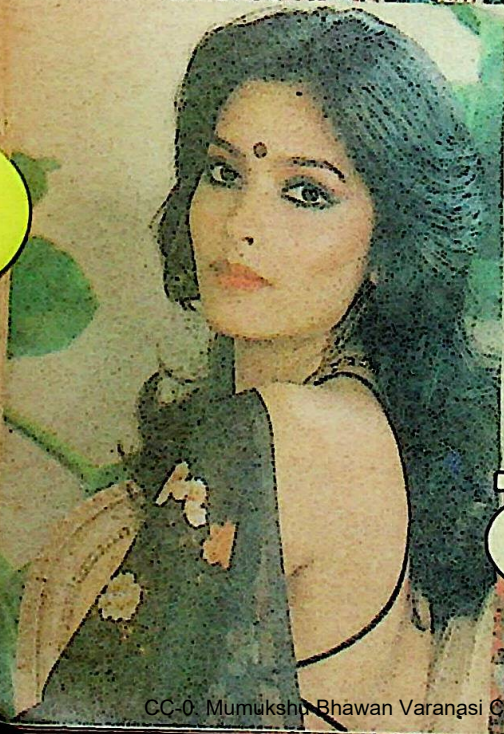
क्या ग़ज़ब है
पाँच मीटर
नज़र बस रह
जाय जम कर!
बॉम्बे
100% पॉलिएस्टर
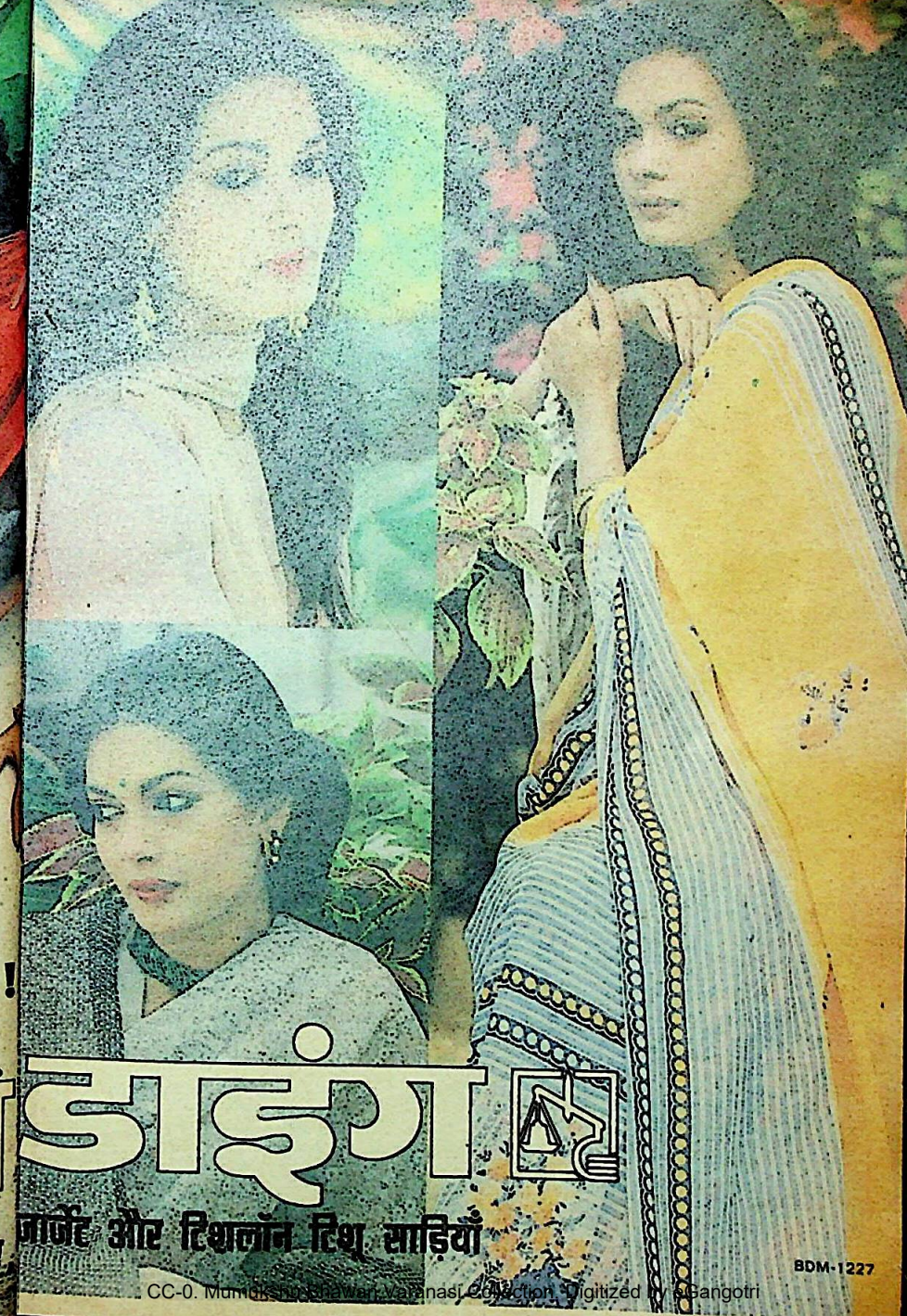
डाइंग
जार्जेट और रिशलॉन रिशू साड़ियाँ
BDM-1227

## शब्द संपदा सर्वोत्तम धन

**पृष्ठ ९ के उत्तर**

१. **बतरस**– अ. बातचीत का मज़ा, बतियाने का आनंद. कवि बिहारी का दोहा प्रसिद्ध है : "बतरस लालच लाल की मुरली धरी लुकाय, नैनन हंसे, देन कहै नट जाय."

२. **कड़ी बात**– इ. डांट फटकार, भर्त्सना, ग़लत काम करने पर सुनने को मिलने वाली कड़ी बातें.

३. **बड़ी बात**– आ. कठिन काम, बड़ा काम, सामान्य सामर्थ्य से बाहर का काम; (कभी कभी) डींग, शान.

४. **छोटी बात**– अ. क्षुद्र व्यवहार, ओछा काम, ओछापन; मामूली बात. "आप जैसे आदर्श-वादी से ऐसी छोटी बात की आशा नहीं थी."

५. **बतोला**– आ. झांसा, भुलावा, धोखा देनें की बात. जैसे, बतोले बनाना : ऐसी बातें करना जिन से सुनने वाला बहकावे में आ जाए.

६. **बातूनी**– इ. बातों का शौक़ीन, बातों में रस लेने वाला; बहुत बोलने वाला, बक्की.

७. **पते की बात**– इ. तत्व की बात, भेद भरी बात, तथ्यपूर्ण बात, गहरी बात.

८. **टकसाली बात**– ई. पक्की बात, ठीक बात, वैसी बात जैसे टकसाल में ढला असली सिक्का.

९. **कनाबाती**– इ. बातों का एक खेल जो बच्चों के साथ खेला जाता है. किसी बच्चे को हंसाने के लिए उस के कान में 'कानाबाती कानाबाती कू' कहते हैं. 'कू' शब्द खींच कर और ज़ोर से कहा जाता है.

१०. **घर की बात**– अ. घर का मामला; घर का भेद; स्वजनों से संबंध रखने वाली बात.

११. **बतबढ़ाव**– ई. झगड़ा, विवाद, बात का बढ़ जाना.

१२. **बात बेबात**– आ. प्रसंग अप्रसंग (मुख्यतः) अप्रसंगवश, नाहक. "आप तो बात बेबात बिगड़ते रहते हैं" – यानी मैं ने कोई अपराध किया ही नहीं, आप मुझ पर नाहक नाराज़ होते रहते हैं.

१३. **बात की पुड़िया**– ई. बातूनी स्त्री, एक के बाद एक बात करती रहने वाली औरत.

१४. **बातों की झड़ी**– ई. बातों का सिलसिला जो बहुत देर तक न टूटे.

१५. **बतौल कुंती**– इ. बातचीत का दिखावा, कान में बातचीत करने की नकल जो बंदर करते हैं. आजकल अनेक देश किसी विषय पर आपसी समझौते की इच्छा न होने पर एक दूसरे से जो बातचीत का दिखावा करते हैं, उसे बतौल कुंती कहा जा सकता है.

१६. **बात का धनी**– आ. बात का पक्का, बात का पूरा, जो कहे वह करने वाला, बतधर.

१७. **बातों का धनी**– ई. दिखावटी वादे करने वाला, वह जो बातें तो बहुत सी कह जाता हो पर कुछ करता धरता न हो.

१८. **बातफ़रोश**– अ. वार्तालापजीवी, वह जो केवल ऊटपटांग या व्यर्थ बातें गढ़ गढ़ कर सुनाता और उन्हीं के भरोसे अपने सब काम साधता हो.

१९. **चिकनी चुपड़ी बातें**– आ. चापलूसी से भरी बातें, किसी को ठगने फुसलाने के लिए कही जाने वाली मीठी मीठी बातें.

२०. **बात की तह**– अ. तात्पर्य, असल मतलब, शब्दों के पीछे छिपा वास्तविक कथ्य.

**मूल्यांकन**

१४ और १६ सही ...................... सर्वोत्तम
११ से १३ सही ...................... अत्युत्तम
८ से १० सही ........................... उत्तम

शुद्ध ऊन के कम्बल
लाल इमली धारीवाल
सूटिंग्स
ऊन
शालें
कम्बल
Lal-imli
Dhariwal
दो अविस्मरणीय नाम

# प्रतिदिन २०,००० बच्चों की जीवन-रक्षा :
## इनमें से एक आपका हो सकता है
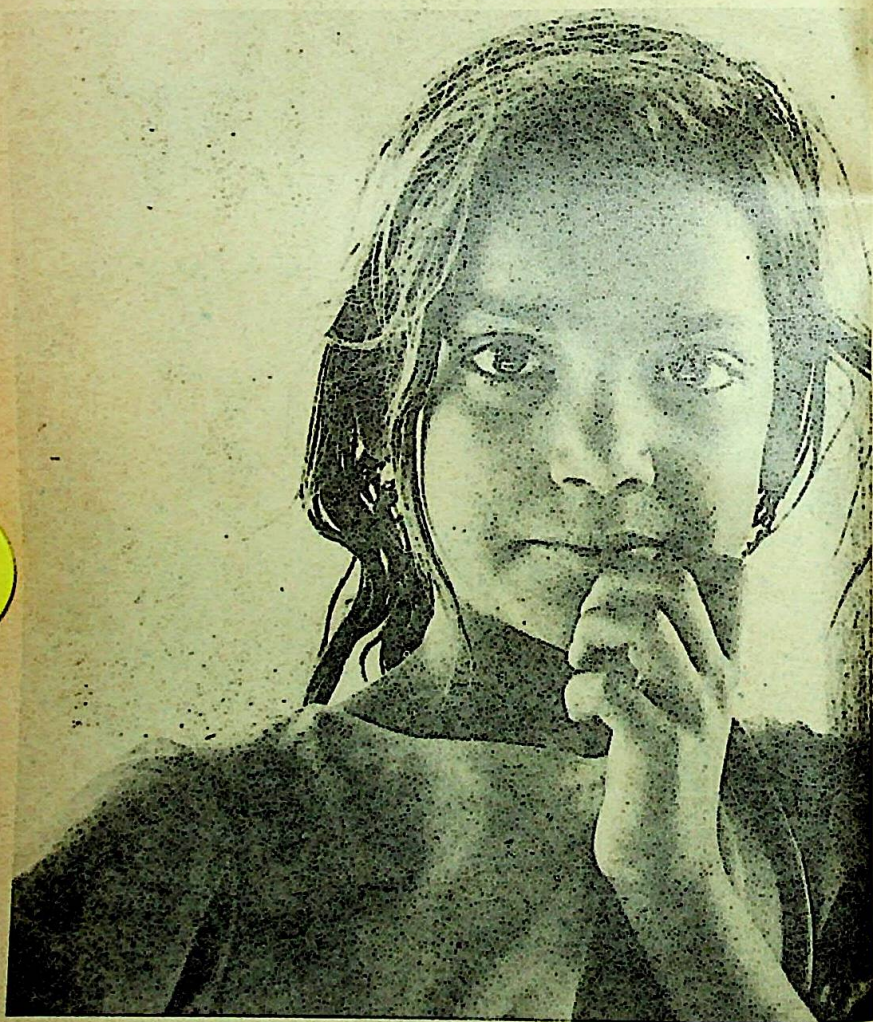
विज्ञान और सामाजिक संगठनों से सम्बन्धित नए ज्ञान से आज बाल क्रान्ति सम्भव है। संयुक्त राष्ट्र बाल कोष की हाल की 'दुनिया के बच्चों की स्थिति' रिपोर्ट के अनुसार इससे विकासशील देशों में रोज़ाना जन्म लेने वाले ४0,000 शिशुओं और बच्चों में से कम से कम आधों की जान बचाई जा सकती है और कई लाखों के स्वास्थ्य की रक्षा की जा सकती है।

हर परिवार, समुदाय और सरकार के लिए एक बड़ी चुनौती है: जीवन के पहले महिने में मर जाने वाले बच्चों की संख्या को आधा करना: अस्तित्व और स्वस्थ विकास के लिए सरल, कम लागत वाले प्रभावोत्पादक उपाय काम में लाना: और उपलब्ध ज्ञान का प्रचार करना ताकि इन लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सके।

इनमें से अधिकांश मौतें टाली जा सकती हैं। लेकिन जहाँ कहीं बच्चे सबसे अधिक खतरे में हैं, आवश्यक जीवनरक्षक सेवाओं को समन्वित करना होगा। भारत एवं विदेशों में किए अध्ययनों से सिद्ध होता है कि समुदाय जागृति के सहारे उन सेवाओं के समन्वयन ने बच्चों को बहुत लाभ पहुँचाया है।

वर्ष१९८१में, संयुक्त राष्ट्र बाल कोष ने पहली बार विश्व का ध्यान इस समस्या की ओर खींचा था। अगले वर्ष, इसकी रिपोर्ट में बताया गया कि निराशा को विकास में बदलने के लिए उपलब्ध ज्ञान को क्यों काम में लाया जाए। वर्ष १९८४ में, संयुक्त राष्ट्र बाल कोष ने उन अध्ययनों का वर्णन किया जहाँ इन विचारों को कार्यरूप में परिणित किया जा रहा था।

वर्ष१९८५की रिपोर्ट में वर्णित है कि अगर उपलब्ध संसाधनों से प्राप्त ज्ञान को कार्यरूप में बदल दिया जाता है जो उसके परिणाम कितने आशाजनक हो सकते हैं। ये कार्य हैं: शिशुओं के लिए बेहतर आहार जिसमें सम्मिलित हैं माँ का दूध और घर में तैयार आहार; अतिसार से होने वाली मौतों को रोकने के लिए पुनर्जलीकरण चिकित्सा; बाल्यकाल की छः रोके जा सकने वाली बीमारियों से बचाव के टीके; और 'खतरे में' पड़े बच्चों की समय पर जाँच के लिए व्यवस्थात्मक रूप से वृद्धि मापन।

इन उपायों को काम में लाना कम लागत वाला है; पर इन्हें काम में लाने में उपेक्षा करने की लागत भयावह रूप से बहुत अधिक है: और ऐसी क्षति जिसे पूरा नहीं किया जा सकता। हमारे पास ज्ञान है, तकनीक है और संगठनात्मक क्षमता है जिसके द्वारा भविष्य संवारा जा सकता है। लेकिन प्रश्न है: क्या हमारे पास इच्छा शक्ति है?

---

'दुनिया के बच्चों की स्थिति१९८५'की अपनी प्रति के लिए लिखें :

युनिसेफ सूचना सेवा ७३, लोदी एंस्टेट
नई दिल्ली ११०००३

---

React/0293/84.

कथा कहानी

# अब इस देश का क्या होगा?

आधुनिक युग के लिए एक अनोखी हितोपदेश कथा—वह राजा ही क्या जो डर के मारे जनहित का मार्ग छोड़ दे

गिरिधर योगेश्वर

एक समय की बात है, ऊंचे हिमालय पर स्थित मानसरोवर झील में हंस हंसिनी का एक जोड़ा रहता था. एक बार वह विश्व भ्रमण के लिए निकल पड़ा. अनेक देशों में विचरण करते हंस हंसिनी एक देश पर से गुज़र रहे थे कि रात पड़ गई. घना अंधेरा घिर आया. कुछ भी नहीं सूझता था. बेबस हंस हंसिनी ने बरगद के एक विशाल पेड़ पर रात काटने की सोची. उसी पेड़ की किसी सूखी टहनी पर एक उल्लू बैठा था. उस ने हंस दंपती से कहा, "अरे भोले जीवो! इस वृक्ष पर एक भयानक अजगर रहता है. तुम लोग खुले में सो गए तो वह ज़रूर तुम्हें निगल जाएगा.

आओ. रात यहां मेरे साथ मेरे खोंडर में गुज़ार लो. यहां कोई ख़तरा नहीं."

हंस हंसिनी ने सहर्ष उस का निमंत्रण स्वीकार कर लिया और ख़ुश ख़ुश उस के खोंडर में पैठ गए.

प्रातःकाल दोनों उड़ने को हुए तो उल्लू ने हंस से कहा, "श्रीमान! आप तो ख़ुशी से अपनी यात्रा पर जाइए. हां, इस सुंदर हंसिनी को अब यहीं मेरे पास रहने दीजिए."

"वाह, कैसी बात करते हो! हंसिनी मेरी पत्नी है. हम दोनों साथ ही जाएंगे," हंस ने दृढ़ स्वर में कहा.

"मित्र, अब भ्रम में मत रहो." उल्लू कुटिल हंसी हंस कर बोला, "रात भर यह मेरे घर में रही है. अब तो यह मेरी हो चुकी है और मेरे साथ ही रहेगी."

हंस भौचक्का रह गया. उस ने उल्लू को तर्क से समझाने की कोशिश की, "भले पखेरू, हंसिनी तो हंस की ही पत्नी होती है, किसी और जीव की नहीं."

पर उल्लू पूरी गुंडागर्दी पर उतर आया था. वह हंस को धमकाने लगा, "अबे सूअर, ज़बान लड़ाता है! ख़ैर चाहता है तो यहां से फ़ौरन रफ़ूचक्कर हो जा. अब तो कुछ भी हो जाए, हंसिनी तुम्हारे साथ नहीं जा सकती."

बेचारे हंस ने किसी तरह साहस बटोर कर कहा, "अरे भाई, हंसिनी मेरी पत्नी है, सो यह मेरे साथ जाएगी. फिर भी तू नहीं मानता तो जा कर राजा से फ़रियाद कर. वही सही ग़लत का फ़ैसला करेगा."

"ठीक है," उल्लू बोला, "अगर ऐसी बात है तो राजा के पास फ़रियाद ले कर तू जाएगा. मैं नहीं. देखें, वह क्या फ़ैसला देता है. फिर सोचूंगा."

बेचारा परदेशी हंस करता भी क्या! अकेला ही राजा के पास पहुंच कर दुहाई दी. न्याय के लिए गिड़गिड़ाया. उस का दुखड़ा सुन कर राजा ने कहा, "हंसिनी तो उल्लू की पत्नी कदापि नहीं हो सकती. उल्लुओं की जाति और है, हंसों की कुछ और! जाओ, उल्लू से कह दो कि राजा का हुक्म है—हंसिनी पर उस का कोई अधिकार नहीं."

हंस के हर्ष का पारावार न रहा. वह जोश के साथ उल्लू के पास पहुंचा और ख़ुशी ख़ुशी राजा का निर्णय सुना दिया. इस पर उल्लू ने टिप्पणी की, "हूं, यह कैसा न्याय है! राजा का यह फ़ैसला निहायत नामाकूल है. चलो, मैं ख़ुद चल कर देखता हूं, राजा कैसे फ़ैसला देता है!"

दोनों राजा के सम्मुख उपस्थित हुए. राजा ने पूरी दृढ़ता से कहा, "हंसिनी हंस की भार्या होने के कारण निस्संदेह उस की ही है. उल्लू उस पर अपना अधिकार नहीं जता सकता."

ठीक उसी समय उल्लू ने बड़ी मक्कारी से राजा को आंख मारते हुए कहा, "ठीक है, ठीक है महाराज, तो फिर तुम्हारा यह फ़ैसला मैं तुम्हारे महल के गुबंद पर बैठ कर सारी दुनिया को सुना देता हूं!"

कौन नहीं जानता कि उल्लू का घर की छत पर बैठ कर बोलना उस में रहने वालों के लिए बहुत बड़ा अपशगुन माना जाता है? अत्यंत अंधविश्वासी होने के कारण राजा उल्लू की वक्रोक्ति में छिपी धमकी से बौखला उठा. एकदम बात बदल कर बोला, "ओह, जल्दबाज़ी में निर्णय देने के कारण ही शायद मुझ से इतनी भारी भूल हो गई! तथ्य तो यह है कि हंसिनी ने स्वेच्छा से उल्लू के खोंडर में रात गुज़ारी है, सो अब उल्लू की ही हो गई. यह मेरा आख़िरी और अटल फ़ैसला है."

राजा के इस परिवर्तित निर्णय को सुन कर

हंस ने सिर पीट लिया. वह बड़े दुखी मन से उल्लू के साथ ही उस के खोंडर को लौटा. व्यथित हंसिनी को राजा का निर्णय सुनाते समय उस की आंखों में आंसू बहने लगे. अंत में हंसिनी से विदा ले कर उस ने बड़े कातर स्वर में उल्लू से प्रार्थना की, "अच्छा, भाई, मैं तो चलता हूं. लेकिन तुम मेरी प्राणप्रिया हंसिनी को सुख से रखना." बेचारा हंस भारी मन से अकेला ही यात्रा पर चल पड़ा.

लेकिन कुछ दूर पहुंच कर उस ने पलट कर देखा. अरे, उल्लू भी रो रहा था! यह देख हंस चकित रह गया. वह मुड़ कर वापस बरगद पर आ बैठा और पूछने लगा, "अब क्या गड़बड़ है? मैं तो अपनी प्राणप्रिया के वियोग में रो रहा हूं, पर तुझे क्या हो गया! तुझे तो उलटे प्रसन्न होना चाहिए कि मानसरोवर की दिव्य हंसिनी अब तेरे पास रह रही है."

उल्लू ने शोक भरे स्वर में कहा, "दोस्त, मैं तो किसी और ही बात पर रो रहा हूं. भला हमारे देश. का क्या होगा, जिस का राजा किसी की छोटी सी घुड़की पर इतनी जल्दी फ़ैसला बदल देता है!"

## स्पष्टीकरण

वेंटूरा, कैलिफ़ोर्निया, की पत्रिका 'स्टार-फ़्री प्रेस' में छपी सूचना : ख़ुशख़बरी! ईस्ट मेन स्ट्रीट को पिछले कई महीनों की तरह नाला डालने के लिए खोदा नहीं जाएगा. गली को अगले कुछ महीनों में चौड़ा करने के लिए खोदा जाएगा.
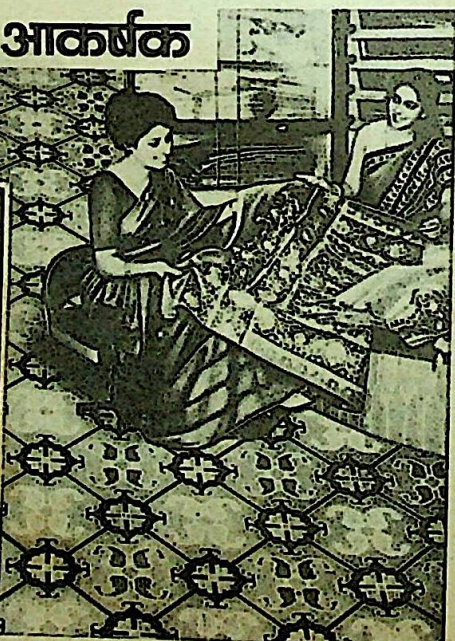
यह रहा आपके
शरीर का अंगरक्षक
हर दिन हमारे शरीर से आधा लीटर पसीना निकलता है. और इस पसीने के साथ ही निकलती है दुर्गन्ध इस दुर्गन्ध की रोकथाम सिर्फ एक असरकारक दुर्गन्धनाशक साबुन ही कर सकता है. तीस वर्षों से विश्वसनीय सिन्थॉल ही एक ऐसा पारिवारिक साबुन है जो त्वचा के जीवाणुओं को नष्ट करता है. ताकि आप सारा दिन तरोताजा व दुर्गन्धरहित रह सकें.
Godrej
CINTHOL
DEODORANT AND COMPLEXION SOAP
गोदरेज
सिन्थॉल - दुर्गन्धनाशक साबुन
हर एक के शरीर के
लिए आवश्यक अंगरक्षक

सार्थक सामग्री का संक्षिप्त चिरस्थायी संकलन

*प्रथम महायुद्ध के दौरान एक क्रिसमस ऐसा भी आया जब सैनिकों ने अफ़सरों की अनसुनी कर दी और दुश्मनों को गले लगा लिया... मानव प्रेम की एक सच्ची और अमर गाथा*

# अनोखा युद्ध विराम

**राउल टनले**

जिम प्रिंस १८ साल का हट्टा कट्टा और लंब तड़ंग नौजवान था. फ़ुटबाल खेलने का शौक़ीन था और युद्ध को भी एक तरह का खेल समझता था. नार्थ स्टैफ़र्डशायर रेजिमेंट में भरती होने के लिए वह कुलबुलाता रहता था. लेकिन मोरचे पर पहले दिन ही उसे मालूम पड़ गया था कि युद्ध क्षेत्र फ़ुटबाल का मैदान नहीं बूचड़ख़ाना है. १९१४ में ईप्र (बेल्जियम) के अग्रिम मोरचे की खंदकों में उस ने एक साथी सैनिक की ओर रोटी बढ़ाई थी. रोटी लेने के लिए उठे उस सैनिक का सिर खंदक से ऊपर चला गया तो घात में बैठे जरमन सैनिक की गोली से उस की तत्काल मृत्यु हो गई

उस पतझड़ में महीना भर चलने वाली ईप्र की लड़ाई में मित्र राष्ट्रों और जरमनी के कोई २,५०,००० सैनिक खेत रहे अथवा घायल हुए. "इतने छोटे से क्षेत्र में इतना ज़्यादा ख़ून पहले कभी नहीं बहा," मोरचे पर से एक प्रेक्षक ने लिखा. उस के बाद पहले विश्व युद्ध में एक अजीब सा गतिरोध आ गया. इंगलिश चैनल से स्विस सीमा तक फैली ठंडी और पानी भरी खंदकों में विरोधी सेनाएं छिपी पड़ी थीं.

ईप्र में क्रिसमस की पूर्व संध्या को पूरा चांद खिल उठा. बर्फ़ से ज़मीन सफ़ेद सफ़ेद दमक रही थी. लंदन राइफ़ल बिग्रेड के २१ वर्षीय ग्राहम विलियम्स ने खंदक की दीवार पर से जरमन मोरचे की ओर ताका. मोरचे के इस मुख्य हिस्से पर सामान्यतः उस समय बीच की नो मैंस लैंड (स्वामित्वहीन भूमि) में

आकृतियां तेज़ी से इधर उधर आती जाती दिखाई पड़ती थीं: कुछ दुश्मन की गति-विधियों की टोह या छानबीन में, और कुछ घायल और मृत सैनिकों को ढूंढ़ निकालने की कोशिश में. सपाट फैले उस फ़्लैंड प्रदेश के कंटीली बाड़ वाले शलजम के बदसूरत खेत जब तब 'फ़्लेयरों' यानी लपटों से रोशन हो उठते. (यह लपट अमरीकी आविष्कारक 'फ़्लेयर' के नाम से जानी जाती है और युद्ध क्षेत्र में अस्थायी प्रकाश अथवा संकेत देने के काम आती है.) लेकिन उस रात साफ़ हवा में एक प्रकार की अलौकिक शांति बसी थी. विलियम्स को याद है: "ऐसा लगता था जैसे किसी चमत्कार पर से परदा उठने वाला हो."

पूर्व दिशा में उसे रोशनी दिखाई दी. रोशनी जरमन खंदकों से ज़रा ऊपर थी, लेकिन इतनी ऊपर भी नहीं थी कि तारा होने का गुमान हो. विलियम्स को अचरज हुआ कि उस ओर किसी ने गोली नहीं चलाई. उसे एक और रोशनी दिखाई दी, फिर एक और. एकाएक, जहां तक उस की नज़र गई, दुश्मन की खंदकों के साथ साथ रोशनी ही रोशनी दिखाई देती चली गई.

"भगवान कसम, जरमनों के पास क्रिसमस वृक्ष है!" विलियम्स ने अपने बग़ल वाले फ़ौजी से चीख़ कर कहा. और फिर जरमनों की एक खंदक से, जो उन से ५० मीटर भी दूर नहीं होगी, 'ख़ामोश रात, मुबारक रात' का भजन उभरने लगा. गहन गंभीर स्वरों में ऐसा समवेत गान उस ने पहले कभी नहीं सुना था. समवेत गान समाप्त होने पर विलियम्स की रेजीमेंट ने तालियां बजाईं और 'द फर्स्ट नोवेल' नामक भजन गाया, इस के तुरंत बाद गाया 'ओ कम, आल यी फ़ेथफ़ुल' ('आओ, सब भक्त'). इस पर जरमनों ने तालियां बजा कर जवाब के तौर पर उस का लेटिन भाषांतर प्रस्तुत किया. एक दूसरे के प्रति सम्मान दरशाने के लिए गाए इन गीतों का सिलसिला कोई घंटा भर चलता रहा. बीच बीच में 'यहां हमारे पास आओ, टामी!' और 'नहीं, जेरी, तुम यहां आओ!' की पुकार भी होती रही. लेकिन किसी भी ओर से कोई आगे नहीं बढ़ा.

जिम प्रिंस के मोरचे वाले हिस्से में एक जरमन ने खंदक की दीवार के ऊपर खड़े हो कर 'इन द स्टिल आफ़ द नाइट' ('रात के सन्नाटे में') शीर्षक गीत गाया. कोई चाहता तो उस पर गोली चला सकता था. प्रिंस की रेजीमेंट ने 'स्टिल नाइट' का उत्तर 'व्हाइल शेपड्र्ज़ वाच्ड देयर फ़्लाक्स वाई नाइट' ('जब रात भर गड़रिए अपने रेवड़ों की रखवाली करते रहे') गा कर दिया. उस के बाद तो कमाल हो गया. उस जरमन सैनिक ने ब्रिटिश खंदकों की तरफ़ बढ़ना शुरू कर दिया. उस के पीछे पीछे थे छः और जरमन सिपाही... सभी निरस्त्र... अपने हाथ जेबों में डाले हुए.

क्षण भर को ऐसा लगा जैसे वे आत्म समर्पण करने आ रहे हों ब्रिटिश सैनिक भी खाइयों से बाहर निकलने लगे. उन में प्रिंस भी था. एक जरमन से पांच मीटर दूर वह रुक गया. यह वही दुश्मन था, जिस पर प्रिंस अब तक गोली चलाता रहा था. जरमन ने सहजता से कहा "मैं सैक्सन हूं. तुम एंग्लो सैक्शन हो फिर हम क्यों लड़ें?"

सालों बाद उस असाधारण क्षण को याद करते हुए प्रिंस ने स्वीकारा, "मेरे पास आज भी इस प्रश्न का उत्तर नहीं है."

स्वामित्वहीन भूमि पर अब शांति छा गई

*१९१४ के क्रिसमस के अवसर पर युद्ध विराम के दौरान स्वामित्वहीन भूमि के मध्य नार्थबरलैंड योमैनी के सैनिक जरमन सैनिकों के साथ*

थी. एक मोरचे पर जब जरमन सैनिक 'क्रिसमस मुबारक हो' चिल्लाते हुए बढ़े तो स्काट सैनिकों ने उन से वापस जाने को कहा और उन के सिरों के ऊपर से गोलियों की बौछार की. जरमन सिपाही इशारा समझ गए और अपनी खंदकों में लौट आए. लेकिन और जगहों पर दोनों ओर के सिपाही मिले. उन्हों ने आपस में हाथ मिलाए. वे हंसे, खिलखिलाए, और उन्हों ने विश्वास दिलाया कि एक दूसरे के प्रति उन के मन में कोई दुर्भावना नहीं है. उन्हों ने अगले रोज़ भी युद्ध विराम जारी रखने का प्रण किया. मेजर लेज़ली वाकिंटन ने १७ वर्षीय राइफ़लमैन के रूप में यह दृश्य देखा था. मेजर का कहना है, "यह सब अनायास और रहस्यपूर्ण ढंग से हुआ. उस रात युद्ध से भी शक्तिशाली कोई भावना काम कर रही थी."

क्रिसमस की सुबह ठंडी, साफ़, स्फूर्तिदायक और शांतिपूर्ण थी. देखते ही देखते स्वामित्व-हीन भूमि पर दोनों ओर के हज़ारों सैनिकों का जमघट हो गया. वे एक दूसरे के हाथ में हाथ डाले घूम रहे थे, एक दूसरे की तसवीरें खींच रहे थे. कई फ़ुटबाल मैच खेले गए. आम तौर पर टीन के एक डब्बे को फ़ुटबाल बना लिया जाता और टोपियां गोल की जगह रख दी जातीं.

एक स्काट सैनिक ने सचमुच एक फ़ुटबाल का इंतज़ाम कर दिया और फिर ढंग का मैच हुआ जिस में सैक्सन ३-२ से जीते. निर्दोष खेल भावना का प्रदर्शन सर्वत्र देखने में आया. "अगर कोई आदमी गिर जाता तो दूसरी तरफ़ के आदमी उसे उठा कर खड़ा करते," खेल में भाग लेने वाले एक सिपाही ने बताया.

कुछ सैनिकों ने अपनी वरदियों से बटन काट काट कर क्रिसमस के उपहार स्वरूप भेंट किए. एक जरमन अफ़सर ने तो वह नुकीला हेलमेट दे दिया जो वह फ़ौजी वरदी के साथ पहनता था. बदले में उसे मिला डब्बाबंद मांस. जो सिपाही करतब जानते थे, उन्हों ने करतब दिखाए. एक अंगरेज सैनिक हेयरड्रेसर था. उस ने घुटनों के बल बैठे विनीत जरमनों के बाल काटे. एक जरमन पेशेवर बाज़ीगर

फ़ोटो: इंपीरियल वार म्यूज़ियम

था. उस ने अपने दर्शकों में ऐसा समां बांधा कि लगा, हेमलिन के बांसुरी वाले की तरह वह भी ब्रिटिश सैनिकों को अपने पीछे पीछे मोरचे से दूर बंदी शिविर में ले जा कर क़ैद कर लेगा.

"मोरचे पर गोली लगने का जोखिम उठाए बिना घूमने फिरने में एक विचित्र आनंद था," युद्ध में बचे ८८ वर्षीय एलबर्ट मोरेन का कहना है. यह स्वामित्वहीन भूमि पर कुछ पुण्य अर्जित करने का अवसर था. गोलियों की लगातार बौछार के बीच मृत सैनिकों के शव प्रायः कई कई दिन पड़े सड़ते रहते. जब छठी गोरडन हाइलैंडर्स रेजिमेंट के कमांडर ने अपने आदमियों को खंदकों से बाहर जरमनों की तरफ़ जाने से रोका तो पादरी तक ने उस का आदेश नहीं माना.

"मैं शवों को दफ़नाने जा रहा हूं," उस ने कहा.

दोनों ओर के सैनिकों ने पास पास क़ब्रें खोदीं. फिर उस पादरी ने जरमन धर्मशास्त्र के एक विद्यार्थी की मदद से संयुक्त शव संस्कार किया.

गोली न चलने के कारण क्रिसमस की सुबह युवा जिम प्रिंस आम दिनों के मुक़ाबले ज़्यादा देर तक सोता रहा. आख़िर जब वह स्वामित्वहीन भूमि पर और लोगों के बीच पहुंचा तो उस की मुलाक़ात लिपज़िग विश्वविद्यालय के अपनी उम्र के एक छात्र से हुई. उस छात्र के पास क्रिसमस का एक पार्सल था जिसे उस ने प्रिंस के साथ मिल बांटा. पार्सल में थीं मिठाइयां, केक, और सिगारों का एक डब्बा जिस पर विश्वविद्यालय की मोहर लगी थी.

"उस का उपहार मेरे लिए उस क्रिसमस का एकमात्र उपहार रहा," प्रिंस ने कहा. प्रिंसेस रायल द्वारा ब्रिटिश एक्सपिडिशनरी फ़ोर्स को भेजे गए उपहार कुछ दस्तों तक नए वर्ष के दिन भी नहीं पहुंच पाए थे.

भाईचारे की यह भावना ज़्यादातर ब्रिटिश और जरमन सैनिकों तक ही सीमित रही. चूंकि फ़्रांसीसियों के देश पर जरमनों ने आक्रमण किया था, इस लिए उन्हों ने भाईचारे की भावना प्रदर्शित नहीं की. एन नदी के निकट ज़ब एक मोरचे पर क्रिसमस की सुबह कुछ जरमन सिपाही 'दो दिन का युद्ध विराम चिल्लाते हुए अपनी खंदकों में से बाहर निकलआए तो फ़्रांसीसियों ने उन सब को मौत के घाट उतार दिया. फिर भी क्रिसमस की भावना से अभिभूत एक फ़्रांसीसी कप्तान,, जो संगीतज्ञ था, अपने विरोधी जरमन कमांडर के शौर्य से इतना प्रभावित हुआ कि उस ने अपने शत्रु के सम्मान में एक संगीत रचना तैयार करने की घोषणा की. क्रिसमस के तीसरे पहर खंदक की दीवार पर निरस्त्र खड़े हो कर उस ने बिना पूर्व तैयारी के ट्रंपेट वादकों, कानसर्टीना वादकों और एकमात्र वायलिन वादक को ले कर एक 'वाद्यवृंद' का संचालन किया जिस ने उस संगीत रचना को बड़ी गरमजोशी से प्रस्तुत किया. संगीत रचना के सम्मान में जरमन अफ़सर ने झुक कर सब का अभिवादन किया और वाहवाही लूटी.

बेशक दोनों ओर के सैनिक यह जानते थे कि युद्ध विराम की बात उन के अधिकारी वर्ग के गले नहीं उतरेगी. बिना कुछ कहे उन का आपस में एक समझौता सा हो गया और वह यह था कि इस युद्ध विराम को गुप्त ही रखा जाए. तीसरे पहर जब यह सूचना मिली कि एक अंगरेज ब्रिगेडियर उन की पलटन का निरीक्षण करने आ रहा है तो जरमन और ब्रिटिश सैनिक नटखट लड़कों की तरह अपनी

अपनी खंदकों में लौट गए. जब तक ब्रिगेडियर का आगमन हुआ, तब तक ब्रिटिश सैनिकों ने घमासान लड़ाई का नाटक प्रस्तुत कर डाला. संतरी निरीक्षण छिद्रों में से झांक रहे थे, सैनिक मशीनगन चला रहे थे. सरसरी नज़र डालने के बाद ब्रिगेडियर साहब विदा लेने को ही थे कि उन्हों ने खंदक में से एक जरमन का उभरा हुआ सिर और कंधा देखा.

"कारपोरल," ब्रिगेडियर ने कड़क कर कहा, "वह रहा जरमन सिपाही! गोली मारो उसे."

"अच्छा, जनाब," कारपोरल ने कहा और पास वाले संतरी को आंख मारी. संतरी ने उस सैनिक से काफ़ी हट कर गोली चलाई. जरमन सैनिक ने उस पर कोई ध्यान नहीं दिया. "फिर से." ब्रिगेडियर ने आदेश दिया. इस बार संतरी ने उस के ज़रा नज़दीक गोली दाग़ी. जरमन सैनिक फिर भी वहां से नहीं हिला. तीसरी गोली सरसराती हुई उस के पास से निकली. जरमन सैनिक की समझ में बात आ गई. बाज़ू हिलाते हुए वह खंदक में गायब हो गया. संतुष्ट हो कर ब्रिगेडियर चला गया. सब लोग फिर से खंदकों से बाहर आ गए.

सूर्यास्त तक लगभग सारे मोरचे पर गोली चले २४ घंटे बीत चुके थे. फल स्वरूप जंगली परिंदे लौट आए थे. महीनों से लड़ाई के उस मैदान पर एक चिड़िया नहीं नज़र आई थी और अब हर तरफ़ चिड़िया ही चिड़िया थीं. एक ब्रिटिश अधिकारी ने अपनी खंदक के बाहर ५० चिड़ियों को चुग्गा दिया.

शुरू शुरू में केवल मोरचे के निकट के ब्रिटिश कमांडरों को युद्ध विराम का पता चला. उदाहरण के लिए मोरचे से १५ किलोमीटर पीछे प्रभागीय प्रधान कार्यालय के आधिकारिक रोज़नामचे में यह दर्ज हुआ: "२५ दिसंबर. अनौपचारिक युद्ध विराम." लेकिन ३० किलोमीटर पीछे ब्रिटिश कमांडर इन चीफ़ के मुख्यालय से सर फ्रेंच द्वारा युद्ध मंत्री लार्ड किचनर को प्रेषित केबल (समुद्री तार) में कहा गया: "कोई विशेष समाचार नहीं. क्रिसमस शांतिपूर्ण बीत गया."

लेकिन जब उच्च अधिकारियों को असल बात मालूम हुई तो वे बौखला उठे. सैनिक अनुशासन के इस बुरी तरह भंग होने पर वे भौंचक्के थे. वे इस लिए भी चिंतित थे कि सैनिकों को यह मालूम हो गया है कि उन के शत्रु वैसे दानव नहीं हैं जिन के बारे में यह प्रचार किया गया है कि उन्हों ने बेल्जियम के शिशुओं के संगीनें भोंकीं और अंगरेज नर्सों की छातियां काट डालीं, बल्कि उन्हीं जैसे आम इनसान हैं. एक लंदन वासी ने एक जरमन सिपाही की क़ब्र खोदने में उस के साथी की सहायता की थी. उस ने अपने घर लिखा: "जरमन लोग भले मालूम पड़ते हैं." एक अन्य ने तो जरमनों को 'ख़ुशमिजाज़' बताया.

ब्रिटिश हाई कमान ने कठोर आदेश जारी किया कि आगे से शत्रुओं के साथ भाईचारे का कोई व्यवहार न किया जाए. परिणामत: युद्ध के दौरान पड़ने वाले तीन क्रिसमस पर्वों पर कोई युद्ध विराम नहीं हुआ. १९१५ में जरमनों द्वारा लपटें फेंकने और ज़हरीली गैस का इस्तेमाल करने से जो कटुता पैदा हुई, उस ने युद्ध विराम की संभावनाओं पर पानी फेर दिया.

क्या १९१४ का युद्ध विराम सचमुच प्रथम विश्व युद्ध को समाप्त कर सकता था?

उस युद्ध में जीवित बच कर आने वाले एल्बर्ट मोरेन की मान्यता है कि ऐसा संभव

था. "अगर यह युद्ध विराम एक सप्ताह और चलता रहता," उस का कहना है, "तो फिर से युद्ध शुरू करना बहुत कठिन हो जाता." उस हालत में लगभग ९० लाख लोगों की जानें बचाई जा सकती थीं जो युद्ध विराम संधि से पहले चली गई थीं.

१९१४ का क्रिसमस युद्ध विराम मोरचे पर कई हिस्सों में नए साल या उस के बाद तक चला. "हमें इतनी देर तक उसे चलाना ही था." एक जरमन ने यह बात अपने घर भेजे गए पत्र में लिखी. "हम देखना चाहते थे कि उन्हों ने हमारी जो तसवीरें खींची हैं, वे कैसी आई हैं."

नए वर्ष की पूर्व संध्या को ग्राहम विलियम्स अपनी खंदक में भरे पानी को उलीचने में व्यस्त था तो अचानक एक जरमन को उस ने सामने खड़े पाया. उस ने पी रखी थी और उस के दोनों हाथों में एक एक बोतल थी. विलियम्स ने उस से अपने मोरचे पर लौट जाने को कहा. जरमन सैनिक ने लौटने से इनकार कर दिया. "तो फिर मुझे तुम को बंदी बनाना पड़ेगा," विलियम्स ने कहा. जरमन सैनिक ने विलियम्स को शराब भेंट की. "मैं बंदी होना नहीं चाहता," उस ने कहा. "बस दोस्ती चाहता हूं." तब एक और सैनिक की सहायता से विलियम्स ने नशे में धुत शुत्र को उस के मोरचे पर वापस पहुंचाया.

सामान्य समझौता यह हुआ था कि जब किसी एक पक्ष को युद्ध विराम तोड़ना होगा तो वह हवाई फ़ायर करेगा और विपक्ष को अपनी खंदकों तक जाने का समय देगा. जिम प्रिंस [illegible] इलाके में ऐसा हवाई फ़ायर २९ दिसंबर [illegible] हुआ और "जाओ, टामी, जाओ!" या "जाओ जेरी, जाओ!" की चीख़ पुकार के बीच फ़ौ[illegible] अपनी अपनी खंदकों में लौट आए. मिन[illegible] बाद ही गोलियां चलनी शुरू हो गईं और शी[illegible] ही अपनी खंदक पर से प्रिंस की राइफ़ल [illegible] ज़द में एक जरमन सिपाही आ गया. ३०[illegible] मीटर की दूरी से निशाना लगाना [illegible] मुश्किल नहीं था. प्रिंस यह तो नहीं देख पा[illegible] कि वह कौन है, लेकिन घोड़ा दबाते हुए उ[illegible] के मन में विचार आया कि कहीं वह लिपजि[illegible] का वही छात्र न हो जिस ने उस के सा[illegible] क्रिसमस का उपहार बांटा था. गोल[illegible] स्वामित्वहीन भूमि के पार दनदनाती हु[illegible] निकल गई. प्रिंस ने उस सैनिक को गिरते हु[illegible] देखा.

"ईमानदारी की बात यह है कि मैं झिझक[illegible] नहीं," बाद में प्रिंस ने बताया. "उसे गोल[illegible] मारना मेरा कर्तव्य था और मुझे मारना उ[illegible] का. यही तो युद्ध कहलाता है."

कुछ महीने बाद फ़ुटबाल प्रेमी प्रिंस की ए[illegible] टांग युद्ध में जाती रही. लेकिन उस के लि[illegible] जीवन का भव्यतम क्रिसमस पर्व १९१४ [illegible] ही था. १९८१ में ८५ साल की उम्र में प्रिंस [illegible] मृत्यु हो गई, लेकिन इस बीच 'साइले[illegible] नाइट, होली नाइट' ('ख़ामोश रात, मुबारक रात') गीत सुनते समय ऐसा एक बा[illegible] भी नहीं हुआ कि आंसू आंखों से लुढ़क कर उ[illegible] के गालों पर न आ गए हों.

## शीर्षक क्षेत्रे

कैलिफ़ोर्निया में एक के बाद एक आए कई तूफ़ानों से संबंधित समाचार पर 'टाइम' का शीर्षक: एक पर एक पानी फिरता गया.

"मां के रूप में हम ने ईश्वर का स्पर्श अनुभव किया है," यह कथन है उस बेटे का जिस की अनपढ़ स्पेनिश मां ने अपने बच्चों को योग्य बनाने के लिए न केवल फिर से शिक्षा प्राप्त की बल्कि शिक्षा के क्षेत्र में नाम भी कमाया

# ममता की जीत

**जोसेफ़ पी ब्लैंक**

सन १९६५ में जब ग्वादालूपे लूपिटा क्विटेनीला २७ साल की हुई तो मुसीबत का वह पहाड़ टूटा. हालांकि वह बहुत कम अंगरेजी जानती थी, फिर भी वह समझ गई कि स्कूल से आए रिपोर्ट कार्ड में क्या लिखा है. उसे अपने दोनों बेटों के बारे में बहुत चिंता हुई.

बच्चों का स्कूल अमरीका के ब्राऊंज़विल नामक नगर में था. वहां पहुंच कर वह स्तब्ध रह गई. अध्यापिका ने स्पेनिंश में उस से कहा, "आप के लड़के मंदबुद्धि हैं. इसी लिए हमें उन को उन जैसे मंदबुद्धि बच्चों के साथ ही डालना पड़ा."

स्कूल की मुख्य अध्यापिका भी इस बात से सहमत थी. उस ने कहा, "आप घर में केवल स्पेनिश बोलती हैं. इसी लिए यहां अंगरेजी में लिखते पढ़ते आप के बच्चे उलझन में फड़ जाते हैं."

**पढ़ाने की आवश्यकता.** अपने बच्चों के लिए लूपिटा का दिल भर आया. छुटपन में उसे भी मंदबुद्धि कहा जाता था.

ग्वादालूपे क्विटेनीला का जन्म मेक्सिको के एक छोटे से गांव ओहिनागा में हुआ था. उस के माता पिता अलग हो गए थे, इस लिए उस का लालन पालन उस के ग़रीब लेकिन स्नेही दादा दादी ने किया था. जब वह १३ साल की हुई तो उसे अपने पिता के पास ब्राऊंजविल भेज दिया गया.

पिता ने तुरंत लूपिटा का नाम एक स्कूल में लिखवा दिया. जब अंगरेजी में हुई बुद्धि परीक्षा में उस के बहुत ख़राब नंबर आए तो उसे पहली कक्षा में डाल दिया गया. अपनी

फोटो : हरमन कीफेवान

कक्षा में वह सब से ज़्यादा उम्र की लड़की थी. दीवारों पर इश्तिहार और काग़ज़ चिपकाने तथा छोटी छोटी लड़कियों को बाथरूम ले जाने के सिवा वह स्कूल में कुछ नहीं करती थी, उसे अपनी स्थिति बहुत ही दयनीय लगती. बहुत ही अपमानित महसूस करती थी वह. चार महीने बाद आंखों में आंसू भरे उस ने अपने पिता से स्कूल से उठा लेने की विनती की. झिझकते हुए पिता मान गए.

१६ साल की उम्र में उस ने एक मेक्सिकी-अमरीकी दंत टेक्नीशियन से शादी कर ली. उसे जो मिला था, वह उसे से संतुष्ट थी. उस ने अच्छी पत्नी, अच्छी मां, अच्छी गृहिणी और अच्छी बावर्चिन बनने का निश्चय किया. पांच वर्षों में उस के तीन बच्चे हो गए, दो लड़के और एक लड़की.

जब उस के बच्चों को मंदबुद्धि बताया गया तो उस से बरदाश्त नहीं हुआ. वह जानती थी कि उस के बच्चे तेज़ और होशियार हैं, लेकिन यह भी अब निश्चित था कि उस की मदद के बिना उन्हें जीवन में वह अवसर नहीं मिलेगा जो मिलना चाहिए.

स्वयं उसे अंगरेजी सीखनी होगी—हिज्जे, व्याकरण, उच्चारण आदि, सब. उसे ज्ञान की आवश्यकता थी ताकि वह उन सवालों का जवाब दे सके जो उस के बच्चों को परेशान किए रहते थे.

लूपिटा ने उन के स्कूल की किताबों को पढ़ने और समझने की कोशिश की. शब्द कोश से थोड़ी बहुत मदद मिली, लेकिन उस की प्रगति बहुत ही धीमी रही. 'किसी के पढ़ाए बिना कोई फ़ायदा नहीं होगा,' उस ने सोचा.

**असंभव बात.** उन दिनों लूपिटा एक अस्पताल में मरीज़ों के लिए फूल और डाक पहुंचाने का काम करती थी. उस ने नर्सिंग के प्रशिक्षण कार्यक्रम के बारे में पता किया. नर्सिंग का पाठ्यक्रम अंगरेजी में पढ़ाया जाता था जो उसे अंगरेजी में बात करने के लिए बाध्य करेगा. "असंभव," उस से कहा गया, "प्रशिक्षार्थी के पास हाई स्कूल का डिप्लोमा अवश्य होना चाहिए."

उसे ऐसे किसी अंगरेजी पाठ्यक्रम की जानकारी नहीं थी जो प्रौढ़ मेक्सिकी-अमरीकियों को रात को पढ़ाया जाता हो. सो उस ने हाई स्कूल के एक परामर्शदाता से पूछा, "क्या मैं अंगरेजी की किसी पहली कक्षा में दाख़िल हो सकती हूं?" उसे जो जवाब मिला, वह आज भी उसे अच्छी तरह याद है: "तुम्हारा रिकार्ड बताता है कि तुम मानसिक रूप से विकलांग हो. मैं तुम्हारे दाख़िले की सिफ़ारिश नहीं कर सकता."

लूपिटा टूट गई. रोती रोती और बारिश में पैदल भीगती वह घर लौटी. वह बराबर अपने आप से कहती रही, 'हिम्मत मत हारना, लूपिटा, हिम्मत मत हारना.'

अपने बच्चों के स्कूल के प्रिंसिपल से उस ने फिर सलाह ली. उन दोनों ने मिल कर राह में आनें वाली हर बाधा पर विचार किया. जब प्रिंसिपल ने उसे ब्राउंज़विल के टेक्सास साउथमोस्ट कालेज में कोशिश करने का सुझाव दिया तो उसे आश्चर्य की सीमा न रही. उस कालेज में दो वर्ष का पाठ्यक्रम था.

दो बसें बदल कर लूपिटा कालेज पहुंची. हाई स्कूल के डिप्लोमा के बिना वह दफ़्तर के क्लर्क के पास से गुज़र भी नहीं सकती थी, लेकिन एक छात्र ने कार खड़ी करने के स्थान पर रजिस्ट्रार की कार की तरफ़ इशारा किया. वह वहां रजिस्ट्रार के आने की राह लगभग दो घंटे तक देखती रही.

लूपिटा की प्रबल इच्छा से प्रभावित हो कर

रजिस्ट्रार ने उसे चार बुनियादी पाठ्यक्रमों में दाख़िल करने का वादा किया. "लेकिन," उस ने चेतावनी दी. "अगर तुम उन में पास न हुई तो फिर हम तुम्हें नहीं रख पाएंगे."

अगले दिन फिर दो बसें बदल कर लूपिटा स्कूल पहुंची. दोपहर को बसें बदल कर वह ठीक समय पर घर आई ताकि अपने पति और दादा दादी के लिए, जो अब उस के पास रह रहे थे, खाना तैयार कर सके. खाना खिला कर वह फिर स्कूल पहुंची और फिर समय से घर आई ताकि विक्टर, मार्यो और मार्था जब स्कूल से घर लौटें तो वह उन का स्वागत कर सके.

परिवार ने उस की इच्छा को स्वीकार कर लिया था. "लेकिन मुझे गंभीरता से नहीं लिया गया," लूपिटा कहती है. "मेरे परिवार ने मान लिया था कि कुछ समय बाद मैं स्कूल छोड़ दूंगी और फिर से घर में बैठ जाऊंगी."

**पढ़ाई की लत.** लूपिटा तेज़ छात्रा सिद्ध हुई. स्कूल का काम करने के लिए वह सुबह ४ बजे जागती. पहले छमाही इम्तिहान में वह बड़े अच्छे नंबरों से पास हुई. उस के बाद उस ने पढ़ाई का बोझ बहुत बढ़ा लिया.

पहले वर्ष की समाप्ति पर लूपिटा को ज्ञान और कौशल का एक नया उत्तेजनापूर्ण संसार मिल गया था. अब वह विश्वविद्यालय की उपाधि पाना चाहती थी. ब्राऊंज़विल से ११५ किलोमीटर दूर एडिनबर्ग की पैन अमेरिकन यूनिवर्सिटी में उस ने अपना नाम लिखवा लिया. मंगल और बृहस्पति को वह विश्वविद्यालय जाती और सोम, बुध तथा शक्रुवार को वह टेक्सास साउथमोस्ट जाती रही.

तीन वर्ष बाद उस ने जूनियर कालेज और बैचलर आफ़ साइंस की डिगरी पा ली—साथ ही पाया पैन अमेरिकन यूनिवर्सिटी से प्रशस्ति पत्र.

कठिनाई के वर्ष थे वे. "मुझे ग्लानि होती. मेरे भीतर की परंपरागत स्पेनिश नारी मुझ से कहती, 'तुम अपने परिवार की उपेक्षा कर रही हो.' मैं जानती थी कि मैं उन की आशाओं पर पानी फेर रही हूं, लेकिन मुझे अपने लिए और अपने बच्चों के लिए इस शिक्षा की आवश्यकता थीं."

बच्चे जानते थे उन की मां अन्य मेक्सिकी-अमरीकी स्त्रियों जैसी नहीं है. मेक्सिकी-अमरीकी माताएं स्कूल कालेज नहीं जातीं. मां के प्रति उन के प्रेम में एक नया आयाम जुड़ गया था. वे अब अपनी मां से प्रेम ही नहीं करते थे, उस की सराहना भी करते थे. 'हमारी मां बहुत स्मार्ट है,' वे कहते. जैसे जैसे मां के प्रोत्साहन से उन की योग्यता बढ़ती गई, स्कूल में उन के अच्छे नंबर आने लगे और उन का आत्म विश्वास भी बढ़ता चला गया. अब वे नियमित कक्षाओं में बैठने लगे.

स्नातिका होने के बाद लूपिटा ने अपने बच्चों को ह्यूस्टन ले जाने का निश्चय किया. वहां उस के पिता रहते थे. ह्यूस्टन विश्वविद्यालय में वह स्पेनिश साहित्य का अध्ययन कर सकती थी. ज्ञान प्राप्ति के लिए उत्सुक लूपिटा ने स्पेनिश साहित्य में एम ए करने का निश्चय किया.

पैसे की कमी एक बड़ी समस्या थी. थोड़ा बहुत वह जो बना पाती थी, वह स्नातक छात्र के रूप में इम्तिहान के परचे जांच कर या रात को वाई डब्लू सी ए (यंग वूमंस क्रिश्चियन एसोसिएशन) में बोलचाल की स्पेनिश पढ़ा कर.

१९७१ में ग्वादालूपे क्विटेनीला ने स्पेनिश साहित्य में एम ए की उपाधि प्राप्त कर ली.

जब विश्वविद्यालय ने मेक्सिकी-अमरीकी अध्ययन का नया कार्यक्रम शुरू किया तो उसे अंतरिम निदेशक बनने का सुझाव दिया. "मैं अंतरिम पद नहीं चाहती," उस ने जवाब दिया. "अगर मैं नए कार्यक्रम का सिरदर्द उठाऊंगी तो उस का उपचार भी करना चाहूंगी." लूपिटा को स्थायी निदेशक बना दिया गया.

हालांकि उसे प्रशासन का क ख ग भी नहीं आता था, लेकिन हमेशा की तरह उस ने वह भी तेज़ी से सीख लिया. नई चुनौतियों ने उसे शिक्षा में डाक्टरेट करने के लिए उकसाया.

१९७३-७४ के वर्ष में उसे कड़ा परिश्रम करना पड़ा. प्रशासन का बोझ था उस पर. डाक्टरेट की तैयारी कर रही थी वह. विश्वविद्यालय और वाई डब्लू सी ए में सप्ताह में दो रात पढ़ा भी रही थी वह!

लेकिन उस ने अपने बच्चों की कभी उपेक्षा नहीं की. तेज़ी से घर पहुंचने के लिए उस ने अपने कार्यक्रम में बाज़ीगर जैसी होशियारी दिखाई. जब बच्चे स्कूल से घर पहुंचते तो वह उन्हें दरवाज़े पर खड़ी मिलती. स्कूल में जिस शाम पिताओं की बैठक होती, वह ज़रूर जाती. वह खेलकूद के उन सब कार्यक्रमों में भी उपस्थित होती जिन में उन के बच्चे हिस्सा लेते.

१९७७ में डाक्टरेट करने के बाद लूपिटा को अमरीकी शिक्षा परिषद जैसी प्रतिष्ठित संस्था से एक साल के लिए फ़ेलोशिप मिल गई. पुरस्कार विजेताओं में भी वह पहली स्पेनिश स्त्री थी.

ह्यूस्टन विश्वविद्यालय के कुलपति के कार्यालय में शिक्षार्थी प्रशासक के तौर पर फ़ेलोशिप पूरी करने के बाद उसे उप स्नातकों के मामलों के लिए सहायक प्रोवोस्ट बना दिया गया. उस का काम था फ़ैकल्टी, पाठ्य विषय और विश्वविद्यालय का शैक्षणिक प्रशासन. १९८१ में उसे विश्वविद्यालय के ३१,००० छात्रों का सहायक प्रोवोस्ट बना दिया गया.

बड़ी हैसियत होने के बावजूद लूपिटा में कहीं कोई घमंड नहीं. जब उस से पूछा जाता है, "आप क्या काम करती हैं?" तो वह अक्सर जवाब देती है, "मैं ह्यूस्टन विश्वविद्यालय में हूं." इस पर लोग समझते हैं कि वह वहां सेक्रेटरी है. लूपिटा को उन का अनुमान अपमानजनक नहीं लगता.

**अमरीकी स्पेनिश संबंध.** दिसंबर १९७६ में लूपिटा ने शिकागो में हुए एक अग्निकांड की रिपोर्ट अख़बार में पढ़ी. उस अग्निकांड में बहुत से स्पेनिश इस लिए मारे गए कि आग बुझाने वालों ने उन्हें आग से बच निकलने की जो हिदायतें अंगरेजी में दी थीं, उन्हें वे समझ नहीं सके थे. वह जानती थी कि यह दुर्घटना कभी ह्यूस्टन में भी हो सकती है क्योंकि दक्षिण पश्चिम में स्पेनिश लोगों की संख्या वहां सब से अधिक है. उस समय स्पेनिश और पुलिस विभाग के संबंध अच्छे नहीं थे. स्पेनिश लोगों ने पुलिस वालों पर क्रूरता और उदासीनता का आरोप लगाया था. रोष दंगे और आगज़नी के रूप में भड़क उठा.

लूपिटा ने पुलिस और आग बुझाने वालों को स्पेनिश भाषा पढ़ाने का सुझाव रखा. उस ने कहा कि इस कार्यक्रम से आपसी व्यवहार और सद्भाव बढ़ेगा.

अधिकारियों की शिकायतें सुनने के बाद उस ने कहा, "मैं बताती हूं कि हमें इस पाठ्यक्रम की ज़रूरत क्यों है. आप कहते हैं कि अधिकांश मेक्सिको वासी झूठे होते हैं. लेकिन यह भी हो सकता है कि वे ग़लत सवाल का ठीक जवाब दे रहे हों. आप बिना लाइसेंस गाड़ी

चलाने के ज़ुर्म में एक आदमी को पकड़े हैं. उस का नाम ह्वान गोमेथ पेरेथ है. आप पूछते हैं, 'तुम्हारा नाम?' वह कहता है, 'ह्वान.' 'नहीं,' आप कहते हैं, 'तुम्हारा आखिरी नाम?' वह जवाब देता है 'पेरेथ.' वह सच बोल रहा है, लेकिन आप को लगता है कि वह झूठ बोल रहा है. असल में आप उस का कुलनाम जानना चाहते हैं जो गोमेथ है. कंप्यूटर आप को ह्वान पेरेथ के बारे में कोई जानकारी नहीं दे पाता. आप कहते हैं, वह झूठ बोला है, जबकि सच यह है कि वह झूठ नहीं बोल रहा था."

पुलिस और बाद में अग्नि शमन विभाग ने भी उस के सुझाव मान लिए. पुलिस अकादमी में उसे नृवंश संबंधी शिक्षा देने के लिए भी रखा गया. पुलिस वालों के साथ मिल कर काम करने के कारण उग्र स्पेनिश लोगों ने उस का बहिष्कार कर दिया. उन की दृष्टि में वह पुलिस वालों की हिमायती थी. उसे जान ले लेने की धमकी दी गई. फ़ोन पर लोगों ने उस से अश्लील बातें भी कहीं.

लेकिन वह अपने कार्यक्रम की आवश्यकता का महत्व जानती थी. उस का कहना था कि अगर पुलिस वाले थोड़ी सी बोलचाल की स्पेनिश सीख जाएं तो इस से तनाव और संघर्ष में कमी हो जाएगी. "भाषा सीखना अपने आप में न तो कोई लक्ष्य है और न कोई परिणाम," लूपिटा कहती है. "हम असल में जो पढ़ा रहे हैं, उस से मनुष्य को समझने में मदद मिलेगी."

लगभग १,४०० पुलिस और आग बुझाने वालों ने लूपिटा के ह्यूस्टन कार्यक्रम में हिस्सा लिया है. इस के लिए उसे एफ़ बी आई के प्रशिक्षण अधिकारियों से प्रशस्ति पत्र भी मिला है. लूपिटा की राष्ट्रीय न्याय परामर्शी मंडल संस्थान में नियुक्ति भी की गई है. यह संस्थान व्हाइट हाउस को क़ानून लागू करने के नए तौर तरीक़ों, दंड न्याय और सुधारों के बारे में सूचना देता रहता है.

लूपिटा को बहुत आदर सम्मान मिला है. श्रेष्ठ अध्यापन के लिए ह्यूस्टन विश्वविद्यालय से पुरस्कार, स्थानीय स्पेनिश समाचार पत्र द्वारा स्थापित क्विटेनीला छात्रवृत्ति निधि, और मेक्सिको के स्वायत्त ग्वादालाहारा विश्वविद्यालय से असाधारण शिक्षिका होने का पुरस्कार.

ये सम्मान और पुरस्कार लूपिटा के लिए महत्वपूर्ण हैं, लेकिन अपने बच्चों के प्यार से बढ़कर नहीं हैं ये सब उस के लिए. मार्‌यो अब डाक्टर है. विक्टर वकील है और मार्था क़ानून पढ़ रही है. मार्‌यो का कहना है, "अगर हम जीवन में कुछ कर पाए हैं तो उस का कारण है मां का प्रेम, मां का विश्वास और मां का वह संबल जिस ने हमें आगे बढ़ने की प्रेरणा दी. मां के रूप में हमने ईश्वर का स्पर्श अनुभव किया है."

## *परामर्श*

अमरीका के उत्तर-पूर्वी राज्य मेन के एक पेट्रोल पंप पर मैं तेल लेने रुका था. वहां के रेट देख कर अटेंडेंट से बोला कि निकटवर्ती राज्य मैसाचूसेट्स में तो पेट्रोल डेढ़ सेंट प्रति लीटर सस्ती है. इस पर तपाक से उत्तर मिला, "जी हां, तब तो वहीं से ख़रीद लीजिए."

—राबर्ट मून

# जीवन की यह रीत

मैत्रीवश मैं ने अपने एक मित्र की बिजली की घड़ी थोड़ी सी मेहनत से ठीक कर दी. मेरा वह मित्र जल्दी ही रिटायर भी होने जा रहा था. खैर कुछ दिनों बाद घड़ी ज़रा पीछे रहने लगी तो मेरा मित्र बोला, "गुरू, यह क्या कर दिया. इस हिसाब से तो मैं कभी रिटायर ही नहीं हो पाऊंगा."

—इ एच

मेरी पत्नी जिस महिला मंडल की सदस्य है उस की एक बैठक में पधारे उस वक्ता ने अपनी अलास्का यात्रा के दौरान खाई में गिरने की आपबीती से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर रखा था. छः मीटर गहरे हिम विवर में उस पर जो गुज़र रही थी वह उस मनःस्थिति का विवरण दे रहा था. तभी वह समझाने लगा कि ऐसी दरारें बनती कैसे हैं. पर एक महिला के लिए यह विषय परिवर्तन इतना असह्य हो गया कि वह धीरज न धर सकी और खड़ी हो कर पूछने लगी, "मैं यह सुनने को उतावली हो रही हूं कि आप बाहर भी निकले या नहीं."

—डी टी वेल्स, इंगलैंड

रविवार को हमारा ग्लाइडिंग क्लब आम जनता को आकाश की सैर कराया करता था. हर रविवार, बिना नागा, मेरी पहली सवारी होती थी एक बूढ़ा किसान, जो घोड़े पर आया करता था.

आख़िरकार हम ने उस की इस नियमित हवाई यात्रा का कारण पूछा तो उस ने बताया कि वह अपनी भेड़ें खोजने आया करता है. ४५० मीटर की ऊंचाई से उन्हें खोजना आसान था और इस त[...] उसे घोड़े पर बैठ कर अपनी रेवड़ ढूंढने से हो[...] वाली घंटों की ज़हमत से मुक्ति मिल जाती [...]

—स्क्वाड्रन लीडर जे एच टाम[...]
(अवकाशप्राप्त[...]

पड़ोस का लड़का बढ़ई का काम सीख रहा [...] उस ने हमारे पांच साल के बेटे को लाल रंग [...] स्लेज गाड़ी बना कर दी. सितंबर का महीना [...] अतएव हम ने नन्हें को दिलासा दिया कि हमारे ब[...] की बेल पर जब तक पत्ते रहेंगे, बर्फ़ नहीं गिरे[...]

लेकिन अपनी नई बर्फ़ गाड़ी को चलाए बि[...] हमारे लाडले रह कैसे जाते — कुछ दिन बाद हम[...] देखा कि बेल की हर डाल पर पत्ते नदारद हैं [...] बर्फ़ गिरने की बाट जोही जा रही है.

—एच बी, नीदर[...]

मैं ने अपनी साढ़े चार वर्ष की भतीजी को मेले[...] गैस का गुब्बारा ख़रीद कर दिया. सारा दिन व[...] उसे बिना फ़ोड़े या खोए घुमती रही.

घर लौटने पर वह भागते दौड़ते ठोकर खा क[...] गिरी और गुब्बारा हाथ से छूट गया. रोती हुई, व[...] उसे बादलों की ओर गुम होता देखती रही. फि[...] एकाएक चहक कर बोली, "न छोड़ती तो अच्छा [...] था, लेकिन अब भगवान जी मेरा गुब्बारा देखेंगे [...] दंग रह जाएंगे."

—एम ए[...]

एक शाम मोटर साईकिल पर जाते वक़्त प[...]

भर को ध्यान भटका, संतुलन बिगड़ा और सड़क की मज़बूती का मुझे पूरा पता चल गया. देखते ही देखते पास की फैक्टरी के कर्मचारियों ने मुझे घेर लिया. प्राथमिक चिकित्सा संबंधी उन का ज्ञान आश्चर्यजनक था. मेरी टूटी हड्डी को उन्हों ने तुरंत जांचा और जकड़ कर बांध दिया. अन्य घावों की भी मरहम पट्टी कर दी गई.

पर उन की कुशलता का रहस्य कुछ देर बाद समझ में आया. दरअसल दुर्घटना के समय वे सब प्राथमिक चिकित्सा का अभ्यास कर रहे थे. और मैं था उन का पहला ... —के टी

सर्दियों की रात हम सब गरम गरम बिस्तरों में दुबके रेडियो पर मौसम का हाल सुन रहे थे कि मेरे भाई ने ऊंघते हुए कहा, "पता नहीं फ़्लोरिडा में कितना तापमान होगा."

मैं ने पूछा, "और हवाई में जाने कितना होगा."

इस पर मेरे दादा भी बोले, "और ये भी तो ज़रा बताओ कि फ़ारेनहाइट में कितना होगा."

—डी पी

शादी के बाद मैं परेशान था कि मेरी पत्नी के बच्चे मुझे पिता रूप में स्वीकार करेंगे भी या नहीं. कैथी तो ममी थी, परंतु मैं डेविड ही था, डैडी नहीं.

एक दिन बच्चों को अपने ममी पापा के पास छोड़ कर मैं और कैथी बाज़ार जा रहे थे. बच्चों को अच्छे बच्चों की तरह रहने की नसीहत कर के हम चले तो वे चिल्लाए, "बाई बाई ममी, बाई डेविड."

"एक दिन वह भी आएगा," मैं ने चलते चलते सोचा, "जबकि ये ममी और डैडी कहेंगे – ममी और डेविड नहीं."

घर लौटे तो हमारा सात वर्ष का बेटा मेरे पापा के साथ पिछवाड़े खड़ा था. "देखो पापा," हमें देख कर चिल्लाया, "डैडी और कैथी भी आ गए."

—डेविड ग्रीन, कनाडा

दादी की मौत हुई तो हम उन्हें दादा जी के बग़ल में ही दफ़नाने के लिए ले गए. जनाज़े में शामिल लोगों में सिलवटों से भरा गरम सूट पहले एक मैला कुचैला व्यक्ति भी था. अपना फटा पुराना हैट उस ने सीने से लगा रखा था, और आंसू उस की बढ़ी हुई दाढ़ी पर टप टप टपक रहे थे.

नाम था उस का बिली, और वह मेरे दादा के साथ वाले फार्म में रहता था. ज़मीन से कुछ विशेष प्राप्ति नहीं होती थी अतएव उस का परिवार प्रायः भूखा ही सोता था. परंतु वे सब रहते सम्मान के साथ थे.

बिली हमेशा ही खाने का डिब्बा ले कर स्कूल के लिए निकला करता ताकि किसी को पता न चले कि उन के घर में खाने को नहीं था. स्कूल जाते समय वह हर सुबह मेरे पिता को बुलाने आता था और ख़ाली डब्बा रसोई की मेज़ कर रख देता. दादी परिवार के बाक़ी सदस्यों के डब्बों के साथ चुपके से उस का डब्बा भी भर देतीं और स्कूल में मेरे पापा को कभी पता न चलता कि बिली भी वही खा रहा है जो कि वह खा रहे हैं.

न तो कभी दादी ने खाली डब्बे का हाल किसी से कहा और न ही बिली ने कभी इस का ज़िक्र किया. आज वह पांच मील चल कर दादी की क़ब्र तक पहुंचा था. आज भी उतना ही ग़रीब और भूखा, परंतु मन में दादी को श्रद्धांजलि अर्पित करने की लगन लिए, उस महिला को विदा कहने के लिए जिस ने उस के ख़ाने का ख़ाली डब्बा तो रोज़ भरा, मगर उस के सम्मान पर कभी आंच नहीं आने दी.

—विलमा अलेग्जेंडर, कनाडा

ज़माना हो गया था मित्रवर को रुपए उधार दिए, लौटाने का नाम तक नहीं लेते थे. कई बार चेक भी दिए, पर उन के खाते में पैसा कहां था, सो सब वापस लौट आए. बहरहाल इस बार वह मेरे दफ़्तर में ही आ गया और लगा चेक काटने. जब तक मैं आपत्ति करूं, चेक मेरे हाथ में थमा दिया जा चुका था और मेरे हाथ से भी छूट कर सीधा ज़मीन पर जा गिरा था:

मित्रवर क्षण भर तो इस दृश्य को देखते रहे फिर फरमाया, "देखा, अब तो वापस नहीं लौट रहा न चेक तुम्हारे पास?" —रमेश राजगोपालन, बंबई

---

इस स्तंभ के हर सस्मरण पर १५० रुपए का पारिश्रमिक दिया जाता है. आप भी कलम उठाएं और अपने संस्मरण हमारे पास भेज दें

### वज़न कम करने के लिए

# डायटिंग

## प्रस्तुत प्रश्नोत्तरी पढ़िए और फ़ालतू चरबी घटाइए

**केली डी ब्राउनेल, पीएच डी और आइरीन कोपलैंड**

**वज़न कम करने का एक अच्छा तरीक़ा है एक या दो वक़्त का भोजन न करना.**

ग़लत. वज़न कम करने की कोशिश में बहुत से लोग नाश्ता तथा दोपहर का खाना बंद कर देते हैं. नतीजा यह होता है कि रात के खाने के समय तक मारे भूख के वे इतने बेहाल हो जाते हैं कि एक बार में बहुत ज़्यादा खा जाते हैं. कई बार तो इतना कि पूरे दिन में भी न खाते. इस के अलावा दिन में सिर्फ़ एक बार भरपूर भोजन कर लेने से शरीर में चरबी ज़्यादा बनती है, कोलेस्टेराल बढ़ता है तथा ग्लूकोस को जज़्ब करने की शक्ति क्षीण हो जाती है.

**मोटापा नाश्ते से बढ़ता है, भोजन से नहीं.**

यह धारणा भी ग़लत है. आप जो खा रहे हैं, उसे चाहे नाश्ते का नाम दें या भोजन का, उस से कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता. अगर आप अपने शरीर की ज़रूरत से ज्यादा कैलोरियां भकोसेंगे तो आप का वज़न बढ़ेगा ही. भोजनों के बीच थोड़ा बहुत नाश्ता कर लेने से कुछ लोग भोजन कम करते हैं और यह उन के वज़न कम करने के कार्यक्रम में सहायक सिद्ध हो सकता है.

**अगर आप हमेशा एक जितना भोजन करते रहेंगे तो उम्र बढ़ने के साथ साथ आप का वज़न भी धीरे धीरे बढ़ता जाएगा.**

यह बात ठीक है. जैसे जैसे आप की उम्र बढ़ती है, आप के शरीर को अपनी चय उपचय आवश्यकताओं को तुष्ट करने के लिए शक्ति की ज़रूरत कम हो जाती है. इस के साथ ही जवानी के बाद शारीरिक गतिविधियां पहले जैसी तीव्र नहीं रहतीं. ऐसे में अगर आप के भोजन की मात्रा पहले जितनी ही बनी रही तो वज़न बढ़ेगा ही.

**अधिक वज़न वाले किसी व्यक्ति का वज़न एक बार कम होने के बाद अगर फिर बढ़ जाता है, तो कोई नुक़सान नहीं होता.**

ग़लत. बार बार वज़न कम होने और बढ़ने से ज़्यादा नुक़सान हो सकता है. वज़न बढ़ने के

केली ब्राउनेल, पीएच डी., फ़िलाडेल्फ़िया के पेंसलवेन्या विश्वविद्यालय में मिताहारियों और उन के जीवन साथियों को परामर्श देते हैं.

दौरान रक्तचाप और सीरम कोलेस्टेराल दोनों असाधारण रूप से बढ़ सकते हैं. यह ज़रूरी नहीं कि वज़न कम होने पर रक्तचाप और कोलेस्टेराल भी पहले जैसे हो जाएं.

**अगर आप कड़ाई से सुनिश्चित मात्रा में आहार लें तो आप का वज़न हर सप्ताह कम होता चला जाएगा.**

ग़लत. एक न एक समय कम आहार लेने वाला प्रायः हर व्यक्ति परिवर्तन हीनता की स्थिति में पहुंच जाता है. कई कारण ऐसे हैं जिन से वज़न का कम होना कुछ समय तक रुका रहता है. लेकिन अगर आप उस आहार पर देर तक डटे रहें तो वज़न फिर बढ़ने लगेगा.

**यह आवश्यक नहीं है कि संतुलित आहार लेने के दौरान 'प्राकृतिक' भोजन करने से लाभ ही लाभ हो.**

सही है. पौष्टिकता के दृष्टि कोण से बात सही हो सकती है कि आप केवल 'प्राकृतिक' पदार्थ खाएं—यानी वस्तुएं वैसी ही खाएं जैसी प्रकृति ने बनाई हैं—क्योंकि कई एडिटिव और प्रिज़रवेटिव तत्व हानिकारक भी हो सकते हैं. फिर भी 'प्राकृतिक' का अर्थ 'कम कैलोरी वाला भोजन' नहीं होता. स्वाभाविक या प्राकृतिक रूप सें मिलने वाले कुछ खाद्यान्नों में (जैसे मंगूफली) कैलोरियां बहुत अधिक होती हैं.

**मिताहारियों के लिए रोज़ विटामिन की गोलियां खाना ज़रूरी नहीं है.**

सही है, बशर्ते भोजन वाकई संतुलित हो.

**स्टार्च युक्त भोजन से सदा बचना चाहिए.**

ग़लत. स्टार्च (कांपलेक्स कार्बोहाइड्रेट) और प्रोटीन में प्रति ग्राम चार कैलोरियां होती हैं. सो प्रोटीन की तुलना में स्टार्च से ज़्यादा चरबी नहीं बढ़ती. चिकनाई वाले वे पदार्थ जिन में प्रति ग्राम नौ कैलोरियां होती हैं, उन से मोटापा सब से अधिक बढ़ता है. अगर आप के भोजन में स्टार्च की मात्रा अनुपात से ज़्यादा न हो तो फिर स्टार्च घटाने की ज़रूरत नहीं है. रेशायुक्त स्टार्च वाला भोजन तो लाभदायक ही होता है जैसे साबुत अनाज, दलहन, तथा कच्ची और बिना छिली सब्ज़ियां. रेशे वाली चीज़ें बड़ी आंत में भोजन की गति को सुगम कर देती हैं. यूं इन में वज़न कम करने वाला कोई जादुई गुण नहीं होता.

**थोड़े बहुत मद्यपान से कुछ फ़र्क नहीं पड़ता, आख़िर वह बस तरल ही तो है.**

एकदम ग़लत. अलकोहल में बहुत ज़्यादा कैलोरियां होती हैं. इस के अलावा इस से भूख भी बढ़ जाती है.

**आलू मोटापा नहीं बढ़ाता.**

ठीक है. मध्यम से ले कर बड़े आकार तक के एक सिंके हुए आलू में सिर्फ़ १४५ कैलोरियां होती हैं, लेकिन उसी में दो बड़े चम्मच घी मिला देने से यह गिनती तिगुनी हो जाती है. आलू को तलने से कैलोरियां बढ़ जाती हैं क्योंकि उस में चिकनाई शामिल हो जाती है.

**भोजन कम करने के लिए दही उत्तम है.**

ठीक दही की २२७ ग्राम मात्रा में ८ ग्राम प्रोटीन, ८ ग्राम चिकनाई तथा लगभग १४० कैलोरियां होती हैं. चिकनाई के मुकाबले प्रोटीन का यह अनुपात ज़्यादा है और कैलोरियां भी अधिक नहीं हैं, लेकिन मीठे दही में कैलोरियां बहुत बढ़ जाती हैं. हलके नमकीन दही में काली मिर्च या जीरा मिला कर लेना बेहतर है.

**चकोतरा खाने से मोटापा छंट जाता है.**

यह धारणा भ्रामक है. कुछ लोगों का ख़्याल है कि भोजन से पहले एक चकोतरा खा

लेने से वज़न नहीं बढ़ता. चकोतरे में विटामिन सी होता है. इस में कैलोरियां कम होती हैं तथा कार्बोहाइड्रेट भी ज़्यादा नहीं होते. इस में संतरा नारंगी वंश के अन्य फलों की अपेक्षा गूदा भी ज़्यादा होता है, लेकिन इस में मोटापा छांट देने जैसा कोई विशेष गुण नहीं होता.

**आटे और मैदा में कैलोरियां एक समान होती हैं.**

ठीक. आटे में रेशे का तत्व अधिक होता है, लेकिन दोनों के बीच कैलोरियों का फ़र्क नाममात्र का ही होता है.

**चावलों को धो देने से उन की कैलोरियां कम हो जाती हैं.**

ग़लत. पकाने से पहले चावल धो लेने से विटामिन भले ही कम हो जाएं, पर स्टार्च और कैलोरियों की मात्रा कम नहीं होती.

**चीनी की अपेक्षा शहद में कम कैलोरियां होती हैं.**

ग़लत. शहद के एक बडे चम्मच में ६५ कैलोरियां होती हैं, चीनी में सिर्फ़ ५४.

**मिताहारी सब्ज़ियां जितनी चाहे खा सकते हैं क्योंकि उन में कैलोरियां बहुत कम होती हैं.**

ग़लत. सच्चाई तो यह है कि कई सब्ज़ियों में कैलोरियां काफ़ी होती हैं. इस के अलावा किसी भी चीज़ को बहुत खाने से संतुलन गड़बड़ा सकता है. निम्न सब्ज़ियों के आधे प्याले में २५ से भी कम कैलोरियां होती हैं:

चुंकदर, फूलगोभी, बंदगोभी, गाजर, सलाद, खीरा, बैंगन, हरी फलियां, हरी मिर्च, गुच्छी (मशरूम), प्याज़, शकरकंद, पालक, टमाटर, गलगल, घीया, तोरई.

**अच्छा आहार वही है जिस में कार्बोहाइड्रेट की मात्रा बहुत कम हो.**

ग़लत. इस बात का कोई प्रमाण नहीं है कि कम कैलोरी वाले आहार की अपेक्षा कार्बोहाइड्रेट हीन आहार वज़न कम करने में अधिक सहायक सिद्ध हुआ हो. दरअसल कार्बोहाइड्रेट की कमी से सिरदर्द, चक्कर आने और आलस्य जैसी व्याधियां पैदा हो सकती हैं. इस की कमी से गुरदों पर अतिरिक्त भार भी पड़ सकता है.

**बचपन में जो बच्चे मोटे हो जाते हैं, उन का मोटापा बाद में भी दूर नहीं हो पाता.**

ठीक. ज़्यादा मोटे बच्चों के शरीर में मोटापे के कोश बहुत ज़्यादा होते हैं. ये कोश शिशुओ को ज़्यादा खिलाने पिलाने से बढ़ जाते हैं. एक बार ये कोश बढ़ जाते हैं तो सारी ज़िंदगी वैसे ही रहते हैं. यही कारण है कि अधिकतर बच्चे व्यस्क होने पर भी मोटे ही रहते हैं.

**मां का दूध पीने वाले बच्चे बोतल का दूध पीने वाले बच्चों की अपेक्षा मोटापे का शिकार कम ही होते हैं.**

ठीक. जब बच्चे मां का दूध पीते हैं तो कितना दूध पीना है, अपने आप तय कर लेते हैं. जब उन्हें बोतल का दूध पिलाया जाता है तो इस बात का फ़ैसला मां करती है जिस से दूध की मात्रा अधिक हो जाने का डर रहता है.

**बच्चों को मिठाई खाने से रोकना नहीं चाहिए वरना बड़े होने पर वे गुड़ के चींटे बन जाते हैं.**

ग़लत. मिठाई के होने पर ही इच्छा बढ़ती है, न होने पर नहीं. जिन बच्चों को छोटी उम्र में ही काफ़ी मिठाई खाने की आदत पड़ जाती है, वे जीवन भर मिठाई के रूप में बहुत सी कैलोरियां भकोसने के आदी हो जाते हैं.

'द पार्टनरशिप डाइट प्रोग्राम' से संक्षिप्त. कापीराइट १९८० केली डी ब्राउनेल पीएच डी. प्रकाशक: रौमन वेड पब्लिशर्स, इन., न्यू यार्क.

ऐसे की जाती है अमरीका में

# राष्ट्रनेताओं की सुरक्षा

**अब तक अमरीका के ३९ राष्ट्रपतियों में से १० की हत्या के प्रयत्न हुए हैं. उन में से चार जानलेवा साबित हुए. अमरीका के राष्ट्रपति की रक्षा का काम दिन ब दिन जटिल होता चला जा रहा है**

**कार्ल टी रोएन तथा डेविड एम मेज़ी**

दिल दहला देने वाले ये दृश्य आज भी अमरीकी स्मृति पटल पर पूरी तरह अंकित हैं:

० डलास. २२ नवंबर १९६३. राष्ट्रपति जान एफ़ कैनेडी की उस समय हत्या हो गई जब वे मोटर क़ाफ़िले की अपनी खुली कार में जा रहे थे. गोलियां चलीं तो सीक्रेट सर्विस का एक एजेंट उप राष्ट्रपति लिंडन जानसन की जान बचाने के लिए उन के सामने आन खड़ा हुआ.

० सैकरामेंटो (कैलिफ़ोर्निया). ५ सितंबर १९७५. लिनेट 'स्क्वीकी' फ़ाम की गोली से राष्ट्रपति जेराल्ड फ़ोर्ड बाल बाल बचते हैं क्योंकि सीक्रेट सर्विस का एक एजेंट हत्यारी लिनेट के हाथ से ४५ कैलिबर की पिस्तौल छीन लेता है और हाथापाई के बाद उसे ज़मीन पर गिरा देता है.

० वाशिंगटन. ३० मार्च १९८१. सीक्रेट सर्विस का एजेंट राष्ट्रपति रोनल्ड रीगन और उस हत्यारे के बीच आ कूदता है जिस से राष्ट्रपति को लक्ष्य कर के गोली चलाई थी. हालांकि राष्ट्रपति गंभीर रूप से घायल हो गए, लेकिन एजेंट ने उन की जान बचा ली.

पागल हत्यारों और भाड़े के क़ातिलों के इस ज़माने में अमरीकी सीक्रेट सर्विस के लिए राष्ट्रपति की रक्षा का काम असाधारण चुनौती बनता जा रहा है. पिछले कुछ वर्षों से इस एजेंसी पर राष्ट्रपति के परिवार के सदस्यों, उप राष्ट्रपति तथा उन के परिवार के सदस्यों, सभी भूतपूर्व राष्ट्रपतियों, उन की पत्नियों

तथा बच्चों, राष्ट्रपति पद के उम्मीदवारों तथा अमरीका के दौरे पर आए दूसरे देशों के राष्ट्रपतियों की रक्षा का भार भी आ पड़ा है. इन ज़िम्मेदारियों के कारण सीक्रेट सर्विस का बहुत विस्तार हुआ है. कैनेडी हत्याकांड के समय इस में ३८९ एजेंट थे और इस का बजट था ८० लाख डालर. १९८३ तक इस के एजेंटों की संख्या बढ़ कर १,७८८ हो गई तथा बजट २४ करोड़ डालर हो गया.

इस के एजेंट, जिन में लगभग ५० महिलाएं भी हैं, तीसादि के मध्य के आयु वर्ग के ऐसे व्यक्ति होते हैं जिन के पास कालेज की डिग्री या फिर कालेज शिक्षा और पुलिस विभाग में काम करने का अनुभव होता है. राष्ट्रपति की प्राण रक्षा के लिए वे अपने प्राणों की आहुति देने को तैयार रहते हैं. सीक्रेट सर्विस अपने एजेंटों के काम करने का ढंग कभी प्रकट नहीं करती, लेकिन भूतपूर्व एजेंटों और अमरीकी राष्ट्रपतियों के साथ दौरे पर जाने वाले लोगों से प्राप्त विवरण के आधार पर इन की कार्य प्रणाली का एक ख़ाका खींचा जा सकता है.

**खोज और हदबंदी.** जब अमरीकी राष्ट्रपति को कहीं उपस्थित होना होता है तो उस से लगभग एक सप्ताह पहले राजधानी वाशिंगटन में रहने वाले इस सर्विस के विशेष एजेंट स्थानीय पुलिस तथा सुरक्षा विभाग के लोगों के साथ मिल कर लंबी चौड़ी तैयारी करते हैं. जिस रास्ते से मोटर कारों का क़ाफ़िला गुज़रने वाला हो, उस में ऐसे संभावित स्थल जांचे जाते हैं जहां से राष्ट्रपति पर गोली चलाए जाने का डर हो. मैनहोलों को खोल कर देख लिया जाता है कि कहीं उस में कोई बम तो नहीं छिपाया गया है. आसपास की इमारतों में ऐसे स्थानों की जांच की जाती है जहां से छिप कर गोली चलाई जा सकती हो. अगर रास्ते में कोई नदी आती हो तो जल सेना के ग़ोताख़ोर पानी के अंदर जा कर जांच करते हैं. कोई स्थानीय अस्पताल आपात-कालीन स्थिति से निबटने के लिए निश्चित कर लिया जाता है. उसे राष्ट्रपति के रक्त वर्ग की जानकारी दे दी जाती है. तुरंत निकल कर जाने के रास्ते चुन लिए जाते हैं.

पुलिस अधिकारियों आदि की सहायता से दूसरे एजेंट फ़ाइलों की छानबीन करते हैं. वे इस बात का पता लगाते हैं कि क्या उस क्षेत्र में ऐसे लोग भी रहते हैं जो राष्ट्रपति की सुरक्षा के लिए ख़तरा पैदा कर सकते हैं. हों तो सीक्रेट सर्विस के एजेंट उन से सवाल जवाब करते हैं या उन पर निरंतर नज़र रखते हैं.

जब राष्ट्रपति विशेष विमान से किसी हवाई अड्डे पर उतरते हैं तो उन्हें तुरंत वहां इंतज़ार करती विशेष लीमूज़ेन गाड़ी में बिठा दिया जाता है. इस गाड़ी को पहले ही हवाई जहाज़ से वहां पहुंचा दिया जाता है. यह गाड़ी शेरमन टैंक के समान है. इस के सारे ढांचे और खिड़कियों पर गोलियों का असर नहीं होता. सीक्रेट सर्विस का एक एजेंट राष्ट्रपति की कार चलाता है तथा एक एजेंट उन के साथ ही बैठता है. १५ से २० तक अन्य एजेंट कारों के क़ाफ़िले में रहते हैं. जब राष्ट्रपति की कार धीमे चलती है तो वे उन के अगल बग़ल हो लेते हैं अन्यथा पीछे पीछे गाड़ियों में रहते हैं. इन गाड़ियों में पूरा शस्त्रागार साथ चल रहा होता है. उन में इज़रायल में बनी हलकी मशीन गनें, आंसू गैस, आवश्यक दवाइयां और यहां तक कि कार के मलबे में फंसे व्यक्तियों को निकालने वाले औज़ार भी होते हैं.

इमारतों की छतों पर तेज़ दूरबीनों और

## हत्यारे की खोज

किसी संभावित हत्यारे को पहचान पाना बड़ा मुश्किल काम है. लेकिन मनश्चिकित्सक, मनोवैज्ञानिक और अपराध विज्ञानियों जैसे विशेषज्ञों का कहना है कि जिन लोगों ने बड़े बड़े नेताओं को मारने की कोशिश की है, उन में कुछ लक्षण सामान्य थे.

वह एकाकी होता है. निर्विवाद रूप से यह पाया गया है कि हत्यारे या संभावित हत्यारे वे व्यक्ति थे जो एकाकी जीवन जी रहे थे. उन्हों ने या तो शादी की ही नहीं या शादी जैसे महत्वपूर्ण संबंध बनाने में असफल रहे. ली हार्वे ओस्वाल्ड, जान डब्लू हिंकली जूनियर, राबर्ट एफ़ कैनेडी का हत्यारा सिरहन सिरहन, जार्ज वैलेस पर गोली चलाने वाला आर्थर ब्रेमर तथा मार्टिन लूथर किंग जूनियर का हत्यारा जेम्स अर्ल रे अपराधों के समय अकेले ही रह रहे थे. इन में से कोई भी किसी दूसरे व्यक्ति के साथ स्थायी संबंध स्थापित नहीं कर पाया था.

वह लक्ष्यहीन व्यक्ति होत्ता है.१९१२में राष्ट्रपति पद के उम्मीदवार थियोडोर रूज़वेल्ट पर गोली चलाने से पहले जान श्रैंक ने अमरीका के आठ राज्यों में ३,२२५ किलोमीटर से भी अधिक की दूरी तय की थी. राष्ट्रपति रीगन की हत्या करने का प्रयत्न करने से पहले हिंकली कई महीनों तक सारे देश में भटकता फिरा था. ओस्वाल्ड सोवियत संघ भाग गया था और बाद में अमरीका लौटा. वापस आने के बाद भी उस ने बहुत भ्रमण किया.

उस में धूम धड़क्के की भावना होती है. हत्यारा कल्पना करता है कि वह महत्वपूर्ण व्यक्ति है, भले ही कुंठा ग्रस्त. वह कोई ऐसा ज़ोरदार काम करना चाहता है जिस से उस की प्रतिभा पहचानी जा सके.

वह अपने आप को उग्रवादी समझता है. अनेक हत्यारे क्रांतिकारी थे. मनश्चिकित्सक एडविन ए वाइनस्टाइन का कहना है कि संभावित हत्यारे प्राय: 'राजनीति तथा अन्य संस्थाओं में प्रयुक्त होने वाली भाषा बोलते हैं ताकि उन की पहचान बन सके.' अनेक विशेषज्ञों का कहना है कि कई मामलों में हत्यारे अपनी कल्पना में हत्या के प्रयत्न के ज़रिए उन संबंधों के अभाव की पूर्ति का प्रयत्न करते हैं जो वे रिश्तेदारों, मित्रों अथवा सह कर्मचारियों के साथ स्थापित नहीं कर सके.

—रिचर्ड रेस्टाक, एम डी
साइंस डाइजेस्ट

राइफ़लों से लैस अचूक निशानेबाज़ तैनात रहते हैं. सीक्रेट सर्विस के अतिरिक्त एजेंट .३७५ मैगनम की पिस्तौलें लिए सारे रास्ते में जगह जगह तैनात रहते हैं. कुछ एजेंट भीड़ पर नज़र डालते रहते हैं और यह देखते रहते हैं कि कोई व्यक्ति संदिग्ध तो नहीं लग रहा. साफ़ और धूप खिले दिन के बावजूद बरसाती कोट पहने आदमी या राष्ट्रपति की ओर अचानक तेज़ी से बढ़ती कैमरे वाली महिला पर उन्हें संदेह हो सकता है.

गंतव्य स्थान पर पहुंच कर राष्ट्रपति को जिस कक्ष में भाषण करना होता है, उस की भी पूरी पड़ताल होती है. ख़ास तौर पर प्रशिक्षित कुत्तों को सारा कमरा सुंघा क़र इस बात का संतोष कर लिया जाता है कि कमरे में कहीं बम तो नहीं छिपाया गया है. जनता के जो लोग कक्ष में आते हैं, उन की जांच वैसे ही मेटल डिटेक्टरों से की जाती है जैसे हवाई अड्डों पर लगे होते हैं. महिलाओं के पर्स की तलाशी होती है. इस के बाद उस कक्ष के द्वार बंद कर दिए जाते हैं.

गोल्फ़ के थैलों में राइफ़लें. जब राष्ट्रपति

अपने निवास स्थान व्हाइट हाउस में होते हैं, तब भी सुरक्षा व्यवस्था इतनी ही कड़ी रहती है. इस का भी कारण है. पिछले दस वर्षों में एक व्यक्ति ने थल सेना से चुराया एक हेलीकाप्टर इस भवन के दक्षिणी बाग़ीचे में उतार दिया था. इस इमारत के सामने लगाई गई लोहे की बाड़ को पार करने की कोशिश तो कई कर चुके, पर एक ने तो अपनी कार ही इस में घुसा दी थी. गुलाब की झाड़ियों में छिपा कर लगाए गए टेलीविज़न कैमरों तथा अन्य संवेदनशील इलेक्ट्रानिक उपकरणों को बाग़ीचे में लगा कर ७.६ हेक्टेयर में फैले व्हाइट हाउस पर निगरानी रखी जाती है. एजेंट बीच बीच में हवा की जांच कर यह पता लगाते रहते हैं कि कहीं उस में ज़हरीली गैस अथवा कीटाणु तो नहीं छोड़े जा रहे हैं. वे व्हाइट हाउस देखने आए लोगों में बड़ी ख़ूबी से शामिल हो जाते हैं. वे व्हाइट हाउस में आने वाली हर चीज़ की जांच करते हैं, फिर चाहे वह मिठाई की गोलियों का पैकेट ही क्यों न हो जो राष्ट्रपति रीगन को विशेष रूप से पसंद है.

राष्ट्रपति भले की छुट्टी पर हों, सीक्रेट सर्विस के एजेंटों को फिर भी छुट्टी नहीं मिलती. जब ड्वाइट ही आइज़नहावर राष्ट्रपति थे और गोल्फ़ खेलने के लिए जाते तो अगली 'टी' पर खड़े खिलाड़ी नज़र आने वाले दो नौजवान गोल्फ़ के थैलों में राइफ़लें लिए रहते. राष्ट्रपति जेराल्ड फ़ोर्ड जब वेल (कैलाराडो) में बर्फ़ की ढलानों पर स्की कर रहे होते तो इस खेल में कुशल एजेंट उन के आसपास बने रहते. राष्ट्रपति रोनल्ड रीगन जब कैलिफ़ोर्निया स्थित अपने रैंच में जाते तो घुड़सवार एजेंट उन्हें अपनी आंखों से ओझल नहीं होने देते.

सुरक्षा के हर उपाय और जेम्स बौंड मार्का हर युक्ति के बावजूद अधिकांश अधिकारियों का यह मत है कि राष्ट्रपति के बचाव की एक ही कुंजी है और वह है पर्याप्त सूचना एकत्र करना, गुप्त उपायों से यह पता लगाना कि कौन लोग हत्या का प्रयत्न कर सकते हैं. तभी संभावित हत्यारों पर हत्या का प्रयत्न करने से पहले ही क़ाबू पाया जा सकता है. सीक्रेट सर्विस के पास ऐसे २६,०८० व्यक्तियों के बारे में जानकारी है जो कंप्यूटर द्वारा वर्गीकृत है. उन में कुछ ऐसे लोग हैं जिन्हों ने कभी राष्ट्रपति या अन्य अधिकारियों को धमकी दी थी या ऐसे लोग हैं जिन की किसी गतिविधि के कारण अधिकारियों को उन के प्रति संदेह हो गया है. उन में से भी २५० से ले कर ४५० तक ऐसे लोग हैं जिन पर संदेह अधिक है.

सीक्रेट सर्विस के मुख्यालय में प्रति माह ५,००० से ६,००० तक विभिन्न सूचनाएं आती हैं. किसी शराबघर में कोई यह कहते सुना गया, "व्हाइट हाउस के उस बेवक़ूफ़ को तो गोली मार देनी चाहिए." एक महिला से सूचना मिली कि उस की पड़ोसन अपनी नौकरी छूट जाने का दोष राष्ट्रपति पर मढ़ रही है सीक्रेट सर्विस के भूतपूर्व निदेशक एच स्टुअर्ट नाइट का कहना है, "जिन लोगों के बारे में हमें जानकारी मिलती है, उन में से ज़्यादातर मानसिक रोग ग्रस्त होते हैं. हम अपने आप से पूछते हैं—क्या इन में से कोई सचमुच राष्ट्रपति को मारने की योजना बना रहा है?"

कभी कभी ऐसा संकेत मिलता है जिस के बारे में कड़ी सावधानी बरतनी ही पड़ती है. नवंबर १९८१ में गुप्तचरों से सूचना मिली कि लीबिया के कर्नल मुअम्मर अल ग़द्दाफ़ी ने कुछ उच्च पदस्थ अमरीकी अधिकारियों की

हत्या के लिए, जिन में राष्ट्रपति रीगन का नाम भी शामिल है, हत्यारों के दल भेजे हैं. तब सुरक्षा के लिए जो भी कड़ी से कड़ी व्यवस्था हो सकती थी, कर दी गई. एक बार जब राष्ट्रपति वाशिंगटन के कैनेडी सेंटर में एक भव्य समारोह में उपस्थित हुए तो अमरीका के अनेक गण्यमान्य व्यक्तियों, यहां तक कि एफ़बीआई के निदेशक विलियम एच वैबस्टर तक को तब तक थियेटर में प्रवेश नहीं करने दिया गया जब तक कि मेटल डिटेक्टर से उन की जांच नहीं हो गई.

एक अधिकारी का कहना है, "पहले से मिली जानकारी बड़ी कारगर सिद्ध हुई. कर्नल ग़द्दाफ़ी भले ही कुछ कहें, पर हम यह मानते हैं, कि उसे अपने क़ातिल वापस बुलाने पड़े."

वास्तव में सुरक्षा व्यवस्था को और अधिक सक्षम बनाने के सुझावों में से एक महत्वपूर्ण सुझाव है बेहतर गुप्तचर्या. सीक्रेट सर्विस के अधिकारी विशेष रूप से उन दिशा निर्देशों से असंतुष्ट हैं जो १९७५ में लागू किए गए थे. इन के कारण एफ़बीआई के अधिकार सीमित हो गए हैं और अब वह क्रांतिकारी दलों में अपने गुप्तचर भरती नहीं कर सकती. भूतपूर्व निदेशक नाइट का कहना है कि इन निर्देशों के कारण सीक्रेट सर्विस को एफ़बीआई से मिलने वाली सूचानाओं में ६० प्रति शत तक कमी हुई है.

नेशनल एकेडमी आफ़ साइंसेज़ के व्यवहार विशेषज्ञों ने सुझाव दिया है कि संभावित राजनीतिक हत्यारों को खोज निकालने के लिए एजेंटों को बेहतर प्रशिक्षण देने की आवश्यकता है. किसी भी मानसिक विकार युक्त हत्यारे का निश्चित शब्दचित्र तो उपलब्ध हो नहीं सकता. सिर्फ़ कुछ आम आदतें ही पता चलती हैं.

दूसरी समस्या है राष्ट्रपति के चुनाव अभियान के संबंध में व्हाइट हाउस तथा एफ़बीआई के बीच लंबे समय से चला आ रहा विवाद. राजनीतिज्ञों की सहज प्रवृत्ति यह होती है कि वे खुली कार में घूमना और भीड़ के बीच में जा कर लोगों से हाथ मिलाना पसंद करते हैं. इन आदतों के कारण सीक्रेट सर्विस के एजेंट यथाशीघ्र सेवा निवृत्त होने की कोशिश में रहते हैं. इस संबंध में ह्यूबर्ट एच हंफ़्री ने, जो १९६५ से १९६९ तक अमरीका के उप राष्ट्रपति रहे थे, एक बार कहा था, "आम जनता के निर्वाचित प्रतिनिधियों का काम सिर्फ़ सीक्रेट सर्विस के एजेंटों से हाथ मिला लेने से ही तो नहीं चल सकता."

अब व्हाइट हाउस की ओर से ज़्यादा से ज़्यादा यह कोशिश की जाने लगी है कि अवांछित ख़तरा उठाने से बचा जाए. सुरक्षा संबंधी कारणों से ही राष्ट्रपति रीगन और उप राष्ट्रपति जार्ज बुश अनवर अल सादात की अंत्येष्टि में भाग लेने मिस्र नहीं जा सके थे. सुरक्षा प्रावधानों के ही कारण राष्ट्रपति रीगन को क्रिसमस के राष्ट्रीय वृक्ष को व्हाइट हाउस के भीतर से ही प्रज्वलित करने पर बाध्य होना पड़ा था. यह भी हो सकता है कि अब और भी कम अवसरों पर राष्ट्रपति जनता के सामने आएं, यात्रा के दौरान उन की कार पर सुरक्षा के लिए प्लास्टिक का अतिरिक्त आवरण लगाया जाए, उन के कहीं आने जाने के संबंध में या तो प्रचार किया ही न जाए, या फिर नाम मात्र का हो, दर्शकों की भीड़ को उन से और अधिक दूर रखा जाए.

# कठपुतली का स्वेटर

पीटर स्क्रीवन

**वह गुड़िया सी बच्ची कठपुतली के तन-मन को राहत पहुंचाने के लिए उपहार लाई थी. बदले में उसे मिल गई जीवन भर के लिए अनमोल निधि**

कठपुतलियों में मेरा पहला सितारा था सामी. कुल २५ सेंटीमीटर लंबे सामी के चेहरे पर किंचित अचरज के भाव थे. माथे पर लाल रंग के बालों की झूलती लट और तीखी नाक जिसे बार बार संवारने की ज़रूरत महसूस होती.

सामी का उदय पचासादि के प्रारंभिक वर्षों में छोटे छोटे भ्रमण कार्यक्रमों के दौरान हुआ था, और मेरे एक कठपुतली वाले के रूप में ख़ुद मेरे जीवन का आरंभ भी उसी समय हुआ. मैं ने उस का सृजन असल में पिनाशियो* के रूप में किया था, लेकिन देखते ही देखते वह स्वयं एक लोकप्रिय पात्र बन गया, जिसे ले कर मैं ने साहस और रोमांच के कई नाटकों की रचना की. हर नए वृत्तांत में वह विकट परिस्थितियों में फंस जाने पर भी असंभव ढंग से बच निकलता. समुद्री जहाज़ टूट जाने पर वह समुद्र की तली में भयंकर आक्टोपस से जूझा और अंततः मत्स्य कन्या ने उस की जान बचाई. एक तांत्रिक का चेला बना तो उसे भूतों ने सताना शुरू कर दिया. वह हमेशा अपनी विशेष भचकती चाल से चला करता था. वजह थी यह कि उस के घुटनों के जोड़ सरके हुए थे और उन्हें ठीक करना बड़े से बड़े सर्जन के भी बूते की बात नहीं थी.

हर कार्यक्रम के बाद सामी फुदक कर मेरे बूट पर खड़ा हो जाता और हाथ हिला कर दर्शकों के बीच बैठे बच्चों का अभिवादन करता. बच्चे भी प्रसन्नता से उछल उछल कर हाथ हिलाते. थिएटर से बाहर निकलते समय बच्चे उदास उदास लगते—पता नहीं सामी से फिर कब मुलाकात होगी.

उन दिनों हम आस्ट्रेलिया के तमाम देहाती इलाक़ों का भ्रमण कर रहे थे. सामी और दूसरी कठपुतलियों को धूल धक्कड़ से बचाने के लिए मैं उन्हें सूती थैलों में बंद कर के रखा करता. थैलों के चुन्नटदार मुंह डोर खींच कर बांध दिए जाते.

कड़कड़ाती सर्दी के दिन थे. एक तिपहरिया की बात है. मैं पश्चिम विक्टोरिया के नगर हैमिलटन में कार्यक्रम दिखाने के बाद सामी को थैले में रखने ही वाला था कि बारह वर्ष की एक गुड़िया सी बच्ची अकेली ही मंच के पीछे

---

* पिनाशियो : इटली का एक प्रसिद्ध कठपुतली पात्र.

आ पहुंची : वह बत्तियों और दृश्यों के बीच से कुछ झिझकती सी क़दम रखती मेरे पास आ खड़ी हुई.

"इसे ठंड लग जाएगी," उस ने सामी की ओर संकेत करते हुए कहा. "यह थैला भी तो बड़ा झीना है."

मैं ने उस की भूरी चिंतातुर आंखों की ओर देखते हुए कहा, "लेकिन ट्रक अंदर से काफ़ी गरम है. वहां और भी बहुत सी कठपुतलियां हैं."

मैं थैले में सामी के पांव भर डाल पाया था कि "ज़रा रुको!" लड़की कातर हो कर बोल

पड़ी. उस ने एक हाथ अब तक पीठ के पीछे छिपा रखा था. अब उसे बढ़ा कर मेरी हथेली पर कुछ रखती हुई बोली, "यह सामी के लिए है. मैं ने इसे स्वयं बुना है." वह बड़ी ख़ूबसूरती से तह किया गया एक छोटा सा स्वेटर था. मैं ने उपहार खोल कर देखा—सीने पर नीले धागे से कढ़ाई कर के नन्हा सा 'एस' अंकित किया गया था—सामी के नाम का पहला अक्षर.

"अब उसे सर्दी नहीं लगेगी." उस नन्ही सी बिटिया ने कहा.

"धन्यवाद," मैं ने कहा. "तुम्हारा नाम क्या है, बेटी?" लेकिन तब तक वह जा चुकी थी. मंच की बत्तियों और दृश्यों के बीच भागती, स्टेज पर पड़े काठ कबाड़ को फलांगती वह परदे के पीछे पहुंच कर आंखों से ओझल हो गई.

उसी रात होटल के कमरे में मैं ने सामी को हरकत देने के लिए जुड़े धागों को हटा कर उसे स्वेटर पहना दिया. बढ़िया क़िस्म की अंगोरा ऊन का बुना हुआ पूरी बांहों वाला स्वेटर था जो सामी की बड़ी बड़ी बाज़ुओं पर फ़िट आ गया.

अगले ही साल सामी ने अपने अभिनय से अवकाश ले लिया. कुछ दिनों के लिए मेरे मन में आस्ट्रेलिया के विशेष जीव जंतुओं जैसे आस्ट्रेलियाई रीछ-कोआला और वांबाट, पोसुम तथा कंगारुओं से प्रेरणा ले कर नए ढंग की कठपुतलियां बनाने की आकांक्षा जाग उठी थी. परिणामस्वरूप रेत की पहाड़ियों में रहने वाले छोटे क़द के टिनटूकी लोगों की सृष्टि हुई. इन्हें इतनी ज़बरदस्त सफलता मिली कि हमारा ग्रुप, जो मूलतः छोटा सा घुमक्कड़ी दल था, देखते ही देखते अंगरेजी भाषी क्षेत्र में नाचने गाने वाली कठपुतलियों की सब से बड़ी कंपनी बन गया. इसे राष्ट्र मंडल कार्यालय की ओर से कई देशों में भेजा गया. विदेश विभाग की ओर से इस ने समुद्र पार के देशों में भी जा कर कार्यक्रम प्रस्तुत किए. इन यात्राओं में सामी भी साथ रहा, लेकिन बस, कंपनी के प्रतीक के रूप में. थैले में बंद सामी स्पेयर पार्ट्स वाले बक्से के एक कोने में पड़ा रहता. इन २० वर्षों में उसे शायद ही कभी खोला गया हो.

इन वर्षों के दौरान अपने दर्शकों से एक कठपुतली कलाकार के रूप में मेरा संपर्क क्षीण होता चला गया. मैं प्रशासन के चक्कर में सरकारी सहायता प्राप्त थिएटर की राजनीति में ज़्यादा व्यस्त रहने लगा. रात दिन इसी परेशानी से जूझता रहता कि किसी तरह कंपनी के कर्मचारियों में एका रहे और वे साल भर काम पर बने रहें.

अब मुझे न तो अपनी नन्ही कठपुतलियों के करिश्मे दिखाने का मौक़ा मिलता, न अंधेरे हाल में बैठे बच्चों के उत्साह और फुलझड़ियों की तरह बिखरती हंसी में भागीदार बनने का. आख़िर मैं ने भविष्य में टिनटूकी शो न देने की ठान ली और दोबारा अपनी उसी पुरानी दुनिया में लौट जाने का निश्चय कर लिया—जहां मैं था अकेला कठपुतलियों का नाच दिखाने वाला और मेरी हमदम थीं गिनती की कुछ कठपुतलियां.

लंबे अरसे के बाद सामी को फिर थैले से निकाला गया. उस पर दोबारा रंग किया गया. नोक पलक संवारी गई. और एक बार फिर हमने हैमिलटन में कठपुतली का नाच दिखाया. और उस रोज़ मैं फिर शो के बाद सामी को सूती थैले में रख रहा था कि पीछे से किसी की आवाज़ आई. "इतनी मुद्दत के बाद भी इस पर उम्र का कोई असर नहीं हुआ."

"कठपुतलियां कभी बूढ़ी नहीं होतीं." मैं ने मुड़ कर पीछे देखा. सामने एक औरत खड़ी थी. उम्र तीस से कुछ ऊपर ही होगी, लेकिन बालों में चांदी के तार झलकने लगे थे. वह दस ग्यारह साल की एक सुंदर सी बच्ची का हाथ थामे थी.

औरत मुसकराई, "आप मुझे नहीं पहचानेंगे." वह बोली. फिर बेटी की ओर देखने लगी. "आप ने मुझे एक ऐसी अनमोल निधि दी थी, जिसे मैं ने हमेशा संजोए रखा. मेरी ज़िंदगी ऊबड़ खाबड़ रही...." वह अटकी. फिर दोबारा मुसकरा दी. कठपुतली की ओर ताकती हुई बोली, "घोर दुःख के दिनों में भी मैं सामी को भूली नहीं और कोई न कोई कहानी बुन कर अपनी बेटी को सुनाती रही." फिर वह बेटी से बोली, "यही है वह सामी"

वह कुछ देर तक सामी के सिर पर थपकियां देती रही. फिर उस की उंगलियां सामी के चेहरे और गले से फिसलती हुई पुराने बदरंग स्वेटर पर आ कर रुक गईं. आंखों में आंसू छलछला आए और तब मुझे सहसा ही सब कुछ याद आ गया.

"मेरा ख़याल है, आप को अब भी इस से इतना ही स्नेह होगा, जितना मुझे है." उस ने रुंधे गले से कहा.

"हां, उतना ही. एकदम उतना ही." मैं ने उत्तर दिया.

मैं ने झुक कर बच्ची को गोद में उठा लिया. सामी के साथ ही उसे बांहों में थामे थामे मैं ने उसे एक और नन्ही सी बच्ची की सच्ची कहानी सुनाई, जिस ने अरसा पहले एक कठपुतली के लिए स्वेटर बुन कर उस के काठ से बने तन मन को राहत पहुंचाई थी.

## बड़ा दिन बड़ी बात

बड़े दिन के लिए भी मुझे फ्रांसीसी नाम वाली चीज़ ही पसंद है. इसे त्रेव व दिअ कहते हैं. त्रेव का अर्थ है युद्ध विराम, मध्यांतर, या विश्रांति. अतः त्रेव व दिअ का अर्थ हुआ—भगवान के नाम पर युद्ध विराम. यूरोपीय मध्यकालीन अंधे युग का धर्मसंघ भी युद्धरत सामंतों से इस की स्वीकृति ले लिया करता था. वे एक दूसरे का गला काटना, लूटना या उजाड़ना बंद नहीं भी करते थे तो कम से कम रविवार या साल के तीज त्योहार आदि पर ही ऐसी हरकतों से बाज़ आते थे.

क्या ही अच्छा हो कि क्रिसमस के दिन हम सब जगें तो देखें कि कम से कम उन २४ घंटों में हमारी सीमाओं पर कोई गोली नहीं चली, जेलों में किसी को यातनाएं नहीं दी जा रहीं, या कि हर कोई अपने वचन का पालन कर रहा है, लोग एक दूसरे से प्रेम करते हैं, और स्मृति के आकाश से परमाणु बमों के काले साए छंट गए हैं.

यह एक सपना है—यह मैं जानता हूं. फिर भी मैं एक छोटा सा युद्ध विराम चाहूंगा—ऐसा युद्ध विराम जो मेरे आंगन से शुरू हो और पड़ोसी के घर से होता हुआ अगले घर की चहारदीवारी लांघ जाए. कैसे भी मिले, कैसी भी हालत में मिले, क्रिसमस का यही उपहार मुझे वरण्य है. और मैं इसे निःशुल्क लुटाता भी फिरूंगा.

—मौरिस वेस्ट, 'हाई लाइफ़', इंगलैंड

एक कर्मयोगी के विचार:

# मैं रिटायर क्यों नहीं होता?

## क्योंकि काम ही जीवन की प्रतिष्ठा और सुंदरता है

हेनरी ली

वर्षों तक यह बात मेरी खिन्नता का कारण बनी रही कि सप्ताह के सातों दिन मुझे काम की चक्की में पिसना पड़ता है. अपने तीन बच्चों के लालन पालन एवं शिक्षा दीक्षा की चिंता में मैं सैकड़ों लेख और किताबें लिखने में निरंतर व्यस्त रहता था.

फिर सहसा मेरे बाल बच्चे अपने पैरों खड़े हो गए. ज़िम्मेदारियों का बोझ हलका हो गया और मैं रिटायर हो गया. अब मैं आज़ाद था, देर तक सो सकता था और जहां चाहे जा सकता था.

लेकिन सिलसिला ऐसा नहीं चला. हर रोज़ सुबह मैं बिना किसी कार्यक्रम के उठता. गोल्फ़ खेलने चला जाता, घर के छोटे मोटे कामों में हाथ बंटा देता या ख़रीद फ़रोख़्त करने बाज़ार चला जाता. सोचता—कोई शौक़, कोई हाबी अपना लें. लेकिन कुछ लोग ऐसे कामों के लिए नहीं बने होते.

फल स्वरूप मेरे बदन में यहां वहां दर्द रहने लगा. सपनों तक में गुस्सा झलकने लगा. सोते सोते मैं जाग उठता. मुट्ठियां बंद मिलतीं. लगा मानसिक और शारीरिक रूप से चुक गया हूं मैं.

अंततः स्विट्ज़रलैंड के कवि और दार्शनिक हानरी फ्रेडरिक आम्येल के सामान्य किंतु अर्थपूर्ण कथन की सार्थकता मुखरित हो उठी: "काम ही जीवन का स्वाद है."

सो मैं फिर से काम में जुट गया. धीरे धीरे बदन में रहने वाला दर्द ग़ायब हो गया. सपने मधुर हो गए. अब सत्तर पार कर के भी मैं काम की बदौलत अपने जीवन में उद्देश्य पाता हूं और अपने ऊपर गर्व होता है मुझे.

मेरा अनुभव है कि कड़ा परिश्रम करने वाले लोग ही हमेशा सुखी और प्रसन्न दिखाई देते हैं. अमरीकी गृह युद्ध (१८६१-६५) के बाद मेरे पिता ने कारतूस बनाने वाले एक कारख़ाने में काम शुरू किया. वहां हफ़्ते में छः दिन उन्हें दस दस, बारह बारह घंटे काम करना पड़ता था. किशोर थे वे उस समय. बाद में उन्होंने अपना व्यापार शुरू किया. अपना व्यापार होते हुए भी वे रोज़ १२ घंटे

काम करते. परिणाम स्वरूप वे समृद्ध हो गए. सार्वजनिक कार्यों में हिस्सा लेने के लिए भी वे समय निकालते. स्थानीय और राज्य सरकार में भी अच्छी ख़ासी सफलता प्राप्त कर रखी थी उन्हों ने.

१९वीं सदी के प्रारंभिक दिनों में मंदी के कारण मेरे पिता का सारा कारोबार चौपट हो

हेनली ली काम करते हुए

गया और ज़िंदगी भर की मेहनत मिट्टी में मिल गई. मेरे पिता के पास एक ही विकल्प था और उन्हों ने फिर से काम शुरू कर दिया.

जब उन का जीवन दर्शन मेरी समझ में आना शुरू हुआ, उस समय वे ८० के पेटे में थे. वे मुकदमों में जूरी का सदस्य बन कर, प्रोबेट अदालत की तरफ़ से किसी जायदाद का काम देख कर और लोगों के ज़मीन जायदाद के पेचीदा मामले सुलझा कर थोड़े बहुत पैसे बना रहे थे. उन बुरे दिनों में तरह तरह के काम कर वे किसी तरह अपने परिवार का पेट पाल रहे थे. फिर भी न तो वे कभी चिंतित दिखाई दिए और न कभी उन्हों ने शिकायत की. सुबह ७.३० बजे नाश्ते के समय से ले कर रात १० बजे सोने के समय तक मेरे पिता बराबर किसी न किसी काम में लगे रहते.

उन की मृत्यु के बाद कोयले और किराने के वे बिल देख कर, जो काफ़ी समय से अदा नहीं किए जा सके थे, मुझे बड़ा आघात पहुंचा. तब मुझे मालूम हुआ कि वे कितनी मुश्किल से घर का ख़र्च चला रहे थे. उन के दृढ़ निश्चय पर मुझे आश्चर्य हुआ और साथ ही उन पर तरस भी आया क्योंकि न तो उन्हें पेंशन मिलती थी और न किसी और तरह की सरकारी सहायता. बुढ़ापे में आई मंदी का वे एक ही ढंग से सामना कर सकते थे और वह था कड़ा परिश्रम.

आज मुझे उन पर तरस नहीं आता. मैं जानता हूं कि ८५ साल की उम्र तक उन के सुखी और सक्रिय रहने का एक ही कारण था और वह था लगातार काम.

मैं जानता हूं कि ये शब्द उन लोगों को थोथे लगेंगे जो वर्तमान के आर्थिक संकट के कारण हाथ पर हाथ धरे बैठे रहने को मजबूर हैं. मुझे उन से पूरी सहानुभूति है क्योंकि बेरोज़गारी आर्थिक संकट से भी अधिक भयंकर होती है. यह आत्मा का सारा रस निचोड़ लेती है.

मैं भी एक बार बेरोज़गार हुआ था. एक रोज़ सुबह मेरे अफ़सर ने मुझे आश्वासन दिया, "अगर तुम इसी तरह कड़ी मेहनत करते रहे तो एक वर्ष बाद मैं तुम्हारा वेतन दोगुना कर दूंगा." ठीक लंच के बाद मेरे अफ़सर ने मुझे फिर अपने कमरे में अचानक बुलाया.

"तुम पत्रकार हो," उन्हों ने दो टूक कहा, "सो साफ़ साफ़ बता रहा हूं. इस महीने

के अंत तक हम अपनी दुकान बढ़ा रहे हैं. न जाने क्यों, पर हमारा धंधा एकदम चौपट हो गया है."

सहसा मैं आर्थिक रूप से मृतप्राय हो गया. लगा, जैसे किसी ने मेरे जीवन का उद्देश्य और मेरी आत्म प्रतिष्ठा छीन ली हो. पुराने मित्र के देहांत जैसा आघात और शोक हुआ मुझे. इस से भी बुरी बात यह हुई कि मैं दोस्तों से कतराने लगा. कहीं वे यह न पूछ बैठें, "काम धाम कैसा चल रहा है?"

अगर बेरोज़गारी की स्थिति मुझ अकेले के लिए पीड़ाप्रद हो सकती है तो ज़रा उन नौजवानों और माता पिताओं की हालत का अंदाज़ा लगाइए जिन्हें अपने परिवार का ख़र्च चलाना पड़ता हैं. काम ही जीवन को प्रतिष्ठा और उद्देश्य प्रदान करता है. काम के अभाव में हम कुछ नहीं कर रहते.

अगर इस लोक से परे कोई नर्क है तो वहां मनुष्य को सब से बड़ा दंड यही दिया जा सकता है कि उसे निठल्ला बिठा दिया जाए. सुबह सवेरे जब उस अग्निमय लोक में वह उठे तो न उस के पास कोई काम हो, न कहीं आना जाना हो और न रक्तचाप बढ़ाने के लिए काम की कोई चुनौती हो.

इस से अधिक कठोर दंड की मैं कल्पना भी नहीं कर सकता.



## सारांश

वे दोनों न्यू यार्क की उस भूगर्भीय रेलगाड़ी में एक दूसरे का हाथ थामे बैठे थे. चेहरे पर बुढ़ापे की गरिमापूर्ण लकीरें साफ़ झलक रही थीं और सन के से सफ़ेद बालों से भरा उन का माथा एक दूसरे से सटा था: बुज़ुर्ग लगभग ७० के रहे होंगे और महिला उन से एक आध बरस कम. स्पष्ट था कि एक दूसरे को बहुत प्यार करते थे वे दोनों. वृद्ध ने वृद्धा का चेहरा अपने दोनों हाथों में थाम लिया और उन में था सुरक्षा का एक आश्वासन. "तुम आख़िर घबरा क्यों रही हो?" वृद्ध ने पूछा.

वृद्धा इस पर दूसरी ओर देखने लगी. लंबी चुप्पी के बाद बोली, "हमें कुछ देर और इंतज़ार करना चाहिए था."

"आख़िर क्यों?" पुरुष ने कहा, "किस लिए?" उस की निगाहें वृद्धा के चेहरे पर टिकी थीं और उधर वृद्धा थी कि उस से मुंह चुरा रही थी. वह अपना हाथ छुड़ा कर अनजाने ही अपने बैग को भींचने खिंचने लगी.

"मान लो, मैं अच्छी नहीं लगी तो?" वह बोली.

"क्यों भला?"

"पसंद आने, न आने का भी कोई कारण होता है?" क्षण भर बाद वह फिर बोली, "हमें थोड़ा और रुकना चाहिए था."

पुरुष ने सिर हिलाया. वह धैर्य खो चुका था. "देखो," वह बोला. उस की आवाज़ गाड़ी के शोर से ऊंची थी, "वे लोग शादी करना चाहेंगे तो मुझ से पूछेंगे क्या? और अगर पूछ भी लें तो मेरी सुनेंगे क्या? फिर मैं ही क्यों आख़िर..."

—मारग्रेट विंटर, 'टाइम्स', न्यू यार्क

**आइए साइबेरिया के उस विलक्षण भूखंड शीत ध्रुव की सैर करें जहां उत्तरी ध्रुव से भी ज़्यादा ठंड पड़ती है, दूध की सिल्लियां बिकती हैं, और जून में महीने भर चौबीसों घंटे दिन रहता है**

**रुडाल्फ़ केलमिंस्की**

"आदमी अपने आप को किसी भी स्थिति के अनुकूल बना सकता है," इवान देनिलोविच चेरोव ने किंचित क्षुब्ध स्वर में कहा, सोवियत साइबेरिया के याकुत्स्क शहर का यह ४० वर्षीय महापौर विदेशी पत्रकारों से संपर्क और बातचीत में कुशल है. उसे पता है कि लोग घूम फिर कर आख़िर मौसम की बात करने लगते हैं, जबकि वह आर्थिक विकास, आवास इकाइयों और नए स्कूलों के विषय में बात करना चाहता है. साइबेरिया की मेरी यात्रा के दौरान सरकारी संपर्क सूत्र के रूप में सब से पहले चेरोव से ही मेरी मुलाकात हुई. मेरी मंज़िल थी शीत ध्रुव, जिसे रूसी में 'पोलिअस खोलोदा' (ठंड की धुरी) कहा जाता है.

स्वायत्त शासी सोवियत समाजवादी गणराज्य याकूत का विशाल भूखंड याकूतिया सोवियत संघ में ओखोत्स्क सागर के उत्तर पूर्व में फैला है. विश्व भर के आबाद क्षेत्रों में यह सब से सर्द माना जाता है. खुले में पड़ी मशीनों का स्टील भी ठंड से कच्चा पड़ जाता है और बर्फ़ की तरह आसानी से टूट जाता है.

ट्रकों के टायर लीक से रगड़ खा कर फट सकते हैं. यहां हर आदमी चमड़े या नमदे के बने जूते पहनता है, क्योंकि मसालों से बने कृत्रिम तल्ले वाले जूते १०-१५ मिनट बाद ही चटख जाते हैं. याकूतिया ही वह स्थान है, जहां आधुनिक मानव ने बड़ी संख्या में पुराकाल के जीव जंतुओं के पार्थिव शरीर पूर्णतः सुरिक्षत पाए हैं. पहली बार १७३७ में यहां कुछ प्रागैतिहासिक जंतुओं के नमूने प्राप्त हुए जो संभवतः २ लाख वर्ष से बर्फ़ की ऐसी दरारों में सुरक्षित दबे पड़े थे, जो विश्व की सब से ठंडी करने वाली स्थिति से भी अधिक ठंडी थीं.

पृथ्वी पर न्यूनतम प्राकृतिक तापमान दक्षिण ध्रुव स्थित सोवियत विज्ञान केंद्र वोस्तोक में २४ अगस्त १९६० को रिकार्ड किया गया था: –८८.३ डिगरी* सेल्शियस अथवा –१२६.९ डिगरी फ़ारेनहाइट. लेकिन आबादियों में संसार का सब से सर्द स्थान उत्तरपूर्वी याकूतिया में सुमद्र तल से ७०० मीटर ऊपर पर्वत की घाटी में स्थित एक गांव है – ओइमियाकोन. इस गांव के कोई ६०० निवासी पूरे साल भर हर मौसम में यहीं रहना पसंद करते हैं. यहां के मौसम विभाग ने जनवरी १९५९ में –७१ डिगरी सेल्शियस तापमान रिकार्ड किया था.

यहां बसने के लिए लोगों को सरकार की ओर से इतने प्रोत्साहन मिलते हैं कि सोवियत निवासी साइबेरिया की तीखी ठंड को कम कर के बताते हैं. उन के लिए साइबेरिया में दबी संपदा का ज़्यादा महत्व है. इस लिहाज़ से महापौर चेरोव, बस, सरकारी दृष्टिकोण की ही हिमायत कर रहा था. फिर भी उस की बात में वज़न था. साइबेरिया वासी सचमुच वहां की ठंड को उपेक्षणीय बल्कि एक हद तक मित्र समझते हैं.

मध्य जनवरी के एक ख़ुशगवार दिन मैं मास्को से अचानक ही निकल पड़ा और इर्कुत्स्क में कुछ देर रुकने के बाद रात के दो बजते बजते याकुत्स्क पहुंच गया. उस समय वहां का तापमान –३४ डिगरी सेल्शियस था. एक प्रेस एजेंसी का फ़ोटोग्राफ़र विक्तोर याकोवलेव हरे रंग की वोल्गा टैक्सी ले कर मुझे लेने के लिए आया था. सड़क पर वोल्गा हिचकोले खाती बढ़ी तो उस का ढांचा चरमराने खड़खड़ाने लगा. इस के जोड़ ठिठुर कर जम से गए थे और ग्रीज़ की चिकनाई से यदा कदा सक्रिय होते लगते थे. टैक्सी के अंदर लगा एक अतिरिक्त हीटर ड्राइवर और मेरे बीच गर्म हवा फेंक रहा था. विंड शील्ड दोहरा था – एक शीशे पर दूसरे शीशे को किसी ऐसी चीज़ से अनगढ़ ढंग से चिपका दिया गया था जो बच्चों वाली माडलिंग क्ले लगती थी. दुहरे शीशे से सामने की चीज़ें नज़र आ रही थीं, लेकिन बाकी खिड़कियों के शीशों पर तुषार जमा था. ड्राइवर को पीछे का दृश्य देखना होता तो वह दरवाज़ा खोल कर गरदन लंबी कर के पीछे झांकता. मैं मास्को में दुहरे शीशे की प्रणाली से बख़ूबी परिचित हो चुका था, जो वहां की इमारतों में दरवाज़ों खिड़कियों पर प्रायः लगे नज़र आते हैं. याकुत्स्क में तो खिड़कियों और दरवाज़ों पर लगे तिहरे चौहरे शीशे भी देखने को मिले.

**शाश्वत हिम.** महापौर चेरोव ने बताया कि इस क्षेत्र की मुख्य समस्या शाश्वत हिम है जिस से साइबेरिया की अधिकांश धरती हमेशा ढकी रहती है. हिमाच्छादित धरती पर खेती और भवन निर्माण का काम बड़ा ही

* इस लेख में अधिकतम तापमान हिमीकरण बिंदु से कम है. पाठक अपने नगर के वर्तमान तापमान से मिला कर इस स्थान की सर्दी की कल्पना करें.
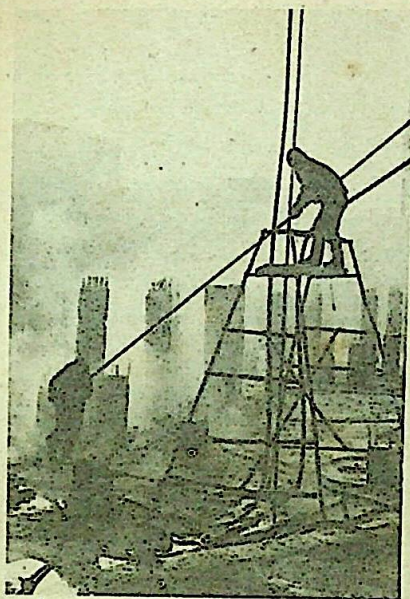
*याकुत्स्क में निर्माण करते समय कंकरीट के स्तंभ जमाने से पहले शाश्वत हिम पिघलाते हैं*

जटिल और जोखिम का है. ज़मीन की ऊपरी — एक से दो मीटर मोटी — तथाकथित सक्रिय परत गरमियों में पिघलने लगती है और सर्दियों में जमने लगती है. यह परंपरागत ढर्रे से निर्मित मकानों के साथ बड़ा ख़तरनाक खिलवाड़ करती है. सो साइबेरिया में हर जगह काठ के मकान ही नज़र आते हैं जो विचित्र कोणों पर झुके और धरती में आधा धंसे होते हैं, और सक्रिय परत पर 'तैरते' से रहते हैं. याकुत्स्क में बने तमाम नए मकान ज़मीन की स्थिर परत में गहराई तक गड़े खंभों पर निर्मित किए जाते हैं. भवन और ज़मीन के बीच लगभग एक मीटर स्थान ख़ाली छोड़ दिया जाता है ताकि मकान की गरमी सर्दियों में सक्रिय परत को पिघला न सके.

पानी का बहाव बनाए रखना यहां अपने आप में एक पराक्रम की ब़ात है. याकूतिया में पानी के अधिकतर पाइपों को ज़मीन से कुछ ऊपर बिछाया जाता है. इस का सीधा सा कारण यही है कि सक्रिय परत के जमने, पिघलने और हिलने से पाइप टूट जाते हैं. ज़मीन के ऊपर बिछी पाइपलाइन की मरम्मत करने में बड़ी सुविधा होती है. लेकिन खुले में कड़ाके की ठंड से इन की सुरक्षा का कोई उपाय नहीं. अतः अंदर बहता पानी जम जाता है. इसी कारण इस में बहते पानी को थोड़े अंतराल से बार बार गरम किया जाता रहता है. पीने का पानी इस पाइपलाइन द्वारा लेना नामक नदी की तली से उठाया जाता है. नदी की सतह पर चार से ले कर छः मीटर तक मोटी बर्फ़ की परत जमी होती है. अनेक सोवियत नगरों में गरम पानी और नगर निगम द्वारा मकानों को गरम रखने की व्यवस्था गैस से चलने वाले भाप के प्लांट से की जाती है.

पर्यावरण में शाश्वत हिम के हस्तक्षेप से संभावित ख़तरों से आशंकित रूस को द्वितीय विश्व युद्ध से कुछ ही पहले याकुत्स्क में शाश्वत हिम संस्थान की स्थापना करनी पडी. पर्यटकों का मुख्य आकर्षण केंद्र इस की इमारत के नीचे स्थित है—शाश्वत हिम के अंतस्तल तक घंसा एक कूपक (शाफ़्ट), जिसे अनेक रोधी द्वारों की सहायता से इतर वातावरण से पूरी तरह मुक्त रखा जाता है. इस विशेष कूपक से शाश्वत हिम का सीधे निरीक्षण परीक्षण किया जा सकता है. कछारी रेत में फंसे बर्फ़ के लाखों रवे टंगस्टन लैंप की रोशनी में चमचमा उठते हैं. हवा एकदम स्थिर और नीरव है — साथ ही गरम भी — हां, अपेक्षाकृत गरम ही कहें, पर है गरम. क्षेत्रीय मौसम चाहे कैसा भी हो,

शाश्वत हिम के कारण तापमान भी शाश्वत रहता है. कूपक मात्र –३१.५ डिगरी सेल्शियस तापमान पर संतुलित रहता है.

**कुहासा ही कुहासा.** अगले दिन सुबह मैं याकुत्स्क से ८०० किलोमीटर दूर उस्त-नेरा स्थित सोने की खदान के लिए रवाना हुआ. उस्त-नेरा और ओइमियाकोन एक लंबी घाटी में स्थित हैं जिसे ओइमियाकोन हालो कहते हैं. दोनों केंद्रों से गरम हवा का फ़ौवारा ऊपर की ओर उठता रहता है, जबकि भारी ठंडी हवा पहाड़ी के कगारों से फिसलती हुई नीचे पहुंच कर तलहटी में जमा हो जाती है. मौसम विशेषज्ञ इस प्रक्रिया को 'निषेधात्मक विकिरण संतुलन' कहते हैं: सूर्य से प्राप्त होने वाली ऊर्जा पृथ्वी से विकीर्ण की गई ऊर्जा के मुक़ाबले में कम होती है. –४५ डिगरी सेल्शियस से कम तापमान के कारण समूचा क्षेत्र हमेशा कुहासे से आच्छन्न रहता है.

**चौबीस घंटे का दिन!** लेकिन प्रकृति अपने अभाव की क्षतिपूर्ति कर लेती है. जून के महीने में उस्त-नेरा और ओइमियाकोन में २४ घंटे दिन का उजाला रहता है. साइबेरिया के जीवन को यथासंभव आकर्षक और आरामदेह बनाने की सरकारी नीति को साकार किया गया उपग्रह आर्बिटा द्वारा जिस के माध्यम से रंगीन टेलीविज़न के तीन चैनल यहां शुरू किए जा सके, तथा रेडियो टेलीफ़ोन प्रणाली द्वारा और हवाई मार्ग से नवीन उत्पादनों को यहां पहुंचा कर.

महापौर इगोर अलेक्सीव दिमित्रीव ने बताया कि उस्त-नेरा की जनसंख्या १०,००० से ज़्यादा है. यह क़स्बा अब नगर का रूप लेता जा रहा है और इसे भी अब महानगर याकुत्सक की सी अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है. यहां के नागरिक पक्की सड़कों, ताप प्रणाली और ताज़ा पानी जैसी सुविधाओं की आशा करते हैं, लेकिन इन सुविधाओं की उपलब्धि आसानी से नहीं हो पाई. पीने का पानी इंदीगिरका नदी की तली से पंप कर के लाया जाता है और इसे भी, प्रवाह बनाए रखने के लिए रास्ते में उसी तरह बार बार गरम करना पड़ता है, जैसे याकुत्स्क में. ताप केंद्र के बायलर के लिए कोयला १०४५ किलोमीटर दूर ओखोत्स्क समुद्र के तट पर स्थित बंदरगाह मगादान से ट्रकों द्वारा ढो कर लाना पड़ता है.
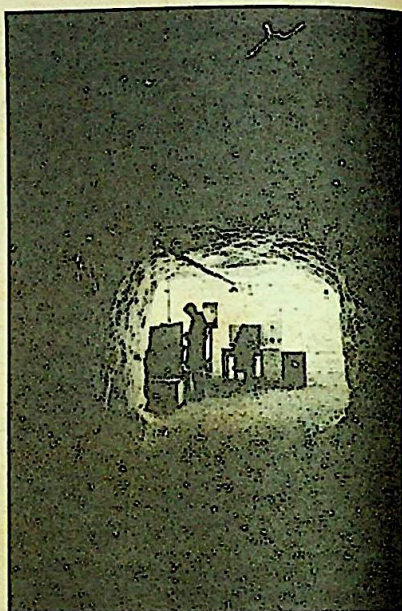
*याकुत्स्क के शाश्वत हिम संस्थान में भूगर्भ स्थित सुरंग*

मागादांस्की त्रासा नामक कच्ची सड़क उत्तर पूर्व सोवियत रूस का गौरव है. यह सड़क एक ओर तो उस्त-नेरा के लिए जीवन रेखा है और दूसरी ओर कच्चे सोने की खदानों

तक आने जाने वाले ट्रकों का मार्ग है. वास्तव में यह उसी कोलीमा स्वर्ण खदान के मार्ग का विस्तार है जो स्तालिनवादी भीषण श्रमिक शिविरों के लिए कुख्यात है. कहा जाता है कि मगादान का आरंभ भी इसी तरह के एक शिविर के रूप में हुआ था.

महापौर दिमित्रीव ने बताया कि तापमान −५५ डिगरी सेल्शियस से नीचे हो तो ट्रकों के दल माल ढोते हैं. लेकिन सिद्धांत रूप से खुले स्थानों में काम करने वाले श्रमिकों के लिए सोवियत रूस का यह राष्ट्रव्यापी नियम अव्यावहारिक है कि अगर तापमान −५० डिगरी सेलिशयस या इस से कम हो तो मज़दूर घरों में ही रहें: उस्त-नेरा में तो सर्दियों में तापमान का औसत है −५३.६ डिगरी सेल्शियस. इतनी ठंड में तो बाहर से आने वालों को कुछ ही पलों में अपनी नाक के लिए ख़तरा महसूस होने लगता है. पहली सांस के साथ ही नाक के अंदर का हर बाल जम कर अकड़ जाता है और हर सांस के साथ उस का हिलना झुकना महसूस होने लगता है. स्वभावत: आप को अपनी सांस 'दिखाई' पड़ने लगती है. और सब से विलक्षण बात तो यह है कि आप अपनी सांस को 'सुन' भी सकते हैं − बर्फ़ बनते उस से आवाज़ जो आती है.

मुझे यह देख कर अचंभा हुआ कि शहर में चलने वाले हलके वाहनों में कोई हिमीकरण रोधी साधन नहीं होता. वस्तुत: यहां यह नियम है कि वाहनों के इंजन हमेशा चालू रखे जाएं, इस लिए उन्हें हिमीकरण रोधी साधन की ज़रूरत नहीं पड़ती. वाहन को इस्तेमाल न करना हो तो उसे गरम तापमान वाले गराज में खड़ा कर दिया जाता है.

**रात भर आग, सुबह क़ब्र.** मेरे मन में एक वीभत्स सी बात उठी − ये लोग मृतकों को कैसे दफ़नाते होंगे. "आग जला कर!" महापौर दिमित्रीव ने शांत स्वर में उत्तर दिया. "रात भर आग जलाए रखते हैं. सुबह क़ब्र खोदते हैं." मुझे याद आया कि याकुत्स्क में महापौर चेरोव ने भी सरसरी तौर पर इस का ज़िक्र किया था कि याकूतिया में दफ़न शव भी बर्फ़ में दबे पुराकाल के महाकाय जंतुओं के अवशेषों की तरह पूर्णत: सुरक्षित रहते हैं.

उस रात एक स्थानीय कैफ़े में हमें विशुद्ध साइबेरियाई भोजन खाने को मिला − स्त्रोगानीना. यह सीधे इंदीगिरका नदी से लाई गई हिमीभूत मछली थी. ठंडी हवा के संपर्क में आते ही मछली जम कर कड़ी हो जाती है. उन्हें किसी तरह पकाने के बजाए बावर्ची ने उसे ऊपर से साफ़ कर के तेज़ छुरी से लंबे लंबे बारीक क़तले काट दिए और वैसी ही श्वेत तुषार कणों में लिपटी मछली खाने के लिए परोस दी. खाने में तो उस का ज़ायक़ा नहीं के बराबर था, हां, चबाने में वह क़ुलफ़ी की तरह कुरकुरी थी. उस्त-नेरा के बच्चे पूरी की पूरी स्त्रोगानीना मछली को सींक लगी आइसक्रीम की तरह मज़े ले ले कर खाते हैं.

**दूध की सिल्लियां.** अगली सुबह विक्तोर और मैं ओइमियाकोन पहुंचे जहां का तापमान −५१.५ डिगरी सेल्शियस था. हम जमे हुए, वृक्ष रहित, मैदान को पार कर के मौसम कार्यालय पहुंचे जहां −७१ डिगरी सेल्शियस का ऐतिहासिक तापमान रिकार्ड किया गया था. यह एक आरामदेह छोटी सी झोपड़ी थी− बेशक काठ की बनी−जिस के यंत्र बाहर रखे शटर वाले बक्सों में लगे थे, जो देखने में परिंदों के बड़े बड़े दड़बों जैसे थे.

हम किराना की दुकान पर गए. वहां दूध सिल्लियों की आकृति में बिक रहा था−

२.७० रूबल (लगभग ३८ रुपए) में सात लिटर दूध. लगभग आयातकार बसा यह नगर काठ के एक मंज़िला मकानों का समूह है. सब से बड़ी इमारत स्कूल की है. पूरा ओइमियाकोन क़रीब क़रीब याकूतों की ही बस्ती है. इस लिए यहां प्राथमिक शिक्षा उन की मातृभाषा में ही दी जाती है. रूसी भाषा यहां उच्चतर माध्यमिक स्कूल के पहले वर्ष से दूसरी भाषा के रूप में पढ़ाई जाती है.

२४ घंटे के अंदर ही मैं इर्कुत्स्क लौट आया. यहां का –३० डिगरी सेल्शियस तापमान बड़ा सुहाना लगा – वसंत जैसा. संभवतः जीवन में पहली बार, और शायद आख़िरी बार भी, मैं ने रूसियों को अनुकंपा भरी दृष्टि से देखा जो 'इतनी सी' ठंड में भी सिकुड़ कर गठरी बने थर थर कांप रहे थे. बाद में मुझे अपने इस घमंड की क़ीमत चुकानी पड़ी – कोई हफ़्ता भर गले की यंत्रणा भुगत कर.

दस दिन बाद मुझे एक नया आंकड़ा देखने को मिल गया, जिस से मुझे गौरव का आधार मिल गया : जिस दिन हम ओइमियाकोन में थे उस दिन उत्तरी ध्रुव का तापमान मात्र -४१ डिगरी सेल्शियस था (ओइमियाकोन के तापमान से कोई १० अंश अधिक गरम). चलो मान लेता हूं कि इस आंकड़े से मुझे जो ख़ुशी मिली वह बचकाना और विवेकशून्य है. लेकिन यह बात मैं कभी भूलने वाला नहीं हूं!

'द अटलांटिक मंथली' (अक्तूबर १९७७), बोस्टन, अमरीका से संक्षिप्त. कापीराइट रुडोल्फ़ केलमिस्की.

फ़ोटो : कापीराइट हावर्ड सोचरेअस वडफ़िन कैंप ऐंड एसोशिएट्स

## विचित्रवीर्य

मैं इटली के नेपल्स नगर की एक टैक्सी में बैठा सफ़र कर रहा हूं. तभी चौराहे पर लगी एक सड़क की बत्ती लाल हो जाती है, परंतु कारें बदस्तूर आगे बढ़ती चली जाती हैं–बेहिचक. मैं जिस टैक्सी में बैठा हूं, वह भी बत्ती की परवाह किए बिना ठाठ से सरसराती चली जा रही है.

मैं अभी यातायात के नियमों की इस भयंकर अवहेलना का अर्थ समझने की कोशिश में ही हूं कि टैक्सी ड्राइवर मेरे विचारों को भांप मेरी ओर मुख़ातिब होता है, "हम नेपल्सवासियों के लिए लाल बत्ती का मतलब रुकना नहीं. यह हमारी मार्ग निर्देशिका है. लगता है जैसे बत्ती कह रही हो, 'प्यारे, मैं लाल ज़रूर हूं, परंतु तुम्हारे जो जी में आए सो करो. जाना चाहते हो, जाओ. हां, ज़रा सावधान रहना. और यदि रुकना चाहते हो, तो मैं क्या कर सकती हूं, पर इस स्थिति में ज़रा ज़्यादा सावधान रहो क्योंकि तुम्हारे पीछे आने वाले तुम से इस हरकत की उम्मीद नहीं रखते. हो सकता है वे तुम से भिड़ जाएं."

"और हरी बत्ती क्या कहती है?" मैं पूछता हूं.

"यह कहती है, 'दोस्त क़ानून के अनुसार तुम्हें आगे बढ़ने का पूरा अधिकार है. परंतु इस पर विश्वास न करना. हमेशा याद रखो कि तुम्हारे दाहिने और बाएं से आने वाली गाड़ियां लाल बत्ती को अनदेखा कर आगे निकलना चाहती हैं. इस लिए, ऐसा करो–पहले दाएं देखो, फिर बाएं, और अगर कोई नज़र न आए तो ठाठ से चले जाओ.'"

"और पीली बत्ती का मतलब?" मैं पूछता हूं.

"ओह उस का, उस का कोई मतलबवतलब नहीं – बस यूं कि शग़ल के लिए लगा रखी है कि ज़रा रौनक़ रहेगी."

–ल्युचियानो द क्रेसेंत्सो, 'ला नेपोली द बेल्लाविस्ता' (मोंदारी, मिलान)

# सिगरेट छोड़ने का आसान तरीक़ा

"कभी कभी मुझे इस बात पर विश्वास नहीं होता था
कि सिगरेट पीने से हृदय रोग हो सकता है,
लेकिन अब वह सब विश्वसनीय लगने लगा है"

**फ्रैंक ए ओस्की, एम डी**
*अध्यक्ष, बाल चिकित्सा विभाग*
*अपस्टेट मेडिकल सेंटर, सिराक्यूज, एन वाई*

मैं ने १९७९ में अपने एक लेख में लिखा था, "मैं अपने स्वास्थ्य की रक्षा के लिए सिगरेट पीता हूं." चूंकि मैं डाक्टर हूं, इस लिए लोग मेरे इस कथन पर चौंके. मेरा तर्क था कि सिगरेट पीने से मुझे खांसी आती है, इस लिए मैं निमोनिए से बचा रहता हूं. इस से मेरे हृदय की धड़कन तेज़ होती है, अतः मुझे इस काम के लिए अतिरिक्त व्यायाम नहीं करना पड़ता. सिगरेट पीने से भूख मरती है. परिणाम स्वरूप मैं मोटा होने से बचा रहता हूं.

लेकिन अब मैं अपने स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए सिगरेट नहीं पीता. मेरा स्वास्थ्य अब इसे बरदाश्त नहीं कर पाता. ५१ साल की उम्र में मुझे दिल का दौरा पड़ा था—क्योंकि विरासत में मिले स्वास्थ्य को अपने हाथों खो चुका था. उच्च रक्तचाप, मधुमेह, हृदय रोग का पारिवारिक इतिहास, कोलेस्टराल का ऊंचा स्तर तथा सिगरेट पीना आदि कम उम्र में दिल का दौरा पड़ने के कारण होते हैं. एक समय था जब इन में से वे सब कारण जिन पर किसी व्यक्ति का अपना नियंत्रण नहीं होता—मेरे साथ थे. मुझे पुरखों या प्रकृति से ऐसा कुछ नहीं मिला था जिस से मुझे दिल की बीमारी हो सके. मैं ने धड़ल्ले से सिगरेट पीना शुरू कर दिया. कैसी अजीब बात है कि जो सबूत सिगरेट पीने को हृदय रोग का कारण बताते थे, उन दिनों मुझे वे सब अविश्वसनीय लगते थे. लेकिन अब वे सब के सब बिलकुल विश्वसनीय लगते हैं.

अब सिगरेट छोड़ने का क्या फ़ायदा? जो लोग पहली बार दिल का दौरा पड़ने के बाद सिगरेट पीना छोड़ देते हैं, उन की ज़िंदगी १० वर्ष और बढ़ जाने की ८० प्रति शत संभावना रहती है और जो नहीं छोड़ते, उन की संभावना ६० प्रतिशत रह जाती है.

सिगरेट पीने वाला होने के नाते मुझे इस बात

पर बहुत गुस्सा आता था कि सिगरेट न पीने वाले हमें हिकारत और उपेक्षा की दृष्टि से देखते हैं. अगर हम न हों तो उन्हें यह कैसे पता चले कि सिगरेट पीना सेहत के लिए नुकसानदेह है? प्रयोग वर्ग का सदस्य होने के नाते समाज को थोड़ा बहुत तो हमारा ऋणी होना चाहिए. गिनी पिग के रूप में मैं ने अपनी भूमिका निभा दी है. अब मैं सिगरेट न पीने वालों के वर्ग में आने को तैयार हूं.

तो क्या अब रात गए सिगरेट की कोई खुली दुकान खोजने का आनंद समाप्त हो जाएगा? क्या अब मैं ऐश ट्रे में सिगरेट के ऐसे बड़े टोटे खोजने के आनंद से वंचित हो जाऊंगा जिन में दो चार दम लगा कर सिगरेट की तलब मिटाई जा सके. इस का उत्तर तो अब समय ही देगा.

क्या सिगरेट छोड़ देना आसान है? बिलकुल. सब से पहले आप अपने को दिल का दौरा पड़ने दें और अपनी वक्ष अस्थि के नीचे सिगरेट पीने से होने वाला दर्द महसूस करें. फिर अस्पताल के हृदय रोग विभाग में दाखिल हो जाएं और नंगे बदन पड़े रहें. अंततः उस विभाग में, जहां सिगरेट पीने की मनाही है, चार दिन तक बिस्तर पर पड़े रहें.

मेरी सिगरेट पीने की लत इसी तरह छूटी थी. आप भी यह प्रयोग कर देखिए. शायद काम आ जाए.

न्यू यार्क टाइम्स (१२ जनवरी १९८४) से संक्षिप्त.


## समालोचनार्थ!

एक रिकार्ड के बारे में विचार: कुल मिला कर स्टीरियो संगीत का उम्दा नमूना है. संगीतकार का यह कर्णकटु संगीत छः मीटर दूर पड़े शराब के प्याले की सतह पर तूफ़ान उठाने की पूरी गारंटी लिए है.

—'टाइम'

समालोचक के विचार: अपनी पुस्तक की प्रति भेजने के लिए धन्यवाद—मैं इसे पढ़ने में ज़रा भी समय नहीं गंवाऊंगा.

—'द ६३७ बेस्ट थिंग्स एनीबडी एवर सेड' (एथेनियम)

रिचर्ड वेगनर के संगीत के बारे में हास्यकार बिल नाइ: लोग कहते हैं कि उन का संगीत जैसा सुनाई देता है, उस से भी कहीं अच्छा है.

'मार्क ट्वेंस आटोबायग्राफ़ी'. (हार्पर एंड रो)

मारधाड़पूर्ण फ़िल्म पर टिप्पणी: हा, हुम, हू—समुद्री डाकू—न छुरी न चाकू —जी ए

तुर्की में निर्मित एक फ़िल्म की समीक्षा का शीर्षक: पूर्णतः तुर्क, बेतुक.

दूरदर्शन फ़िल्म समीक्षा से: 'मुझे जीने दो' को इस का कोई हक नहीं.

रिचर्ड एल विलियम्स

# सर्दी ज़ुकाम नाक में दम

तमाम उपायों के बावजूद हम ज़ुकाम से पीछा नहीं छुड़ा पाए हैं. पढ़िए कि इस मामूली रोग पर विजय पाने के लिए वैज्ञानिक क्या क्या कर रहे हैं

हर वर्ष करोड़ों लोगों को सर्दी ज़ुकाम होता है. वे इस का इलाज करने के लिए खांसी और बलगम दूर करने की दवाओं, नाक में डालने और सूंघने की औषधियों तथा ज़ुकाम से राहत पाने के अनेक नुसख़ों पर अरबों रुपए ख़र्च करते हैं. सर्दी ज़ुकाम यद्यपि कोई गंभीर बीमारी तो नहीं है किंतु इस के कारण अनेक लोग कई दिनों तक

काम पर नहीं जा पाते और बच्चों की पढ़ाई रुक जाती है. इस से पीड़ित व्यक्ति को बहुत परेशानी भी होती है.

सदियों से मनुष्य सर्दी ज़ुकाम झेलता चला आ रहा है. प्राचीन युग में ऐसा विश्वास किया जाता था कि ज़ुकाम के कारण नाक से बहने वाला पानी मस्तिष्क का कूड़ा कचरा होता है. इस की रोकथाम के उपाय और इलाज भी गलत होते थे. यूनान के प्राचीन और प्रसिद्ध चिकित्सक हिपोक्रेटीज़ ने लिखा है कि पुराने ज़माने में रोगी के शरीर का ख़ून निकाल कर ज़ुकाम का इलाज करना आम बात थी. रोम के प्राचीन लेखक और विद्वान प्लिनी द एल्डर ज़ुकाम दूर करने के लिए "चूहे का बालों वाला मुंह चूमने" की सलाह देते थे

ज़ुकाम से राहत पाने के लिए आज भी प्याज़ या लहसुन खाने के जो सुझाव दिए जाते हैं, वे वैज्ञानिक नहीं कहे जा सकते. बिजली का झटका, गरम पानी में नींबू का रस मिला कर पीना या थोड़ी सी गैस सूंघना भी इसी श्रेणी में आते हैं. अमरीका में मैरीलैंड राज्य के बाल्टीमोर शहर के जोंस होपकिंस विश्वविद्यालय के स्वर्गीय डाक्टर विलियम ओस्लर इन सब इलाजों से बढ़ कर यह सलाह दिया करते थे कि "ज़ुकाम होने पर बिस्तर पर लेट जाइए और पलंग के सिरहाने में अपना टोप लटका दीजिए. अब आप तब तक व्हिस्की पीते रहिए जब तक कि आप को एक की जगह दो टोप न दीखने लगें. सवेरे उठने पर आप की तबीयत काफ़ी सुधरी हुई होगी."

पिछले कुछ वर्षों से ही मनुष्य ने यह जानने के प्रयत्न शुरू किए हैं कि सर्दी ज़ुकाम होने पर मनुष्य के शरीर में क्या हो जाता है. अब हमें मालूम है कि श्वास नली के प्रारंभिक भाग के ऊपरी हिस्से में विषाणु की छूत लगने से प्रायः सर्दी ज़ुकाम होता है. ख़ास तौर के विषाणु शरीर में घुस कर नाक और गले की श्लेष्मा झिल्ली से घिरी कमज़ोर कोशिकाओं (सेल्स) को मार डालते हैं. टाइम-लाइफ़ बुक्स के संपादकों और वैंडी मर्फ़ी ने 'कोपिंग विद द कामन कोल्ड'* पुस्तक में लिखा है कि "सर्दी ज़ुकाम की छूत लगने पर व्यक्ति को कोई परेशानी नहीं होती किंतु जब उस का शरीर इस छूत का मुकाबला करने लगता है तभी वह जान पाता है कि उसे ज़ुकाम हो गया है और उसे इसी लिए बहुत परेशानी झेलनी होती है कि उस का शरीर स्वस्थ होने का प्रयत्न कर रहा होता है.

हमारी नाक और गले में निम्नांकित प्रक्रिया होती रहती है: आम तौर पर हमारी नाक और गले की झिल्लियां (अंदर की सब से ऊपर वाली बहुत मुलायम खाल) कफ़ (श्लेष्मा) की मोटी परत तैयार करती हैं. श्वास के साथ जो धूल, पराग, कीटाणु और विषाणु हमारे अंदर जाते हैं, वे कफ़ की इस मोटी परत में फंस जाते हैं. बाल जैसे छोटे छोटे लाखों रोएं इस कफ़ को नाक के रास्ते भोजन की नली में वापस भेज देते हैं. वहां पहुंचने पर यह कफ़ निगला जाता है और उस में लिपटे दूषित तथा छूत फैलाने वाले पदार्थ पेट की पाचन प्रणाली में पहुंच कर नष्ट हो जाते हैं.

जब हमें सर्दी ज़ुकाम हो जाता है तो इस का मतलब होता है कि कोई विषाणु इस रक्षा व्यवस्था में घुस गया है और उस ने उस रक्षा पंक्ति के पीछे की जीवित कोशिकाओं पर आक्रमण कर दिया है. विषाणु लगभग आधे सेंटीमीटर के पांच लाखवें भाग जितने सूक्ष्म

आकार का और अपने जैसे विषाणु उत्पन्न करने में समर्थ सामान्य जीव होता है. इस विषाणु की प्रोटीन की तह केवल ऐसी कोशिका पर चिपक सकती है जिस का बाहरी भाग रासायनिक दृष्टि से इस से मिलता जुलता हो. ज़ुकाम के विषाणु की प्रोटीन श्लेष्मा झिल्ली पर चिपक जाती है. श्लेष्मा झिल्ली की कोशिका के बाहरी भाग पर चिपकने के बाद यह विषाणु अपने जैसे विषाणु उत्पन्न करने वाले पदार्थ को कोशिका में पहुंचा देता है तथा कोशिश को और अधिक विषाणु उत्पन्न करने के लिए मजबूर कर देता है. एक कोशिका से एक हज़ार तक नए विषाणु उत्पन्न हो कर आसपास की कोशिकाओं पर हमला कर देते हैं.

किंतु मनुष्य के शरीर में इस का मुक़ाबला करने की शक्तिशाली व्यवस्था होती है, विषाणु से प्रभावित कोशिकाएं नष्ट होने से पहले 'इंटरफ़ेरोन' नाम की प्रोटीन छोड़ती हैं. यह प्रोटीन आसपास की स्वस्थ कोशिकाओं को होने वाले आक्रमण से सावधान कर देती है और इन कोशिकाओं को विषाणु नष्ट करने वाले रासायनिक पदार्थ बनाने के लिए प्रेरित कर देती है.

इस के बावजूद अगर छूत फैलती जाती है तो शरीर दूसरे ढंग की रक्षा व्यवस्था अपनाता है. झिल्ली की कोशिकाएं फूलने वाला पदार्थ छोड़ने लगती हैं जिस के कारण रक्त शिराएं (सूक्ष्म नलियां) फूल जाती हैं. तब सर्दी ज़ुकाम से होने वाली परेशानी शुरू हो जाती है. फूली हुई इन रक्त शिराओं में और ज़्यादा ख़ून बहने लगता है, इस लिए छूत से प्रभावित क्षेत्र लाल और गरम हो जाता है. रक्त शिराओं की फैली हुई दीवारों में रक्त प्लाज़्मा और रक्षा करने वाले रासायनिक पदार्थ चूने लगते हैं. इस अतिरिक्त द्रव पदार्थ से श्लेष्मा झिल्ली सूख जाती है, नथुने तंग हो जाते हैं और वहां ख़ून जमा हो जाता है.

सूजे हुए मांस तंतुओं पर मौजूद श्लेष्मा कोशिकाओं से और अधिक श्लेष्मा निकलने लगती है. ऐसी स्थिति में यह सारी श्लेष्मा नाक के तंग रास्ते से पेट में नहीं भेजी जा सकती. इस लिए इस का कुछ भाग नाक से टपकने लगता है और नाक बहने लगती है. नाक की तंत्रिकाओं के सिरों को सूजन और कोशिकाओं के नष्ट होने का पता चल जाता है, इस लिए मस्तिष्क मांसपेशियों को प्रेरित करता है और उस के कारण छींक आती है. दूसरी तंत्रिकाओं को भी पता चल जाता है कि श्वास नली में इतना अधिक कफ़ इकट्ठा हो गया है जिसे वहां मौजूद रोएं भोजन की नली तक नहीं धकेल सकते. ऐसी स्थिति में खांसी उठती है जिस से श्वास नली साफ़ हो जाती है और रोग के विषाणुओं से भरा कफ़ फेफड़ों में नहीं जाने पाता.

हर तरह का सर्दी ज़ुकाम रोकने के लिए एक ही टीका बनाने के प्रयत्नों में वैज्ञानिक के सामने आज सब से बड़ी समस्या यही है कि सर्दी ज़ुकाम पैदा करने वाले अनेक प्रकार के विषाणु हैं. अब तक इस तरह के २०० से अधिक विषाणुओं का पता लगाया जा चुका है. यदि इन में से किसी एक विषाणु का मुक़ाबला करने वाला टीका बनाया जाता है तो वह सर्दी ज़ुकाम के किसी दूसरे विषाणु को प्रायः नहीं रोक पाता. सर्दी ज़ुकाम पैदा करने वाली मुख्य छूत 'राइनोवाइरस' है. इस की कम से कम ११३ क़िस्मों का पता लगाया जा चुका है. हर तरह के सर्दी ज़ुकाम में ५० प्रति शत सर्दी ज़ुकाम 'राइनोवाइरस' की इन्हीं क़िस्मों के

कारण होता है. किंतु अब तक जितने विषाणुओं का पता लगाया जा चुका है, उन सब के कारण ६० से ७० प्रति शत तक ज़ुकाम होता है. बाक़ी ३० से ४० प्रति शत ज़ुकाम किन विषाणुओं के कारण होता है, इस की जानकारी अभी नहीं है.

सर्दी ज़ुकाम पैदा करने वाले हर विषाणु की रोकथाम के उपाय या इलाज का पता लगाना अव्यावहारिक बात मालूम देती है. किंतु कुछ दवाएं हर तरह के सर्दी ज़ुकाम का इलाज शायद कर सकती हैं. साल्ज़बरी (इंगलैंड) के हार्वर्ड अस्पताल की कामन कोल्ड यूनिट में पिछले दिनों जिस प्रभावशाली दवाई का परीक्षण किया गया है, उस का नाम है इंटरफ़ेरोन. शुरू में यह मनुष्य के रक्त की सफ़ेद कोशिकाओं से बनाई गई थी और इस की एक ख़ुराक की क़ीमत तीन हज़ार डालर आई थी. किंतु अब इसे बनाने वाले जीवाणु उत्पन्न कर लिए गए हैं जिन के कारण इस दवा की एक ख़ुराक की क़ीमत घट कर लगभग एक डालर ही रह जाएगी.

इंटरफ़ेरोन के साथ मुख्य समस्या यही है कि इस का असर बहुत देर तक नहीं रह पाता और यदि इसे बार बार दिया जाता है तो रोगी पर दूसरे क़िस्म के बुरे प्रभाव पड़ जाते हैं. शोधकर्ता यह समस्या सुलझाने में लगे हैं ताकि थोड़ी थोड़ी अवधि के बाद हल्की ख़ुराक देने पर इंटरफ़ेरोन का असर देर तक बना रहे.

सर्दी ज़ुकाम की रोकथाम करने वाली सब से अधिक प्रसिद्ध किंतु विवादास्पद और प्रभावशाली दवाई विटामिन सी (एस्कोर्बिक अम्ल) है. नोबल पुरस्कार विजेता लाइनस पालिंग ने इस का प्रचार किया था. उन्हों ने यह सिद्धांत प्रतिपादित किया था कि विटामिन सी काफ़ी मात्रा में लेने से शरीर की रोग निरोध क्षमता बढ़ जाती है और विषाणु की छूत से प्रभावित कोशिकाएं नष्ट हो जाती हैं.

विटामिन सी के अचूक प्रभाव के बारे में निश्चयात्मक परीक्षण कैसे किए जाएं यह अभी पता लगाना शेष है. किंतु अधिकांश वैज्ञानिकों का विश्वास है कि विटामिन सी आप को सर्दी ज़ुकाम की छूत से नहीं बचा सकता और यदि आप को सर्दी ज़ुकाम हो गया है तो यह आप को नीरोग नहीं कर सकता. इस लिए सब से अच्छा उपाय यही है कि आप को यह मालूम हो जाए कि आप सर्दी ज़ुकाम की छूत से कैसे बच सकते हैं.

शार्लट्सविल स्थित वर्जीनिया विश्वविद्यालय के डाक्टर जैक एम ग्वाल्टनी, जूनियर और ओवन हैंडली बीमा कंपनी के कर्मचारियों, विश्वविद्यालय के छात्रों और शार्लट्सविल शहर के परिवारों पर यह जानने के लिए परीक्षण कर रहे हैं कि सर्दी ज़ुकाम की छूत कैसे लगती है. उन के अनुसंधानों से पता चला कि अधिकांश मालमों में सर्दी ज़ुकाम से पीड़ित व्यक्ति का हाथ छूने से इस की छूत लगती है न कि उस की छींक, खांसी या चुंबन से. ऐसा लगता है कि हमें अपने हाथों से सर्दी ज़ुकाम की छूत लग सकती है. सर्दी ज़ुकाम से पीड़ित छोटे बच्चों की देखभाल करने से या ज़ुकाम वाले किसी व्यक्ति के साथ हाथ मिलाने से (या ज़ुकाम से पीड़ित किसी व्यक्ति द्वारा पकड़ी गई दरवाज़े की मूठ भी छूने से क्योंकि विषाणु ऐसी चीजों पर ६२ घंटे तक जीवित रह सकते हैं) आप को छूत लग सकती है. किसी व्यक्ति के हाथ में सर्दी ज़ुकाम के विषाणु आ जाने पर वह जब कभी अपनी आंखें मलता है या नाक छूता है तो उस के शरीर में सर्दी ज़ुकाम के विषाणु घुस जाते हैं.

अब प्रश्न है कि सर्दी ज़ुकाम से बचने के लिए हमें क्या सावधानी बरतनी चाहिए. हमें सब से पहले यह बात याद रखनी चाहिए कि उम्र बढ़ने के साथ साथ हम में विभिन्न रोगों से बचाव करने की सामर्थ्य बढ़ती जाती है. इस लिए हमें एक ही तरह के ज़ुकाम की छूत दो बार नहीं लग सकती. ऐन आर्बर स्थित मिशिगन विश्वविद्यालय के डाक्टर आर्नल्ड मोंटो ने ११ वर्ष तक १,००० लोगों का अध्ययन कर पता लगाया कि किस व्यक्ति को कितनी बार सर्दी ज़ुकाम हुआ. उन्हें पता चला कि छोटे बच्चों को साल में औसतन तीन चार बार ज़ुकाम होता है. ६० वर्ष की उम्र होने तक साल में ज़ुकाम होने की आशंका ०.५ ही रह जाती है. २० से ३० वर्ष की आयु की उन स्त्रियों को पुरुषों की अपेक्षा अधिक ज़ुकाम होगा जो छोटे बच्चों के साथ रहती है.

उम्र बढ़ने के साथ साथ रोग निरोध की क्षमता विकसित करने के सिवाए आप सर्दी ज़ुकाम से बचने के लिए और कोई विशेष उपाय नहीं कर सकते. यदि आप के परिवार में किसी को ज़ुकाम हो जाए तो आप उस की छूत न फैलने देने के लिए उचित एहतियात बरतिए. परिवार के हर सदस्य को याद दिलाइए कि वह अपने हाथ बार बार धोए. ज़ुकाम से पीड़ित व्यक्ति को नाक साफ़ करने के लिए कई रूमाल* दे दीजिए. ऐसी व्यवस्था कीजिए कि घर में खुली हवा आती रहे. हाथों से अपना चेहरा मत छूएं.

इस के बावजूद अगर आप को ज़ुकाम हो जाए तो क्या करना चाहिए? आप कोई भी दवा क्यों न लें आप को आठ दिन तक ज़ुकाम रहेगा ही रहेगा. निम्नांकित उपाय अपनाने पर आप को ज़ुकाम से कम परेशानी हो सकती है, उस का ज़ोर घट सकता है और ज़ुकाम की मियाद भी कम हो सकती है:

- यदि आप को बहुत ज़ोर का ज़ुकाम हो जाए तो आप बिस्तर पर लेटे रहिए, काफ़ी मात्रा में तरल पदार्थ लीजिए और आराम कीजिए. सूप पीने से राहत मिलती है. भाप से बंद नाक खुल जाती है.
- अगर आप को सर्दी ज़ुकाम ज़्यादा दिन तक रहता है तो इस का मतलब है, आप को इनफ़्लुएंज़ा या कोई और गंभीर बीमारी हो गई है. ऐसी स्थिति में बुख़ार कब होता है, यह देखना चाहिए. जिन लोगों को इनफ़्लुएंज़ा या फ़्लू होता है, उन में से लगभग आधे व्यक्तियों को पहले ही दिन बुख़ार भी हो जाता है. फ़्लू से पीड़ित चार व्यक्तियों में से तीन को तीसरे दिन तक बुख़ार चढ़ जाता है. बड़ी उम्र के अधिकतर लोगों को ज़ुकाम के साथ बुख़ार नहीं होता या होता भी है तो हलका बुख़ार होता है. यदि तीन दिनों के बाद भी बुख़ार न उतरे अथवा ज़ुकाम ठीक होता दीखने के बाद बुख़ार अचानक फिर हो जाए तो संभवत: आप को निमोनिया है या साइनस की कोई छूत है. ऐसी स्थिति में आप को डाक्टर से सलाह लेनी चाहिए.
- अपना काम करते रहने के लिए ज़ुकाम की ऐसी दवा लीजिए जिस से इस के सभी लक्षणों को आराम हो, किंतु ऐसी दवा तभी लीजिए जबकि आप में वे सब लक्षण मौजूद हों जिन्हें

---

*मैडिसन स्थित विसकौंसिन विश्वविद्यालय के डा. एलियट सी डिक ने आयोडीन युक्त रूमाल बनाया है. आयोडीन से विषाणु नष्ट हो जाते हैं. प्रारंभिक परीक्षणों से पता चलता है कि ज़ुकाम से पीड़ित व्यक्ति वातावरण में जितने विषाणु फैलाता है, आयोडिन युक्त रूमाल का प्रयोग करने से उन की संख्या कम हो जाती है.

आज तुकाराम बहुत खुश है। अब उसकी दुपहरी चैन से कटती है।
रैलीज़ उसका सहायक है। उसे अब भरोसा है कि फ़सल अच्छी ही होगी।

उस दवाई से आराम पहुंचता है. शरीर की मांसपेशियों में दर्द, खांसी और बंद नाक खोलने के लिए अलग अलग दवा लीजिए. ज़ुकाम की दवाओं से यद्यपि विषाणु की छूत पर कोई असर नहीं होता, फिर भी उन से ज़ुकाम की परेशानी निश्चय ही घट सकती हैं.

ज़ुकाम पर विजय पाने के लिए संघर्ष जारी है. डाक्टर यह पता लगा रहे हैं कि सर्दी ज़ुकाम की छूत कैसे फैलती है और उसे प्रभावशाली ढंग से कहां रोका जा सकता है. विषाणु वैज्ञानिक ज़ुकाम के अज्ञात विषाणुओं की खोज में लगे हैं. औषधि निर्माता कंपनियां ऐसी दवाएं बनाने की भरसक कोशिशें कर रही हैं जो हर तरह के सर्दी ज़ुकाम में फ़ायदा पहुंचाएं. किंतु अभी यह कार्य पूरा करना बहुत कठिन है. सर्दी जुकाम ने आज भी हमारी नाक में दम कर रखा है.



## सगोत्र

मेरी ममी एकाएक बीमार पड़ गईं और उन्हें आपात आपरेशन के लिए पास के कैथोलिक अस्पताल मे ले जाना पड़ा. उन्हें आपरेशन के बाद वापस कमरे में लाया गया तो बेहोशी की दवा का असर अभी बाकी था. मां यहूदी थीं, इस लिए उन्हें स्ट्रेचर से बिस्तर पर उतारने वाली साध्वी नर्सों ने मुझ से पूछा कि बिस्तर के सामने की दीवार पर उपस्थित सलीब पर चढ़े ईसा की तसवीर को ले कर ममी को कोई आपत्ति तो नहीं होगी.

मैं ने मां के कान के पास मुंह ले जा कर यही बात पूछी. काफ़ी देर चुप रहने के बाद वह मुसकराईं और धीमे स्वर में बोलीं, "वाह री बेवकूफ़ छोकरी, बुरा क्यों लगेगा? हमारे ही यहां के बेटे ने इतनी बड़ी क़ुर्बानी दी और मुझे बुरा लगेगा!"

और जब तक ममी वहां रहीं, वहां की नर्सें हर तरह से उन की सेवा करतीं उन पर जान छिड़कती रहीं.

—बैटी गैलबर्ग

***

## स्पष्टीकरण

हम मियां बीवी इंगलैंड गए तो हम ने लंदन में भी यह सूचना लगी देखी : इश्तेहार लगने पर सज़ा हो सकती है. हमें भी अपने यहां 'इश्तेहार लगाना मना है' याद आ गया. पर यह क्या? नीचे कुछ और लिखा था: इश्तेहार चिपकाने वाले एकदम बेक़सूर हैं. —जे एच

**

## आदतन

मेरे रूममेट को पहली बार अकेले रहना पड़ा. वह तुरंत अपनी नई स्थिति के अनुरूप ढल भी गया. उस ने बाद में मुझे बताया कि दोनों वक़्त के खाने के बाद वह मेज़ से उठ कर कहा करता, "चलो भाई, अब बरतन धो डालें."

—एम के एस

## खेतों के पहरुए

# काक भगौड़े

एवन नील और एन पार्कर की रचना 'स्केअरक्रोज' पर आधारित

खेतीबारी के आरंभ से ले कर आज तक इनसान बीजों, फ़सलों, पकते फलों और सब्ज़ियों की रखवाली के लिए पुतलों का सहारा लेता रहा है, जिन्हें काकभगौड़े, विजूका, उजका, धोख, डराऊ, हौवा आदि कहा जाता है. जापान के किसान धान के खेतों की रखवाली के लिए सदियों से काकभगौड़े खड़े करते आए हैं; प्राचीन यूनान में चेरी, तरबूज़ों और अंगूरों से गौरैयों को दूर रखने के लिए कृषकों के रक्षक, कुरूप देवता पेरियापस की मूर्तियां खड़ी की जाती थीं; और अमरीका में (कोलंबस द्वारा की गई 'नई दुनिया' की खोज से पहले) वहां के मूल निवासी 'इंडियन' ज्वार मक्के के खेतों में श्यामा तथा मुटरी चिरैयों को डराने के लिए काकभगौड़े खड़े किया करते थे.
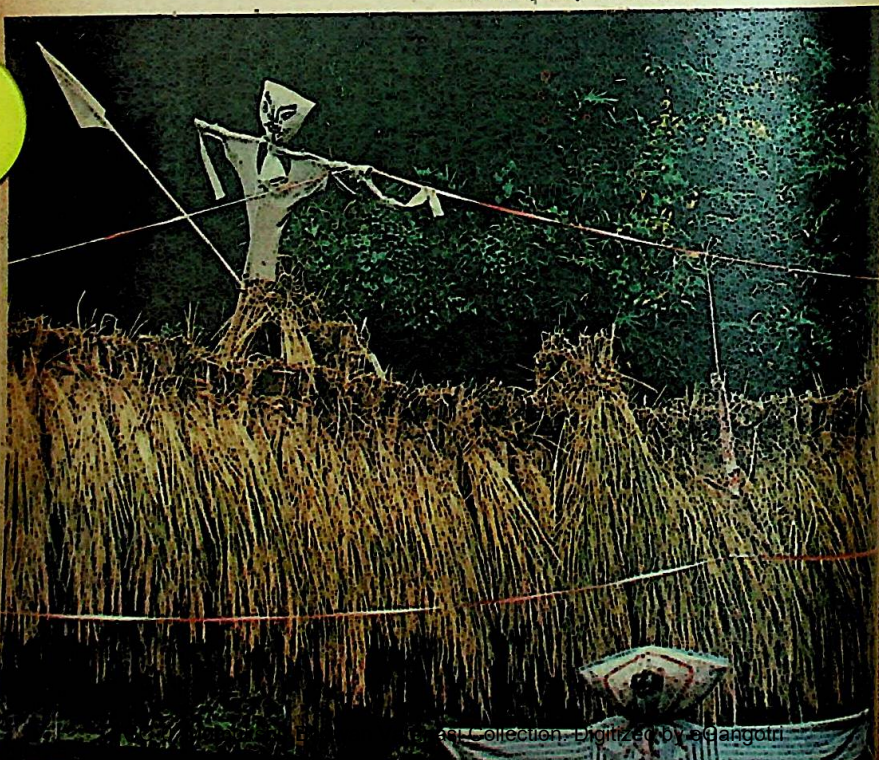
स्पेन में तरबूज़ों के खेत में खड़ा डान क्विक्ज़ोट

फ़ोटो : हंस मिल्वेस्टर-राफ़ो
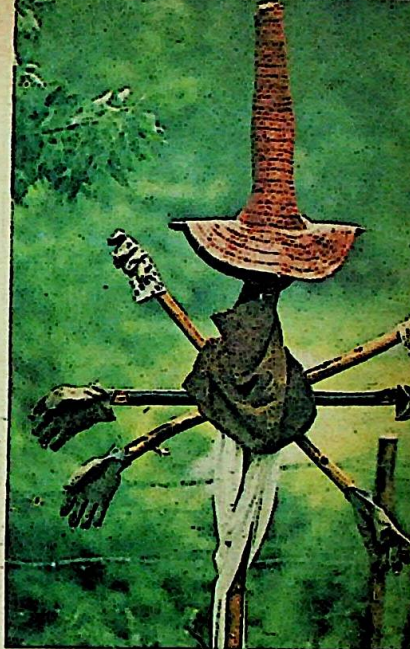
पोलैंड के किमान द्वारा निर्मित विकट दादी मां

फ़ोटो : एन पार्कर

बिजूका के चेहरे
कभी कभी अमूर्त
होते हैं—पूरी आकृति
आंकने के बजाय
चेहरे का आभास
मात्र होता है

फ़ोटो : एन पार्कर

←

दो जापानी 'किमान
धान के खेतों की
रखवाली कर रहे हैं
शिंतो धर्म के अनुमार
खेतों के रक्षक हैं
बिजका देवता
शादो-नाकमी

फ़ोटो : हंस सिल्वेस्टर-राफ़ो

काकभगौड़ों की आकृति अकसर उस के रचयिता की आकृति से मिलती जुलती हो सकती है. फूस भर कर बनाया गया यह पुतला शायद किसी भारी भरकम हट्टे कट्टे किसान की रचना हो

फ़ोटो : एन पार्कर

आधुनिक युग में भी देहाती परंपराओं से जुड़े देशों में विचित्र शक़लों के काकभगौड़े खड़े किए जाते हैं. तरीक़ा एकदम सीधा सादा है : किसान दो सीधी लकड़ियां क्रास की तरह एक दूसरी को काटती हुई आड़ी खड़ी बांध देते हैं—हाथ पांव तैयार. इस ढांचे को मानवाकृति देने के लिए आमतौर पर फटे पुराने कपड़े पहना दिए जाते हैं. फिर किसी झोले या पुराने

मोज़े जैसी किसी चीज़ में फूस भर कर सिर तैयार कर दिया जाता है. फ्रांस में ब्रितानी के एक चतुर चालाक माली ने बताया कि काकभगौड़े की शक़्ल आदमी से जितनी ज़्यादा मिलती जुलती हो वह उतना ही प्रभावशाली होता है.

ज़्यादातर काकभगौड़े की रचना परिवार के लोग ही कर लेते हैं. इस काम में बच्चे भी हाथ बंटाते हैं. इस मामले में कुछ किसान तो स्वभावतः कलाकार होते हैं. बड़े ही कल्पनाशील और सूझबूझ वाले उन के बनाए हुए डरावने पुतले तो प्रागैतिहासिक कला के उदाहरण से लगते हैं.

खेतों के ये अनूठे कल्पना जात पहरुए बाइबिल से ले कर बच्चे की लिखी जाने वाली आधुनिक रचनाओं तक में लेखकों तथा कहानीकारों के प्रिय विषय रहे हैं. काकभगौड़े को ले कर कितने ही कहानीकारों ने रोचक कहानियों की रचना की है. फ़सलें उजाड़ने वाले पशु पक्षी भले ही इन्हें देख कर डरें और भाग जाएं, लेकिन मानव शिशुओं के लिए तो ये कौतूहल जगाने वाले सजीव से आकर्षक पुतले हैं.

हाल के कुछ वर्षों में अलग अलग काम करने वाले दो फ़ोटोग्राफर— अमरीका की एन पार्कर तथा जरमनी के हेंस सिलवेस्टर काकभगौड़ों की कला पर मुग्ध हो गए. उन्हों ने दुनिया भर में देहाती इलाकों का भ्रमण करते करते लोकप्रिय ग्रामीण संस्कृति तथा सहज कला के प्रतीक सैकड़ों काकभगौड़ों के फ़ोटो लिए.

कला संकलनकर्ता शायद कल इन काकभगौड़ों को अपने घरों में ला खड़ा करेंगे. तब तक हम इन छायाचित्रों के सहारे खेतों में मानव द्वारा खड़े किए गए इन पुतलों की सृजन

*हब कैप के सिर वाला टिन के डब्बों का आदमी : आज के काकभगौड़े आधुनिक टेक्नालाजी से प्रभावित हैं. उन की रचना में धातु की पत्तियों, भड़कीली सामग्री तथा टिन के डब्बों जैसी चीज़ें काम में लाई जाती हैं जो धूप में चमकती हैं या हवा के हलके झोंके से ही झनझनाने और खनखनाने लगती हैं*

फ़ोटो : एन पार्कर

कला का मोल आंकें और काकभगौड़ों के जादुई संसार की सैर करें.



बाग़ में उल्लास से थिरकती इस पुतली को एक ब्रिटिश औरत ने बनाया
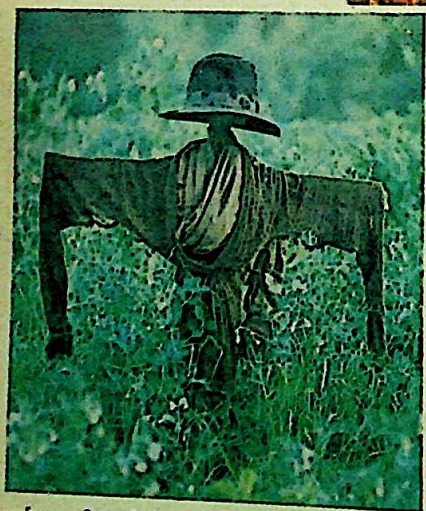
पुर्तगाल की सजीली आधुनिका: पुरानी कमीज़, ऐप्रन, रोब या हैट मिल जाए तो काकभगौड़े के रचयिता की कला मुखर हो आती है.

फोटो : एन पार्कर
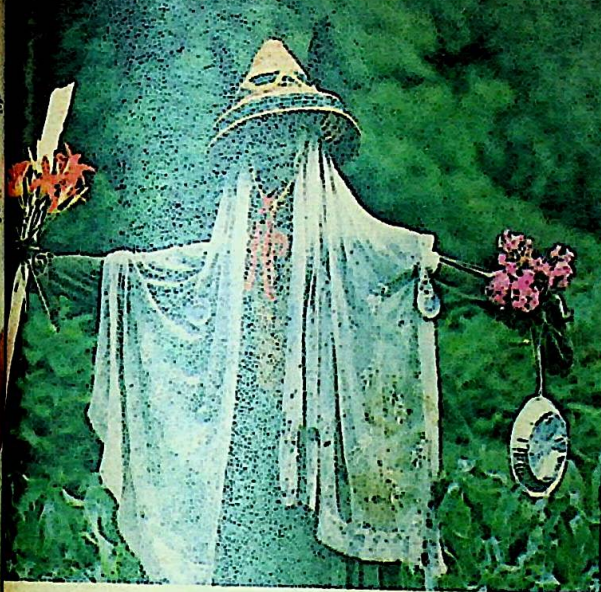
परदे का शाल ओढ़े
फूल वाला यह छोकरा
आगनवाड़ी में
थरथराता रहता है
फ़ोटो : एन पार्कर

घंटियों वाला सफ़ेदपोश काकभगौड़ा
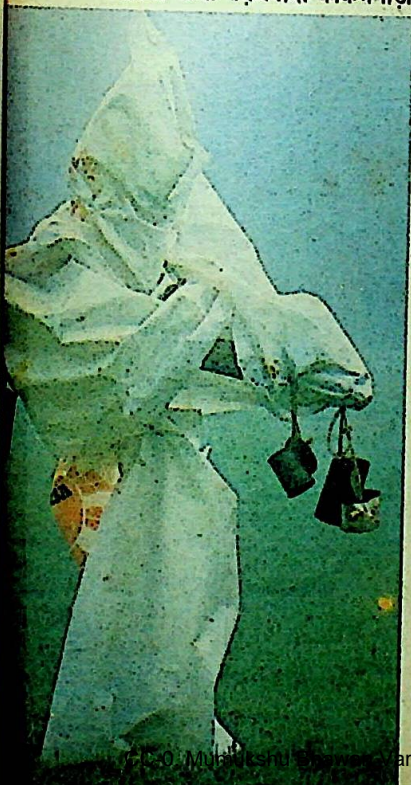
फ़ोटो : हंस सिल्वेस्टर-राफ़ो

खेत पर जाते एक
फ़्रांसीसी किसान का
प्रतिनिधित्व करने वाला
अनूठा पुतला
फ़ोटो : हंस सिल्वेस्टर-राफ़ो
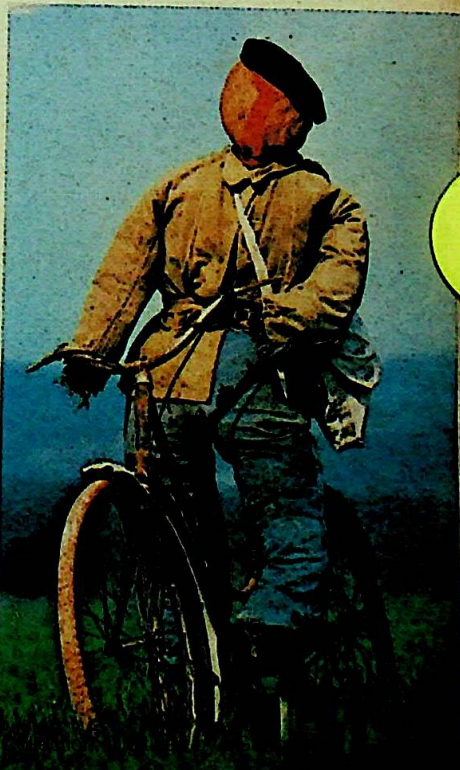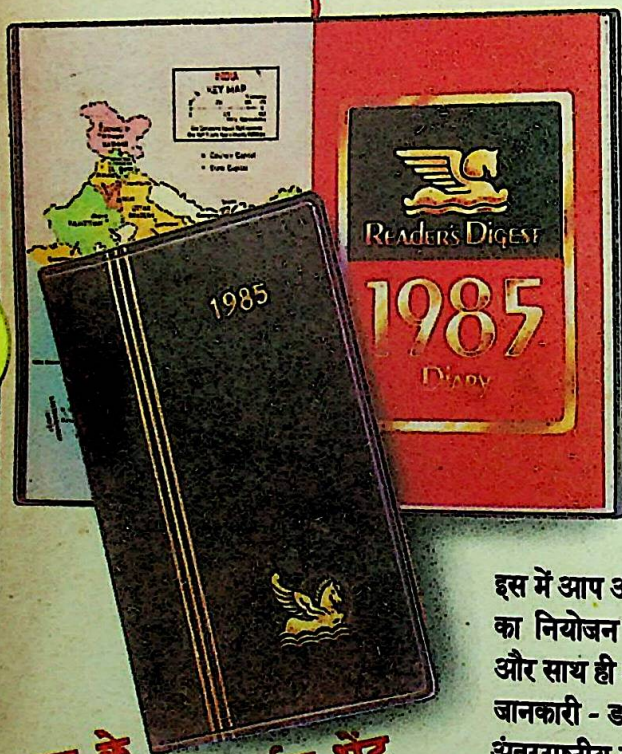
## प्रस्ताव का लाभ कैसे उठाएं-

- संलग्न उपहार व बचत पत्र में अपना पूरा नाम व पता अंग्रेज़ी में साफ साफ लिखें.
- उपहार व बचत पत्र को पृष्ठ से अलग करें, उस में २५ पैसे का डाक टिकट चिपका कर आज ही डाक में डाल दें.
- आप का आदेश प्राप्त होते ही हम आप की डायरी वी. पी. पी. द्वारा भिजवा देंगे. वी. पी. पी. आने पर रु.45/– (डाक व पैकिंग ख़र्च के लिए रु.9/–) यानि कुल रु. 54/– दे कर उसे छुड़ा लें.
- डाक घर से आप का शुल्क प्राप्त होते ही आप की सदस्यता शुरु कर दी जाएगी और सर्वोत्तम की प्रतियां निष्ठापूर्वक आप को साल भर भेजी जाएंगी.

यह विशेष योजना केवल भारत में सीमित समय के लिए ही मान्य है.
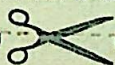
## छूट व उपहार पत्र

**जी हां** मुझे 12 महीने के लिए सर्वोत्तम रीडर्स डाइजेस्ट का सदस्य बना लिया जाए. वी. पी. पी. आने पर मेरे द्वारा डाकिये को रु.45 (डाक व पैकिंग ख़र्च के लिए रु.9/– अतिरिक्त) दे कर डायरी छुड़ा ली जाएगी. रु. प्राप्त होते ही मेरी सदस्यता की कड़ी शुरु कर दीजिए.

मेरा नाम ____________________

मेरा पता ____________________

____________________ PIN __________

(नाम व पता कृपया अंग्रेज़ी में लिखें)

## गारंटी

"सर्वोत्तम रीडर्स डाइजेस्ट" के लिए आप की खुशी सर्वप्रथम है. सर्वोत्तम से यदि आप को पूरा संतोष न मिले तो आप अपनी सदस्यता कभी भी समाप्त कर सकते हैं और अपने बाकी रुपये बिना झिझक वापिस ले सकते हैं रीडर्स डाइजेस्ट की यह नीति 60 वर्षों से चली आ रही है. आपके संतोष की यह गारंटी है.

**इस छूट व उपहार पत्र को आज ही डाक में डालें**

**देर न करें 25 पैसे का टिकट लगाना न भूलें**

सामान्य वार्षिक शुल्क रुपये ~~99.00~~

**50% छूट**

आप के लिए केवल रुपये 54.00

(डाकखर्च के रु. 9/- मिलाकर)

पोस्ट कार्ड

यहां 25 पैसे का डाक टिकट चिपकाइए

**सर्वोत्तम रीडर्स डाइजेस्ट**

बी-15 झिलमिल इण्डस्ट्रीयल एरिया

दिल्ली-110032

# काफ़ी हो तो दक्षिण की

*काफ़ी ऐसी होनी चाहिए जो आप की सारी इंद्रियों को स्फूर्त कर दे और आप के मन को पुलकित कर दे*

**गीता डाक्टर**

**का**पी, कापी, कापी . . .कापी! अगर आप दक्षिण भारत के किसी हिस्से में रेल से यात्रा कर रहे हैं तो यह आवाज़ आप को हर स्टेशन पर सुनाई देगी. अगर यात्री दक्षिण भारत का रहने वाला है तो सुबह सुबह काफ़ी के प्याले की महक पाते ही उस के मन में घर परिवार की आनंद भरी ज़िंदगी की याद ताज़ा हो उठेगी. दक्षिण भारत में काफ़ी केवल एक पेय ही नहीं है बल्कि जीवन प्रणाली भी है.

"मेरे जीवन की आरंभिक यादें इस काफ़ी से बंधी हुई हैं," एक दक्षिण भारतीय ने बताया, "मेरी मां तवे पर या कड़ाही में काफ़ी के बीज डाल कर भूनती थीं. भूनते समय दानों को बराबर चलाती रहती थीं. इस के बाद उन दानों को पीसती थीं और पीतल के फ़िल्टर में भर देती थीं. फिर पानी उबाल कर काफ़ी के ऊपर डालती थीं. साथ ही साथ ठंडे पानी के छींटे भी मारती जाती थीं ताकि काफ़ी तली में जा कर बैठ जाए. फिर इस काफ़ी को वे

## काफ़ी का काढ़ा बनाने की विधि

डिकौक्शन काफ़ी या काफ़ी-का काढ़ा फ़िल्टर में तैयार किया जाता है. फ़िल्टर के आकार का निर्णय आप अपनी आवश्यकता अनुसार कर सकते हैं. १२.५ सेंटीमीटर ऊंचे और पांच सेंटीमीटर चौड़े छोटे फ़िल्टर में तीन या चार प्याले काफ़ी बन सकती हैं. फ़िल्टर के चार हिस्से होते हैं: दो डब्बे जो ऊपर नीचे बिलकुल फ़िट हो जाते हैं. ऊपर वाले डब्बे में इतने बारीक छेद होते हैं कि उन में से काफ़ी की बूंदें टपक टपक कर नीचे जा सकें. ये छेद इतने बड़े न हों कि उन में से काफ़ी का पाउडर निकल जाए. ऊपर वाले डब्बे में एक ढक्कन होता है और एक 'प्लंजर'. उस में भी छेद होते हैं.

अच्छी काफ़ी बनाने के लिए काफ़ी के बीजों को मोटे तवे पर या लोहे की कड़ाही में भून लेना चाहिए. भूनते समय बीजों को बराबर चलाते रहना चाहिए. जैसे ही काफ़ी की बढ़िया महक आने लगे, उन्हें भूनना बंद कर दें और पीस लें. फ़ौरन ही पाउडर को काफ़ी के प्याले बनाने के लिए इस्तेमाल कर लें.

फ़िल्टर बिलकुल सुखा हुआ होना चाहिए. और एक प्याला काफ़ी के लिए दो चम्मच. पाउडर ऊपर वाले हिस्से में डालना चाहिए. पाउडर भरे हिस्से पर प्लंजर लगा दीजिए और फिर उबला हुआ पानी धीरे धीरे उस पर डालिए. बाद में उसे ढक्कन से ढक दीजिए और काफ़ी की बूंदों को टपकने दीजिए.

जब काढ़ा तैयार हो जाए (१२.५ सेंटीमीटर के फ़िल्टर में लगभग दस मिनट लगते हैं) तो उस में गरम दूध और शक्कर मिलाइए और काफ़ी तैयार.

मलमल के कपड़े में डाल कर छानती थीं. मलमल के इस कपड़े को पहले से ही काफ़ी के काढ़े में डाल कर तर कर लिया जाता था जिस से उस के रेशों में काफ़ी की महक पूरी तरह से रच बस जाए. काफ़ी छानने के बाद उस में गरम दूध और शक्कर मिलाती थीं और उसे दो भगौनों में डाल कर फेंटती थीं ताकि ख़ूब झाग बन जाए. इस तरह वे बेहतरीन काफ़ी बनाती थीं."

दुनिया भर में काफ़ी के शौक़ीन एक हद तक दीवाने होते हैं. यही हाल दक्षिण भारत में भी है. वे बड़े क़ायदे से काफ़ी तैयार करते हैं. अपना मनचाहा पेय तैयार करने के लिए काफ़ी भक्त पूरे विधान पर यथाक्रम अमल करते हैं, पूजा के बरतनों के सामन उस के बरतन संभाल कर रखते हैं और रहस्यपूर्ण सारी विधियां एक दूसरे को बताते रहते हैं.

जब मैं ने बंगलूर स्थित काफ़ी बोर्ड के काफ़ी विकास निदेशक वी बालू को बताया कि मैं इंस्टेंट काफ़ी की शौक़ीन हूं तो उन्हों ने कहा, "श्रीमती जी, जानती हैं आप कि वास्तविक काफ़ी का एक अच्छा प्याला बनाने के लिए किस चीज़ की ज़रूरत होती है? प्यार की! काफ़ी के बीजों में कमाल की महक छिपी होती है और उस महक को बाहर लाने के लिए चाहिए प्यार भरे दो हाथ!"

बालू ने हमें आगे बताया, "सभी कामों को बढ़िया ढंग से करने की हमारी यही परंपरा रही है. हमारी योग पद्धति का लक्ष्य मानव मस्तिष्क को चेतना की ऊंचाइयों तक ले जाना है. इसी तरह काफ़ी बनाने के भी विधि विधान हैं. सुबह सवेरे हम सब से पहले काफ़ी ही पीते

हैं. यह ऐसी होनी चाहिए कि आप की सारी इंद्रियों को स्फूर्त कर दे, आप के मन को पुलकित कर दे और आप को चेतना की ऊंचाइयों पर पहुंचा दे. इतनी निष्ठा के साथ बनाई गई काफ़ी का आनंद ही और होता है." यह कह कर वे ऐसे मुसकराए मानो उन्हों ने काफ़ी का एक और भक्त बना लिया हो.

काफ़ी के साथ आत्मा का संबंध बहुत पुराना है. काफ़ी सब से पहले सूफ़ी संतों के बीच लोकप्रिय हुई थी. रतजगों के दौरान आनंदातिरेक की स्थिति में अपने आप को बनाए रखने के लिए वे काफ़ी पीते थे. कर्नाटक के बाबा बूदन पर्वत का नाम उस मुसलिम संत के नाम पर रखा गया जिस के बारे में कहा जाता है कि वह लाल साग़र के मोका नामक प्राचीन अरब बंदरगाह से काफ़ी के पहले सात बीज ले कर भारत आया था.

आज काफ़ी कई तरीक़ों से बनाई जाती है जैसे 'इंस्टेंट' और 'एसप्रेसो'. एसप्रेसो काफ़ी एसप्रेसो मशीन से बनाई जाती है. लेकिन दक्षिण भारत में सब से अधिक लोकप्रिय तरीक़ा फ़िल्टर काफ़ी का है जिस से श्रेष्ठ काढ़ा (डिकौक्शन) तैयार होता है. काढ़े के कुछ चम्मच उबलते दूध और चीनी में मिला कर बढ़िया काफ़ी तैयार की जाती है.

विश्व बाज़ार में भारतीय काफ़ी की खपत लगभग २.५ प्रति शत है. फिर भी काफ़ी के शौक़ीन लोगों में यह बहुत लोकप्रिय है. उदाहरण के लिए भारतीय काफ़ी को यमन की मोका काफ़ी के साथ मिला कर टर्किश काफ़ी तैयार की जाती है. 'मानसूंड काफ़ी' या मानसून से प्रभावित काफ़ी स्कैंडिनेवियन लोगों में बहुत प्रिय है. इस का यह नाम इस के असाधारण सुनहरे रंग और विशेष गंध के कारण रखा गया है. भारतीय काफ़ी के प्राचीन बीज को यह विशेष गंध नमी भरी लंबी समुद्र यात्रा के दौरान प्राप्त हुई थी. लेकिन अब यह नमी बनावटी तरीके से पैदा की जाती है.

भारतीय दुकानों में अधिकतर 'अरेबिका' और 'रोबस्टा' नामक दो प्रकार की काफ़ी बिकती है. अरेबिका के 'प्लांटेशन ए' ग्रेड के बीज सब से बड़े और श्रेष्ठ होते हैं. रोबस्टा काफ़ी 'रोबस्टा पार्चमेंट' और 'रोबस्टा चेरी' दो नामों से बिकती है. 'पीबेरी' नामक बीज छोटा और गोल होता है. उसे हाथों से सावधानी पूर्वक तोड़ा जाता है. इस काफ़ी की और किसी काफ़ी से तुलना नहीं की जा सकती. विशेष अवसरों का विशेष पेय है यह काफ़ी.

हमारे यहां काफ़ी पश्चिमी घाटों के जंगलों की ढलानों पर ४५० से १५२५ मीटर की ऊंचाई पर पैदा होती है. काफ़ी की खेती का इलाक़ा बहुत सुंदर है. बड़े बड़े वृक्षों के बीच काफ़ी के गहरे हरे रंग के पौधे दूर दूर तक फैले रहते हैं. मार्च की वर्षा के बाद पहाड़ियां काफ़ी की सफ़ेद चमकदार बौर से जगमगा उठती हैं. यह बौर अच्छी फ़सल की सूचक होती है. सब से पहले यहां सन १८४० में अंगरेजों ने काफ़ी की खेती शुरू की थी. तब से इस की खेती को बराबर बढ़ावा दिया जाता रहा है: काफ़ी के छोटे दाने पैदा करने के लिए हर स्तर पर बड़े लाड़ प्यार से उसे पाला पोसा जाता है और तब कहीं जा कर उस में असली जान आती है.

जब मैं मरकारा स्थित कोठारी परिवार की कूवरकोली एस्टेट को देखने गई, उस समय कच्ची काफ़ी पकनी शुरू हुई थी. औरतें अपनी कमर पर बोरीनुमा टोकरियां बांधे पहाड़ियों पर घूमती हुई दोनों हाथों से पकी

हुई काफ़ी तोड़ रही थीं और सावधानीपूर्वक कच्ची काफ़ी को छोड़ती जा रही थीं. क़ाफ़ी को धोने सुखाने आदि का कुछ काम एस्टेट में ही पूरा हो जाता है. कुछ दानों को छीला जाता है. इन को छीलने का तरीक़ा बड़ा मुश्किल है. इस तरीक़े को 'पर्लपिंग' और 'वाशिंग' कहा जाता है. छीलने के बाद इन्हें धूप में सुखाया जाता है और इस से 'प्लांटेशन' या 'पार्चमेंट काफ़ी बनाई जाती है. बाक़ी के दानों को बिना छीले छोड़ दिया जाता है. दोनों तरह के दानों को कंकरीट के चबूतरों पर फैला कर कुछ समय बाद सात दिनों तक धूप में सुखाया जाता है.. इस तरह हर दाने को थोड़ी बहुत धूप मिल जाती है.

इस के बाद विशेषज्ञ अपने हाथों में इस की क्योरिंग, ग्रेडिंग, गार्बलिंग—अथवा छंटाई का काम करते हैं. इस की बिक्री बंगूलर स्थित काफ़ी बोर्ड के अंतर्गत सामूहिक व्यवस्था के माध्यम से आयोजित की जाती है.

इस का सब से आकर्षक विभाग है कप टेस्टिंग यूनिट. "काफ़ी का स्वाद लेने वाली के बारे में कहा जाता है कि वह एक घूंट काफ़ी मुंह में लेती है, उगलती है और बड़ी समझदार होने का दिखावा करती है." यह बात हमें शालिनी मेनन ने बताई जो उगालदान लिए एक घूमने वाली मेज़ पर बैठी थी. काफ़ी टेस्ट करने वाली ताज़ा काफ़ी के प्याले में से एक चम्मच काफ़ी ले कर मुंह में डालती है, गरारा सा करती है और उस का मूल्यांकन करने से पहले उगल देती है. मेनन ने बताया कि गरारे से गले के अंदर और तालू पर काफ़ी का स्प्रे हो जाता है और तब स्वाद कलिकाओं से अच्छी बुरी काफ़ी का पता चल जाता है. काफ़ी के स्वाद से ही उस के गुण और मूल्य का निर्णय होता है. क्या काफ़ी का स्वाद तीखा, कड़वा, खट्टा, मृदु या मीठा है? उस में जान है या नहीं? इन सभी भेदों को पहचानने के लिए काफ़ी का स्वाद जांचने वाले को संयमी जीवन बिताना होता है. वह रात देर तक जाग नहीं सकता, सिगरेट नहीं पी सकता और न ही बहुत मिर्च मसाले वाला भोजन कर सकता है.

काफ़ी के उत्पादन में कितना काम करना पड़ता है, यह जानने के बाद अब मैं ऐसी वैसी कोई काफ़ी पी नहीं सकती. मैं 'अरेबिका' और 'रोबस्टा' काफ़ी को पहचानती हूं और हां 'पीबेरी' को भी.

अब मैं भी काफ़ी की भक्त की तरह हर कहीं उत्साहपूर्वक इस का सुसमाचार सुनाती हूं. लेकिन क्या आप जानते हैं कि बढ़िया काफ़ी का एक प्याला तैयार करने के लिए किस चीज़ की ज़रूरत होती है?

प्यार की!

'द ताज मैगज़ीन' (जनवरी-मई-१९८२) में संक्षिप्त.
कापीराइट १९८२ मीना सावटर

## कार वेला

नई कार ख़रीदे महीना हो चुका था, पर मेरे किशोर बच्चे इतने दिनों बाद भी उस के लिए कोई उपयुक्त नाम नहीं चुन पाए. अंततः मैं ने ही मामला सुलझाया. कार का नाम रखा गया 'सिंड्रेला' क्योंकि हम ने इस के साथ भी आधी रात तक घर लौटा ले आने का बंधन लगा रखा था.

—श्रीमती लूसिल वेल्श

# बस एक घंटा

## जिस से जीवन बदल सकता है

**बारबरा बार्टोसी**

फ़रवरी १९७८ की सुबह. जन्म दिन था मेरा उस रोज़. ब्रीफ़केस थामे मैं कारोबारी नाश्ते के लिए रवाना हो रही थी तो कोई चीज़ भीतर ही भीतर साल रही थी मुझे. कुल मिला कर ज़िंदगी अच्छी ही रही थी मेरी. जिस छोटी सी विज्ञापन एजेंसी को मैं चला रही थी, वह ख़ूब फूल फल रही थी. पति और बच्चे भी ठीकठाक थे. फिर भी किसी चीज़ की कमी खलती थी—कोई बेनाम सी चीज़, अपने भीतर कहीं

एक मामूली से ख़ालीपन की शक्ल में मैं ने उसे महसूस किया था.

रेस्तोरां में ऊंचे लंबे कद के ६० वर्षीय डान कैंपबेल के साथ मैं जा बैठी. वह एक सफल मार्केटिंग सलाहकार था. उसे लोगों के आंतरिक भावों में उतर जाने का कमाल हासिल था. उस का शांत, सौम्य स्वभाव हमेशा मुझे आकर्षित करता था.

अंडे के पोच का नाश्ता लेते हुए हम ने एक विज्ञापन संबंधी योजना पर विचार विमर्श किया और फिर कारोबार की बात से एकदम हट कर मैं ने अपने जन्म दिन और अपने भीतर के ख़ालीपन का ज़िक्र किया जो अंदर ही अंदर मुझे कुरेद रहा था.

"ख़ालीपन को भरना चाहती हो?" डान ने पूछा.

"बेशक."

"तो फिर अपना दिन घंटे भर की प्रार्थना से शुरू किया करो."

"इतना समय होता कहां है मेरे पास!" मैं ने हैरानी से कहा.

"बिलकुल यही बात बीस साल पहले मैं ने कही थी. उन दिनों में शिकागो की एक विज्ञापन एजेंसी का अध्यक्ष था. हर तरफ़ हाथ पैर मार रहा था मैं. दैनिक प्रार्थना में मेरी आस्था तो थी, लेकिन उस के लिए समय नहीं निकाल पाता था. ऐसा लगता था जैसे ज़िंदगी क़ाबू से बाहर होती जा रही हो. तब एक दोस्त ने सुझाया कि मैं उलटी दिशा में चल रहा हूं.

"'तुम ईश्वर को अपने जीवन में बिठाने की कोशिश कर रहे हो,' उस ने कहा. 'पांच मिनट यहां से निकाल कर, दस मिनट वहां से निकाल कर. अगर तुम्हें ईश्वर के इर्द गिर्द अपनी ज़िंदगी रखनी है तो वह कुछ त्याग के साथ ही रखी जा सकती है. दिन में एक घंटा प्रार्थना को दो तब होगी कोई बात, कोई क़ुरबानी.' इस का अभिप्राय यह है कि ज़िंदगी से वक़्त का इतना बड़ा टुकड़ा निकाला जाए जो तुम्हारे लिए कुछ क़ीमत रखता हो और फिर वह टुकड़ा ईश्वर के निमित्त कर दो."

डान की आंखों में चमक थी. "मैं ने सोचा, मेरे दोस्त का दिमाग़ चल निकला है. ईश्वर के निमित्त एक घंटा निकालने के लिए मुझे सुबह एक घंटा और पहले सो कर उठना पड़ेगा. पूरी नींद न लेने से मेरी सेहत ख़राब हो जाएगी." उस की आंखों की चमक अब मुसकराहट में बदल गई. "लेकिन पिछले बीस बरस में मैं कभी बीमार नहीं पड़ा!"

बीस बरस!

**बेचैनी के साथ मैं** रेस्तोरां से निकली. प्रार्थना के लिए एक घंटा? कोई बात हुई भला! लेकिन इस के बावजूद मैं डान के सुझाव को दिमाग़ से निकाल नहीं सकी.

अपने तीन किशोर बच्चों या अपने पति बिल से कुछ कहे बिना मैं ने घड़ी में सुबह ५ बजे का अलार्म लगा दिया. जहां हम रहते हैं, वहां फ़रवरी के महीने में ५ बजे सुबह काफ़ी ठंड और अंधेरा होता है. जी तो चाहा कि कंबल में ही दुबकी पड़ी रहूं, लेकिन किसी तरह मजबूर कर ही लिया मैं ने अपने आप को उठने के लिए.

घर हर ओर से अंधेरे की काली चादर में लिपटा था. अपने शिकारी कुत्ते बर्ट की ओर ध्यान न दे कर मैं दबे पांव बैठक में पहुंची और सोफ़े पर टिक गई. उस समय ईश्वर के साथ एकदम अकेले होने की अनुभूति विलक्षण थी. यह कोई धार्मिक रस्म नहीं थी. बस मैं और ईश्वर घंटे भर के लिए एक साथ थे.

मैं ने घड़ी की ओर देखा और गला साफ़ किया. "लो परमेश्वर! यह रही मैं. बोलो!"

मैं आप को बताना चाहती थी कि ईश्वर ने तुरंत उत्तर दिया. लेकिन नहीं, ऐसा नहीं हुआ. वहां ख़ामोशी ही ख़ामोशी थी. सूर्योदय की पहली झलक पाते ही मैं ने प्रार्थना करने की कोशिश की, लेकिन मेरा ध्यान उचट कर अपने बेटे औरं उस से एक दिन पहले हुए झगड़े पर चला गया. एक विज्ञापनदाता का ख़याल भी मुझे आया जिसे कारोबार में बड़ा घाटा हो रहा था. ऐसी और बहुत सी असंगत बातें दिमाग़ में आईं.

फिर धीरे धीरे मेरे विचारों में खलबली कम होने लगी. मैं पहले से ज़्यादा चैन से सांस लेने लगी और फिर सहसा मुझे अपने भीतर शांति का आभास होने लगा. सूक्ष्म ध्वनियां भी मेरी पकड़ में आने लगीं—जैसे रेफ़्रिजेरेटर की घरघराहट, कुत्ते का अपनी दुम को फ़र्श पर तड़ाक तड़ाक मारना, बर्फ़ जमी टहनी का खिड़की को बार बार छूना. फिर प्रेम की उष्णता का मझे आभास हुआ. उसे अभिव्यक्त करने का कोई और ढंग मुझे नहीं आता. फिर वह हवा और वह जगह जहां मैं बैठी थी, बदलती सी महसूस हुई, वैसे ही जैसे किसी प्रियजन के आ जाने पर आप के घर का सारा वातावरण बदल जाता है.

५० मिनट बाद कहीं जा कर मैं वास्तव में प्रार्थना शुरू कर पाई. तब मुझे लगा कि आम तौर पर जिस हड़बड़ी में प्रार्थना के बोल मेरे होंठों से निकलते थे, वैसे बोल नहीं थे ये और न उस प्रार्थना में कोई मांग थी.

हम से हमेशा कहा गया है कि ईश्वर हमें प्यार करता है. उस सर्द फ़रवरी की सुबह मैं ने उस प्रेम को महसूस किया. वह अपार प्रेम इतना अभिभूत कर देने वाला था कि लगभग १५ मिनट तक मैं चुपचाप बैठी उस की असीम अनुकंपा का यशोगान करती रही.

फिर बेटे का लगाया अलार्म बज उठा और कुत्ता धीरे से गुर्राया. एक सामान्य दिन शुरू हो गया था, लेकिन इस दिन सारे समय उस प्यार की याद मुझे गरमाती रही.

अगले रोज़ घर पहले से अंधेरा और ठंडा प्रतीत हुआ. ठिठुरती मैं उठ खड़ी हुई.

एक एक दिन कर के छः वर्ष बीत गए.

इस बीच संकट की कई घड़ियां आईं. एक किशोर बेटे ने मुसीबत खड़ी कर दी, वैवाहिक जीवन में अशांति आई और व्यापार में ज़बरदस्त आर्थिक हानि हुई. संकट के हर दौर में ईश्वर के सान्निध्य में बिताए एक घंटे में मुझे हमेशा आत्मिक शांति प्राप्त हुई है. उस एक घंटे में मुझे हर बात को उस के सही परिप्रेक्ष्य में रखने का और ईश्वर को खोजने का अवसर मिलता है. एक बार जब मैं उसे पा लेती हूं तो फिर ऐसी कोई समस्या नहीं रहती जो सुलझाई न जा सकें.

किसी किसी सुबह तो मैं ईश्वर के चमत्कार और उस की कीर्ति से तत्काल ही सराबोर हो जाती हूं. लेकिन ऐसी सुबहें भी आती हैं जब मुझे कुछ महसूस नहीं होता. ऐसा तब होता है जब डान कैंपबेल की कही एक और बात मुझे याद आती है: "ऐसा समय भी आएगा जब तुम्हारा मन ईश्वर की शरण में नहीं जाएगा. उस समय तुम अपने ६० मिनट ईश्वर के प्रतीक्षालय में बिताओगी ख़ैर, प्रतीक्षालय हो या शरणस्थान, तुम वहां हो और ईश्वर तुम्हारे टिके रहने के प्रयत्नों की क़दर करता है. बस, महत्व है प्रतिबद्धता का, लगन का."

मेरे अच्छे जीवन का यही कारण है. घंटे भर की प्रार्थना से अपना दिन शुरू कर के न केवल मेरा ख़ालीपन भर गया है बल्कि वह छल छल छलकने भी लगा है. *

'कैथोलिक डाइजेस्ट' (अगस्त ८३) से संक्षिप्त. कापीराइट १९८३. बारबरा, बार्टोसी.
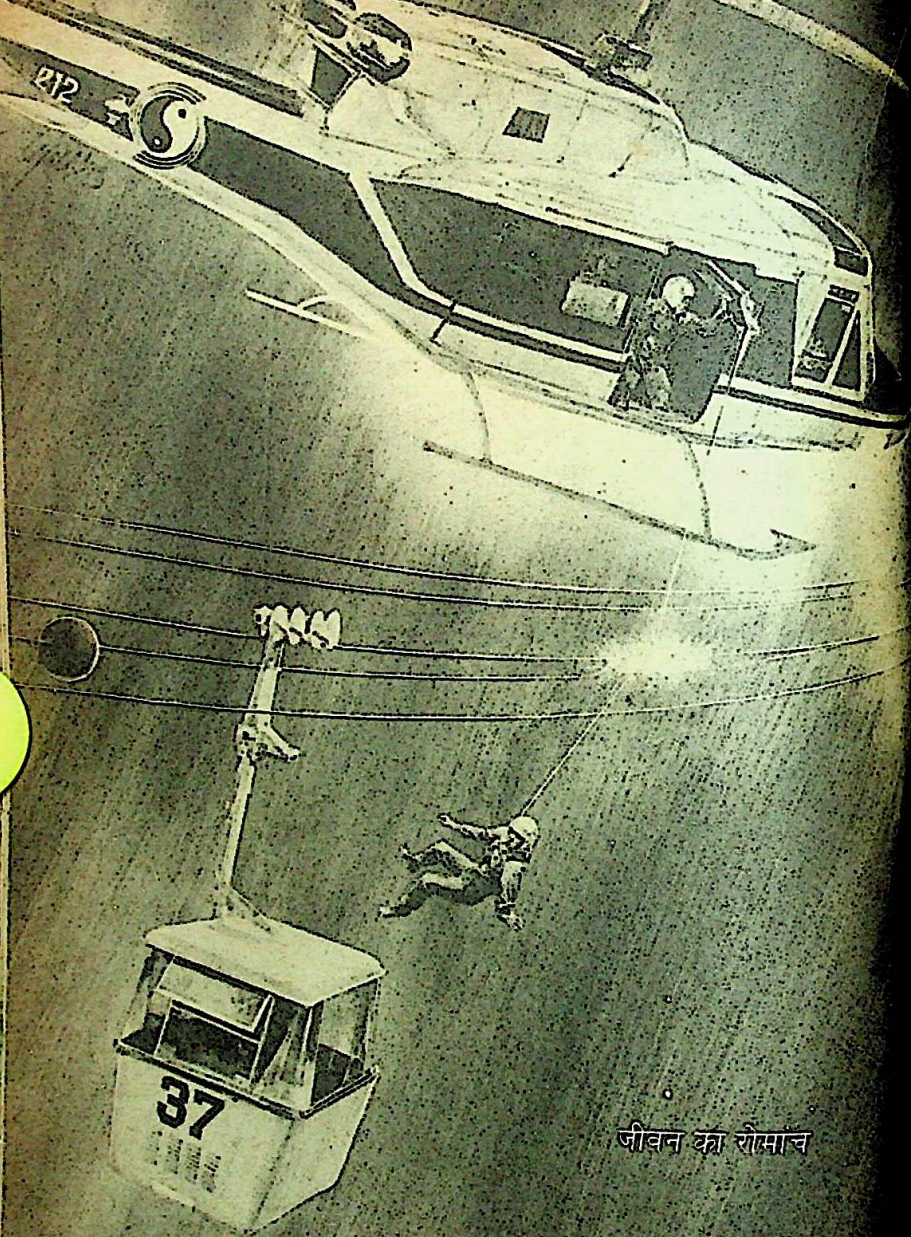
जीवन का रोमांच

सात आदमी पहले ही कूद कर मौत के मुंह में पहुंच चुके थे. १३ और लोग सिंगापुर बंदरगाह से ५६ मीटर ऊपर रुकी केबल कारों में सिमटे पड़े थे. किसी भी क्षण उन की कारें केबलों से अलग हो कर नीचे समुद्र में गिर सकती थीं

रिचर्ड ब्लेयर

# अधर में लटकती तेरह जानें

रमणीय द्वीप सेंटोसा में जैसे ही तीसरा पहर शाम में बदला, सैकड़ों सैलानी सिंगापुर पहुंचने के लिए केबल कार स्टेशन की ओर चल दिए. केबल कार से सिंगापुर की दूरी पौने दो किलोमीटर थी. शनिवार का दिन था. तारीख़ थी २९ जनवरी १९८३. काली घटाएं घिर रही थीं. हर कोई बारिश से पहले घर पहुंच जाना चाहता था.

शाम ५.५० पर एक भारतीय परिवार के सात सदस्य शोख़ लाल रंग की केबल कार में सवार हुए. कार दक्षिण चीन सागर के ऊपर हवा में रवाना हो गई. सिंगापुर बंदरगाह के हरिताभ पानी से ५६ मीटर ऊपर बुलबुले के आकार वाली कार का दृश्य विस्मयकारी था. केबल कार के भीतर २५ वर्षीय मनमोहन कौर, उस की ६० वर्षीय सास प्रीतम कौर, ४३

वर्षीय ननद हरभजन कौर, ४४ वर्षीय ननदोई महिंदर सिंह बंदरगाह की ओर देखते हुए बातें कर रहे थे. मनमोहन कौर ने हरभजन के आठ वर्षीय बेटे जगजीत को पकड़ रखा था. मनमोहन कौर के अपने दो बेटे भी केबल कार में थे—२२ महीने का तर्सविंदर और चार साल का बलविंदर. वे दोनों नीचे जहाज़ों को खीचने वाली नौकाओं की ओर देख रहे थे.

अचानक उन की कार ज़ोर ज़ोर से डोलने लगी. जैसे ही मनमोहन कौर ने अपने से आगे वाली नीली केबल कार को ज़ोर ज़ोर से डोलते और फ़िर नीचे समुद्र में गिरते देखा, वह बुत हो गई. आगे वाली एक लाल कार खुले दरवाज़े से यात्रियों को नीचे गिराती हुई मुख्य केबल से अलग हो कर खाड़ी में जा गिरी.

मनमोहन कौर की कार ने मुख्य केबल पर पूरी तरह से कलाबाज़ी लगाई. दरवाज़ा धड़ाम से खुल गया. महिंदर ने तर्सविंदर का हाथ पकड़ रखा था. बिजली की सी तेज़ी से उस ने तर्सविंदर को दरवाज़े से परे धक्का दिया, लेकिन इस कोशिश में वह अपना संतुलन खो बैठा और सिर के बल खुले दरवाज़े से नीचे जा गिरा. प्रीतम कौर ने उछल कर अपने पोते को पकड़ा. उस का पैर फिसल गया और वह भी तर्सविंदर के साथ नीचे पानी में जा गिरी. डर और सदमे से मनमोहन कौर बेहोश हो गई.

भय और आतंक के कुछ ही क्षणों में सात व्यक्ति मौत के मुंह में चले गए थे. (तर्सविंदर की जान ज़रूर बच गई.) बाक़ी १३ केबल कारें चलनी बंद हो गईं. चार कारों में भय से स्तंभित १३ व्यक्ति थे और वे गहराते समुद्र के ऊपर असहाय लटक रहे थे.

बंदरगाह की इमारत की १४वीं मंज़िल पर स्थित पर्यवेक्षण चौकी से सिंगापुर की वायु सेना के रक्षक दल के प्रधान और रक्षा अभियान के इंचार्ज ली शीएन लूंग ने दुर्घटना का दृश्य देखा और सिंगापुर प्राधिकरण के पोत अधिकारियों से दुर्घटना का कारण जाना. समुद्र में से तेल निकालने वाला एक जहाज़ खींच कर ले जाया जा रहा था. उस की ६८ मीटर ऊंची ड्रिलिंग रिग केबल कार के मुख्य तार से जा टकराई. एक कार झटका खा कर ४२ मिलीमीटर आधार केबल से अलग हो गई और अब वह खींचने वाले उस तार से लटक रही थी जिस का व्यास २९ मिलीमीटर था. पता नहीं, वह कितनी देर केबल कार को रोक पाएगी.

हवा और बारिश आठ नौट की गति से चल रही थी. "हम कुछ भी करें, ख़तरनाक होगा," ली के एक सहायक ने चेतावनी दी.

केबल कार के यात्रियों को बड़े टोकरे में उतारने के लिए ली ने जहाज़ पर लगी एक क्रेन मंगवाई, लेकिन जब क्रेन आई तो वह बहुत छोटी निकली. अब ली ने हेलीकाप्टर वाले दो रक्षक दल बुलाए.

### "वाहे गुरु हमारी ज़रूर सुनेगा"

बिजली कड़की और सांय सांय करती ठंडी हवा ख़ाली खिड़की में से केबल कार में पहुंची. उस कार में डोरोथी जीन जिलिलैंड नाम की एक अमरीकी स्त्री और कनाडा के एक पति पत्नी थे—४३ वर्षीय जान होइसमैन और ३६ वर्षीय कैथरीन. हंसली टूट जाने से जान होइसमैन कराह रहा था और केबल कार के धातु के फ़र्श पर पसरा पड़ा था. चेहरे पर हुए घावों से कैथरीन होइसमैन के कपड़ों पर ख़ून के दाग़ लग गए थे. लाचार सी वह रो रही थी. डोरोथी जीन जिलिलैंड की बांह में चोट आई थी. दर्द को दबाते हुए उस ने अपने साथियों को ढाढ़स बंधाने की कोशिश की. लेकिन उन की

हालत पास वाली कार की अपेक्षा कम ख़तरनाक थी. पास वाली कार खींचने वाले तार से लटकी थी और उसी में मनमोहन कौर तथा उस के परिवार के बचे हुए सदस्य थे.

न्यू ज़ीलैंड वाली ऐलन ब्राउन और स्टीफ़न वेल्स उस केबल कार में थे जो सिंगापुर टर्मिनल से कोई १५० मीटर ऊपर लटक रही थी. चौथी कार में सिंगापुर वासी लेओंग सिउ केंग, हालीजाह बिंती मानफ़, लो हौक सेंग और हामिद बिन जोम थे. उन की कार सेंटोसा स्टेशन से निकली निकली ही थी और अब द्वीप के हरे भरे जंगल के ऊपर लटक रही थी.

सिंगापुर के इस युवा वर्ग ने हिम्मत बनाए रखने के लिए कोई मलय गीत गाना चाहा, लेकिन उन्हें किसी भी गीत के शब्द याद नहीं आए. अंततः उन का गायन रुदन में बदल गया.

मनमोहन कौर और हरभजन कौर प्रार्थना कर रही थीं. रोते रोते उन के गले बैठ गए थे. हरभजन के हाथ की हड्डी टूट गई थी और पीठ बुरी तरह से ऐंठ गई थी. केवल चार वर्षीय बलविंदर ही शांत था. अपनी मां और बुआ को ढाढ़स बंधाते हुए उस ने ईश्वर के प्रेम और उस प्रेम में विश्वास करने की आवश्यकता पर बल दिया. "फ़िक्र मत करो," लड़के ने कहा, "वाहे गुरु हमारी ज़रूर सुनेगा!"

### एकमात्र सहारा

आधी रात हो चुकी थी. बारिश हलकी हो गई थीं, लेकिन हवा और भी तेज़ हो गई थी, १२ नौट की गति से चल रही थी. पर्यवेक्षण चौकी पर उपस्थित अधिकारियों को डर था कि हेलीकाप्टरों से हवा का अधोप्रवाह कहीं केबल कारों को समुद्र में न गिरा दे. ड्रिलिंग रिग अभी तक केबल में फंसी थी. आधार पोत और गोदी के बीच केबल कसे गए ताकि ड्रिलिंग रिग अपने साथ सारी केबल प्रणाली को न तोड़ ले जाए.

'रेस्क्यू वन ज़ीरो' हेलीकाप्टर का चालक सिंगापुर वायुसेना का लेफ़्टिनेंट काओ यिट ची था. उस ने एक ख़ाली केबल कार के ऊपर परीक्षणात्मक उड़ान भरी, फिर वह उस संकटग्रस्त कार के ऊपर पहुंचा जिस में न्यू ज़ीलैंड वासी फंसे थे. हेलीकाप्टर से १५ मीटर नीचे विंच (खींचने वाले तार) केबल के सिरे पर काओ का विंचमैन लांस कारपोरल फूआ किम हे पेंडुलम की तरह झूल रहा था. फूआ ज़बरदस्त ख़तरा मोल ले रहा था. अगर वह कहीं केबलों में फंस गया तो लेफ़्टिनेंट काओ को विंच की केबल काटने का आदेश देना पड़ेगा जिस से बंदरगाह के पानी में गिर कर निश्चय ही फूआ की मृत्यु हो जाएगी. अगर ऐसा नहीं किया गया तो हेलीकाप्टर और उस के चार कर्मियों की जान का ख़तरा उठाना होगा.

फूआ को न्यू ज़ीलैंड वासियों की कार तक पहुंचने में १५ मिनट से ज़्याद लग गए. कार का दरवाज़ा खोल कर वह अंदर पहुंचा. बचाव साज़ पहने ऐलन ब्राउन बाहर आया. ३० सेकंड बाद जब वह हेलीकाप्टर में खींच लिया गया तो वह फ़र्श पर लेट गया और चैन की सांस लेते हुए बुदबुदाया, "धन्यवाद, सिंगापुर!"

दोनों न्यू ज़ीलैंड वासियों को अस्पताल पहुंचा दिया गया. काओ का अमला अब सेंटोसा के सब से पास अटकी कार की ओर बढ़ा और उस ने चारों भयभीत सिंगापुर वासियों को उठा कर सुरक्षित स्थान पर पहुंचाया.

बचाव के दो आसान काम पूरे हो चुके थे. अब बारी थी बाकी दो कारों में मौजूद सात व्यक्तियों की जान बचाने की. एक कार तो केवल खींचने वाले तार से लटकी थी.

इस हेलीकाप्टर का चालक था लेफ़्टिनेंट जेफ़ लेजर जो रायल आस्ट्रेलियन नेवी का सदस्य था और इस समय सिंगापुर की सशस्त्र सेनाओं में हेलीकाप्टरों के चालकों को प्रशिक्षण दे रहा था. लेजर ने 'रेस्क्यू वन वन' नामक हेलीकाप्टर को अंधेरे में ऊपर उठाया और फिर उसे उस कार की ओर ले चला जिस में अमरीकी स्त्री और कनाडा के दंपती घायल पड़े थे. तार और उस को सहारा देने वाली कंकरीट की मीनार को देख कर लेजर ने हेलीकाप्टर को मोड़ना शुरू किया ताकि उस का विंचमैन लांस कारपोरल सेल्वनाथन बग़ल से कार की तरफ बढ़ सके. जैसे ही हेलीकाप्टर ने कोणिक उड़ान भरी, लेजर की नज़रों से उस का 'होवर रेफ़रेंस' ओझल हो गया. लेजर ने यह सोच कर हेलीकाप्टर पीछे हटाया कि अब उसे अपने विंच आपरेटर स्टाफ़ सारजेंट हो त्सू केंग के निर्देशों के अनुसार काम करना होगा क्योंकि स्टाफ़ सारजेंट ही कर्मी दल का ऐसा सदस्य था जो विंचमैन और कार दोनों को देख सकता था. लेजर ने धरती से रेडियो संपर्क तोड़ दिया ताकि स्टाफ़ सारजेंट से इंटरकाम पर मिलने वाले निदेशों पर पूरा ध्यान केंद्रित कर सके.

"जेफ़, बाएं मुड़ो... और एक मीटर.. आधा..! पौन... रुको!"

११ वर्षों के चालन अनुभव के बावजूद लेजर अपने हेलीकाप्टर को हवा में कलाबाज़ी खाने से रोक नहीं पा रहा था. हवा का झोंका हेलीकाप्टर से टकराया. "पीछे हटाओ!" विंच आपरेटर चिल्लाया. जैसे ही नीचे से चिनगारियां छूटीं, लेजर की आंख में कौंध आई. सेल्वनाथन की विंच का तार केबल से छू गया था. "ऊपर उड़ो," हो चिल्लाया.

लेजर ने घड़ी देखी. वह सिर्फ़ १५ मिनट से हेलीकाप्टर संभाल रहा था, लेकिन लग ऐसा रहा था जैसे घंटों हो गए हों. उस के हाथ और कलाइयां दुख रही थीं. उस ने हेलीकाप्टर का मुंह केबल कार की दिशा में किया.

"थोड़ा सा और दाहिनी तरफ़...ठीक ...सेल्वनाथन ने कार को पकड़ लिया है. वह अंदर चला गया है!"

डोरोथी जीन जिलिलैंड और होइसमैन दंपती सुरक्षित भूमि पर पहुंचा दिए गए. अब लेजर को सब से कठिन कार्य पूरा करना था. सिंगापुर प्राधिकरण और ड्रिलिंग रिग के पर्यवेक्षकों ने सूचना दी कि आख़िरी कार के मुसाफ़िर दहशत की हालत में हैं. अगर वे अचानक हिले या विंचमैन की ओर दौड़े तो हो सकता है कि वह पतला सा केबल, जो कार को सहारा दिए हुए हैं, अलग हो जाए. लेजर ने सिर को आगे पीछे झटका दे कर गरदन की पेशियों में आए अकड़ाव को दूर किया. इस बार हेलीकाप्टर को संभाले रखने के लिए कार खींचने वाला केबल उस का एकमात्र सहारा था.

## चमत्कार

हरभजन कौर अर्धचेतन अवस्था में फ़र्श पर पड़ी थी. मनमोहन कौर बेंच पर बैठी थी. बलविंदर एक स्कार्फ़ के ज़रिए उस से बंधा था. 'मैं डर से पागल हो जाऊंगी,' उस ने सोचा.

जब हेलीकाप्टर उस ओर बढ़ा तो उस के अधोप्रवाह से केबल कार कांप उठी. मनमोहन को निश्चय हो गया कि अंत निकट है. उस ने प्रार्थना करने के लिए सिर झुका लिया. जब उस ने सिर उठाया तो उसे कारपोरल सेल्वनाथन दरवाज़े में झूलता दिखाई दिया. "मैं आप को ले जाने के लिए आया हूं," उस ने कहा. नन्हा बलविंदर बहुत शांत दिखाई दे रहा था. विंचमैन ने सब से पहले उसी को बचाव साज़ पहनाया.

"मुझे गिरा मत देना, अंकल," बलविंदर ने कहा. "होशियारी से चलना."

"फ़िक्र मत करो," सेल्वनाथन ने बच्चे से कहा. "हम हेलीकाप्टर की सवारी करने जा रहे हैं."

जब वह जगजीत को ले जाने के लिए लौटा तो नन्हा लड़का कोने में दुबक गया क्योंकि बलविंदर के जाने के बाद वहां उसे कोई हिम्मत बंधाने वाला नहीं था. सेल्वनाथन ने प्यार से कहा. "आओ, बलविंदर तुम्हारी राह देख रहा है. तुम्हारा कुछ नहीं बिगड़ेगा. आओ!" सेल्वनाथन और मनमोहन ने जगजीत को थपथपाया, फिर सेल्वनाथन ने बच्चे के सिर और बांहों में धीरे से बचाव साज़ डाला. इस के बाद सेल्वनाथन ने जगजीत को गोद में लिया. जगजीत उस के कंधे पर सिर रखे सुबक रहा था. सेल्वनाथन दरवाज़े में से पीछे हटा और हेलीकाप्टर की तरफ़ बढ़ चला.

उस के बाद मनमोहन को ऊपर ले जाया गया, लेकिन जब सेल्वनाथन दोबारा कार में आया और उस ने हरभजन को बचाव साज़ पहनाने की कोशिश की तो उस के ऐसा दर्द उठा कि हर हरकत पर चीख़ निकलती गई. वह जानता था कि लेजर कुछ मिनटों से ज़्यादा हेलीकाप्टर को संभाल नहीं पाएगा. इस लिए उस ने किसी तरह जल्दी जल्दी हरभजन को साज़ पहनाया. फिर थके हारे विंजमैन ने अपने पैरों पर खड़े होने की कोशिश की और हरभजन के निर्जीव से शरीर को दरवाज़े से ले चला.

सिंगापुर के बंदरगाह में ५६ मीटर की ऊंचाई से गिरने के बाद २२ महीने के तर्सविंदर सिंह को समुद्र की लहरों में से अब्दुल लतीफ़ नाम के एक आदमी ने निकाला. अब्दुल लतीफ़ उस समय नाव में था. जैसे ही उस ने बच्चे को पानी में गिरते देखा, वह उसे बचाने के लिए पानी में कूद पड़ा. तर्सविंदर को फ़ौरन सिंगापुर के जनरल अस्पताल में पहुंचाया गया. उसे सदमा लगा था. उस की खोपड़ी की हड्डी टूट गई थी और उस के फेफड़ों में से रक्त निकल रहा था. शुरू शुरू में उस का रक्तचाप और नाड़ी इतनी मंद थी की डाक्टरों की पकड़ में ही नहीं आ रही थी. लेकिन दस रोज़ बाद नन्हे मुन्ने के घाव ठीक हो गए और उसे उस के परिवार के पास पहुंचा दिया गया.

सारे के सारे कर्मी दल को सिंगापुर के चीफ़ आफ़ जनरल स्टाफ़ से प्रशंसा के पत्र प्राप्त हुए. उन में उन के साहस की भूरि भूरि प्रंशसा की गई थी. सिंगापुर गणतंत्र के गठन के बाद से ऐसा पुरस्कार पाने वाला जेफ़ लेजर पहला विदेशी व्यक्ति था.

चित्र : डेनिस लाइअन

## पाशविक

अपने घुटनों के आपरेशन से एक दिन पहले मैं ज़रा घबराई हुई थी. ख़ैर मैं जिस पशु चिकित्सालय में काम करती हूं वहां के मुख्य चिकित्सक यानी अपने बास से मैं ने इस बारे में सलाह मांगी.

फिर क्या था, वह बिना झिझक बोले, "अपनी चिंताओं को प्रार्थना में बदल दो, ख़ूब आराम करो और घाव को कभी मत कुरेदो."

—लीज़ा ओवेंस

# क्या यूरोप गिरता ही जाएगा?

स्काट सलीवान

**जिस महाद्वीप ने पहली औद्योगिक क्रांति का सूत्रपात किया, जो दूसरी क्रांति में फूला फला, तीसरी क्रांति से उसी के अछूता रह जाने की आशंका हो गई है**
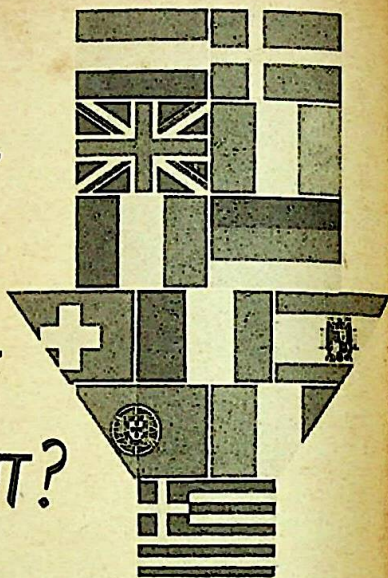
आत्म गौरव से युक्त जो प्राचीन महाद्वीप दो हज़ार वर्षों तक विश्व के इतिहास पर छाया रहा, अब निष्क्रिय होता जा रहा है. विकास के क़रीब ३० वर्षों के बाद युद्धोत्तर कालीन पश्चिमी यूरोप का आर्थिक चमत्कार कोलाहल और फड़फड़ाहट के साथ समाप्त हो गया है. विज्ञान, टेक्नाजी और वाणिज्य के क्षेत्रों में नेतृत्व अब यूरोप के हाथ में न रह कर शायद हमेशा के लिए अमरीका और जापान के पास चला गया है. यूरोप के जो लोग कभी अमरीका की आणविक छत्रछाया में अपने आप को सुरक्षित पाते थे, वे अब अमरीका के संकल्प के प्रति संदेह प्रकट करने लगे हैं. सोवियत संघ के बढ़ते जाते ख़तरे से बचने के लिए कोई यूरोपीय प्रतिरक्षा स्थापित करने में भी वे हताश हो गए हैं. फ्रांस के इतिहासकार फ़र्नां ब्रोदेल का कहना है, "जब तक हम संयुक्त राज्य यूरोप की स्थापना के विचार को फिर से जीवित नहीं करेंगे, तब तक यूरोप की अर्थ व्यवस्था की बात तो छोड़िए, हम यूरोप की संस्कृति की रक्षा करने में भी समर्थ नहीं हो सकेंगे."

किसी समय यूरोपीय आर्थिक समुदाय का जो स्वप्न स्पष्ट रूप से प्रभावशाली था, वही अब अपना मज़ाक़ ख़ुद बन गया है. यह एक ऐसा बाज़ार है जो बिलकुल ही साझा नहीं है और जो सोयाबीन तथा सूअर के मांस के दामों के तुच्छ और छोटे छोटे झगड़ों में ही उलझा हुआ है. यूरोपीय आर्थिक समुदाय दिवालिया हो गया है. ख़याल है कि अब (दिसंबर, '८४)

तक वह एक अरब २० करोड़ डालर का कर्ज़दार हो गया होगा. मार्च १९८४ में ब्रसल्ज़ में यूरोप के नेताओं का जो शिखर सम्मेलन हुआ था, वह समुदाय की पुरानी आंतरिक समस्याओं को हल करने में विफल रहा है.

"और दो! और दो!" पश्चिमी यूरोप के ह्रास को उस के ३५ करोड़ ख़ुशहाल नागरिकों ने शायद ही महसूस किया हो. यूरोपीय आर्थिक समुदाय के देशों में १९६० में जो वेतन थे, वे उस के बाद से दस गुना हो गए हैं और लोगों के रहन सहन का वास्तविक स्तर बढ़ कर चौगुना हो गया है. वास्तविक ग़रीबी अब दिखाई नहीं देती. यूरोप के लाखों बेरोज़गार भी काफ़ी अच्छी तरह से ज़िंदगी बिता रहे हैं. अपनी बेरोज़गारी के पहले साल के दौरान तो उन्हें अपने पिछले वेतन का ९० प्रति शत तक हासिल हो जाता है.

फिर भी अवनति के बहुत से सूचकांक शीघ्र ही सामने आने वाले हैं. आज २० में से एक यानी एक करोड़ ७० लाख से अधिक यूरोपीय बेरोज़गार हैं. स्पेन और नीदरलैंड में तो यह अनुपात १८ प्रति शत से भी ज़्यादा है. बड़ी संख्या में लोगों की बेरोज़गारी ने हर यूरोपीय देश के बजट पर दबाव डाला है. यही कारण है कि साठ तथा सत्तर आदि के दशकों में यूरोपीय आर्थिक समुदाय के कुल घरेलू उत्पाद में से सामाजिक योजनाओं पर होने वाले ख़र्चे ११ प्रति शत से बढ़ कर १९ प्रति शत हो गए.

दक्षिण पूर्वी एशिया के नए औद्योगिक देशों की तुलना में यूरोप के मज़दूरों का मेहनताना आसमान को छूने लगा है. दुनिया में यूरोप के मज़दूर की स्थिति सब से अधिक 'स्थिर' है (उसे नौकरी से हटाना वस्तुतः असंभव है). उस के लिए बहुत से कल्याण कार्यक्रम बने हुए हैं जिन के बारे में बढ़ती उम्र के लोग यह आशा नहीं कर सकते थे कि उन्हें वर्तमान स्तर पर बनाए रखा जा सकेगा.

फ़्रांस के अर्थशास्त्री फ्रांस्वा द क्लोज़ेत का कहना है कि यूरोप की अवनति का मुख्य कारण है – "और दो, और दो" की चाह. वर्षों से समाज का हर वर्ग प्रति वर्ष "और अधिक" पाने का आदी रहा है – अधिक वेतन, वेतन के अलावा और अधिक लाभ, नौकरी की और आधिक सुरक्षा, उन की उत्तरोत्तर बढ़ती मांगों ने कोई नवीन प्रक्रिया अपनाने के प्रयत्नों को बेकार कर दिया है तथा उद्योगों की दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति को यथावत बनाए रखा है. चूंकि कोई भी यूरोपीय देश भविष्य का पूर्वानुमान लगा कर अधिक लाभ और सुविधाएं नहीं दे सकता, इस लिए संभवतः यूरोप वासियों को हमेशा थोड़े में गुज़ारा करने का अभ्यस्त होना पड़ेगा.

विकास का अंत. मुख्य समस्या धन की कमी है. १९६३ से १९७३ तक यूरोपीय आर्थिक समुदाय के देशों की अर्थ व्यवस्था में प्रति वर्ष औसतन ४.६ प्रति शत की वृद्धि हुई. उस के बाद तेल उत्पादक देशों द्वारा तेल के दामों में वृद्धि कर देने के परिणाम स्वरूप अगले १० वर्षों में उस में प्रति वर्ष २ प्रति शत की कमी आ गई. अस्सी आदि दशक के आरंभ में यह वृद्धि बिलकुल ही रुक गई. ३० वर्षों में पहली बार लोगों के रहन सहन का स्तर गिरने लगा है.

एक एक कर के यूरोपीय देशों को संयम और सादगी का जीवन अपनाना पड़ा है. पश्चिम जरमनी ने विश्वविद्यालय की छात्रवृत्तियां और बच्चे के जन्म पर दिए जाने वाले लाभ बंद कर दिए हैं. ब्रिटेन ने

१,३०,००० से अधिक असैनिक नौकरियों को कम करने के बारे में कारवाई आरंभ कर दी है. समाजवादी स्पेन ने सेवा निवृत्त की पेंशन को फिर से ठीक करने का प्रस्ताव रखा है.

लेकिन यूरोप के आर्थिक पापों का प्रायश्चित्त करने के लिए इस प्रकार के प्रयत्न पर्याप्त नहीं होंगे. सत्तरादि दशक में सरकारों का आचरण ज़्यादातर कुछ ऐसा रहा कि निरंतर विस्तार करते रहना अनिवार्य हो. वेतनों को वास्तविक विकास से २५ प्रति शत आगे निकल जाने दिया गया, किंतु १९७५ से १९७९ तक यूरोप के कुल राष्ट्रीय उत्पादन में केवल १३ प्रति शत की ही वृद्धि हुई जबकि अमरीका और जापान में यह दर क्रमशः १९ तथा २५ प्रति शत रही.

आर्थिक क्षेत्र में निरंतर धीमी होती जा रही गति के कारण काम के प्रति रवैया में अनेक परिवर्तन आए. ब्रिटिश कारीगर जो किसी समय ईमानदारी के प्रतीक थे. अब अनुशानसहीन और बेशऊर होने में ही गौरव का अनुभव करते दिखाई देते हैं. पश्चिम जरमनी में विश्वविद्यालयों के छात्र अब अपने पाठ्यक्रम औसतन छः वर्ष से भी अधिक समय तक खींच ले जाते हैं.

ज़्यादा गहराई से देखें तो लगता है कि यूरोप के लोगों को अपने भविष्य के बारे में विश्वास ही नहीं रहा है. गत मार्च में गैलप इंटरनेशनल ने एक मत संग्रह का आयोजन किया था. उस में भाग लेने वाले फ्रांस, पश्चिम जरमनी, ब्रिटेन और इटली के लोगों ने इस बात से सहमति व्यक्त की थी कि २१वीं सदी में किसी भी यूरोपीय देश की अपेक्षा चीन, अमरीका और जापान का अधिक महत्व रहेगा. अधिकतर लोगों की यह राय थी कि अब से ३० साल बाद उन की अपनी स्थिति निराशाजनक होगी.

**भविष्य से नज़रें चुराने की कोशिश.** यूरोप के देशों में ऊर्जा और कच्चे माल की कमी है. उन्हें अपनी अर्थ व्यवस्था की रक्षा के लिए व्यापार बढ़ाने की ओर ध्यान देना होगा. यूरोपीय समुदाय के कुल घरेलू उत्पादन का एक चौथाई भाग मुख्यतः अन्य यूरोपीय देशों को निर्यात किया जाता है. इस समय शेष संसार के साथ उन का व्यापार १० प्रति शत से भी कम है.

असल में जिन अनेक क्षेत्रों में यूरोप किसी समय सब से आगे था, उन्हीं में अब वह दूसरों के मुकाबले पिछड़ चुका है. सत्तरादि दशक के मध्य में ताइवान, सिंगापुर और दक्षिण कोरिया से आए कम क़ीमत के कपड़ों ने यूरोप की सैकड़ों फ़र्मों का दिवाला निकाल दिया. हाल ही में जापान की मोटर गाड़ियों ने यूरोप के काफ़ी बड़े बाज़ार पर क़ब्ज़ा कर लिया है. यूरोप में इस समय बिकने वाले प्रति दस रेफ़्रिजेरेटरों में से एक कम्युनिस्ट पूर्वी यूरोप का बना होता है.

विज्ञान के क्षेत्र में यूरोप बहुत लंबे अरसे तक छाया रहा, लेकिन अब वह उच्च टेक्नालाजी में प्रायः हर क्षेत्र में बहुत पिछड़ गया है. उस के व्यवसायियों ने 'माइक्रोचिप' तथा सत्तरादि दशक के उत्तरार्ध में हुई क्रांतियों की ओर ध्यान नहीं दिया. पिछले पांच वर्षों में विश्व के बिजली और इलेक्ट्रानिक बाज़ार में यूरोप का हिस्सा ३० प्रति शत से गिर कर २० प्रति शत रह गया है.

कुछ नेता, विशेषकर फ्रांस के राष्ट्रपति फ्रांस्वा मितरां, यूरोप वासियों से ज़ोरदार शब्दों में यह अनुरोध कर रहे हैं कि या तो वे उच्च टेक्नालाजिकल प्रतिस्पर्धा में मिल कर

काम करें या अलग अलग बरबाद हो जाने का ख़तरा उठाएं. किंतु प्रमुख यूरोपीय उद्योगपति अपने साथी यूरोप वासियों के साथ मिल कर संयुक्त उद्यम स्थापित करने में विफल रहे.

इटालियन उद्योग के राष्ट्रीय संगठन 'कानफिंडस्ट्रिया' के महानिदेशक आल्फ्रेदो सोलुस्त्री का कहना है, "हम भविष्य से नज़रें चुराने की कोशिश करते आ रहे हैं." इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट आफ़ जियोपालिटिक्स की निदेशक मारी फ्रांस गारो का अनुमान है: "जिस यूरोप ने पहली औद्योगिक क्रांति का सूत्रपात किया और जो दूसरी क्रांति में फूला फला, वह शायद तीसरी क्रांति से सर्वथा अछूता रह जाएगा."

जापानी कंपनियों ने यूरोपीय टेक्नालाजी पर आधारित नए नए उत्पादनों द्वारा यूरोप के लोगों को बाज़ार में बार बार मात दी है. हाल ही में यूरोपीय आर्थिक समुदाय ने जापान में बने तथा लेसर से चलने वाले हाई-फ़ी डिस्क प्लेयरों पर भारी आयात शुल्क लगाया है. यह वह टेक्नालाजी है जिस में नीदरलैंड की फ़िलिप्स कंपनी संसार भर में अग्रणी थी.

पहले यूरोप को शायद यह आशा थी कि पश्चिम जरमनी यूरोप के आर्थिक पुनरुद्धार में उस की नेतृत्व करेगा, किंतु अब उसे ऐसी आशा नहीं है. पिछले तीन वर्षों में पश्चिम जरमनी की असाधारण समझी जाने वाली आर्थिक शक्ति की कमज़ोरियां व त्रुटियां प्रकट हो गई हैं. उस की विकास की दर मंद रही है. देश में बेरोज़गारों की संख्या २४ लाख हो गई है और रुर घाटी का क्षेत्र आर्थिक दृष्टि से विनाशकारी सिद्ध हुआ है. पश्चिम जरमनी के लोग उत्तर अतलांतक संधि संगठन (नाटो) के प्रति अब भी वचनबद्ध हैं, लेकिन लगता है कि वे पूर्व जरमनी के साथ अपने संबंध सुधारने के लिए उत्सुक हैं. फ्रांसीसी विश्लेषक आल्फ्रे ग्रोसे का कहना है, "हमें जो बात परेशान कर रही है, वह यह है कि जरमन विश्व समस्याओं से एकदम अलग हो जाना चाहते हैं."

**खोए हुए वर्ष.** यूरोप की समस्याओं को बहुराष्ट्रीय आधार पर हल करना होगा. इस प्रकार के प्रयत्नों की देखरेख यूरोपीय आर्थिक समुदाय को करनी चाहिए. लेकिन वह प्रगति को प्रोत्साहन देने के कार्य में बहुत बुरी तरह असफल रहा है. लक्समबर्ग के गैस्टन थार्न यूरोपीय आर्थिक समुदाय कमीशन (ब्रसल्ज़) के अध्यक्ष हैं. वे यह स्वीकार करते हैं कि यूरोपीय आर्थिक समुदाय सच्चे अर्थों में एक साझा बाज़ार क़ायम करने का न्यूनतम उद्देश्य पूरा करने में भी असफल रहा है.

जिस समय का उपयोग टेक्नालाजी की दृष्टि से कारगर नीति का विकास करने में किया जा सकता था, उसे देशों के आपसी झगड़ों में गंवा दिया गया. कोयले और इस्पात को छोड़ कर यूरोपीय आर्थिक समुदाय की अपनी कोई औद्योगिक नीति नहीं है. मार्च १९८४ तक इस का उच्च टेक्नालाजिकल अनुसंधान के लिए कोई समान कार्यक्रम नहीं था. अब भी एक देश के विश्वविद्यालय की उपाधियां दूसरे देश में मान्य नहीं हैं.

अंततः यूरोप में फिर से जीवन का संचार करने का प्रयत्न उन राष्ट्रीय नेताओं को ही करना होगा जो यूरोप की उन्नति के लिए वचनबद्ध हैं. जैसा कि यूरोपीय आर्थिक समुदाय आयोग के भूतपूर्व अध्यक्ष राय जेनकिंस ने कहा है, यह प्रयत्न "सूझबूझ से भरी उदारता" के साथ करना होगा. अजीब सी बात है कि फ्रांस के राष्ट्रपति मितरां आज यूरोप के पुनरुद्धार के लिए सब से कर्मठ

शक्ति के रूप में उभरे हैं. फ्रांस की अब तक की परपंरा यही रही है कि उस ने सदैव अपने कृषि संबंधी हितों को ही महत्व दिया है. लेकिन मितरां के नेतृत्व में फ्रांस ने कुछ कठिन समझौते किए हैं. मितरां यूरोप द्वारा कुछ मामलों में पहल किए जाने पर भी ज़ोर दे रहे हैं. उन का कहना है कि दूर संचार के मामले में कोई मान निर्धारित किया जाए और अंतरिक्ष में यूरोप के देशों द्वारा एक मानव युक्त केंद्र स्थापित किया जाए.

दुर्भाग्य से, मितरां जिस युक्ति से काम लेना चाहते हैं उस की सफलता सीमित ही है. उन की सोशलिस्ट पार्टी एक के बाद एक उप चुनाव हारती जा रही है. इस के अलावा यूरोप के बारे में उन के दृष्टिकोण का आधार अब भी यह है कि फ्रांस और जरमनी को मिल कर एक सह राज्य स्थापित कर लेना चाहिए. लेकिन इस बात की संभावना न के बराबर है कि पश्चिम जरमनी के चांसलर हेलमुट कोल, जो स्वदेश के अलावा विदेशों में भी यूरोप के प्रमुख नेताओं में सब से कमज़ोर समझे जाते हैं, यूरोप के पुनरुद्धार के लिए सह नेतृत्व कर पाएंगे.

**शांतिपूर्ण विचार.** यूरोप में भीतर ही भीतर व्यापक असंतोष फैलने का कारण यह बढ़ता हुआ संदेह है कि बुनियादी तौर पर अमरीका ने यूरोप की वैसी चिंता करना छोड़ दिया है जैसी कि वह कभी किया करता था. १९७९ में तेल के दामों में दूसरी बार भारी वृद्धि होने के बाद से विश्व व्यापार में वार्षिक वृद्धि छः प्रति शत से घट कर प्रायः शून्य हो गई. अमरीका और यूरोप के लोगों ने निरंतर सिमटते बाज़ारों में अपने आप को पहले से कहीं ज़्यादा ज़बरदस्त होड़ करते पाया है. साथ ही डालर की अत्यधिक बढ़ती कीमतें, आसमान को छूती ब्याज की दरें और अमरीका की स्पष्टतः तेज़ी से उन्नति करती अर्थ व्यवस्था ने यूरोप में लगाई गई अरबों डालर की पूंजी को ऐसे समय खींच लियां, जब उसे उस की अत्यधिक आवश्यकता थी.

फिर भी अगर शांति से विचार किया जाए तो यूरोप के भविष्य के बारे में व्याप्त वर्तमान आतंक कम हो सकता है. यद्यपि विकास की गति घट कर कछुए की चाल जैसी हो गई है, फिर भी विश्व व्यापार में पशिचमी यूरोप का हिस्सा अब भी अमरीका और जापान दोनों के संयुक्त हिस्से से ज़्यादा है. यूरोंप के विश्वविद्यालय और अनुसंधान संस्थान अब भी बहुत से क्षेत्रों में सब से आगे हैं.

यूरोप का एक सब से ज़बरदस्त तुरुप का पत्ता शायद यह है कि इस के नेता भविष्य के बारे में एक हो कर चिंतन कर रहे हैं. मुद्रास्फीति और बेरोज़गारी के दबावों ने सरकारों को ऐसी आर्थिक नीतियां अपनाने के लिए विवश कर दिया है जिन से वे पचासादि दशक के बाद पहली बार इतने निकट आए हैं. जापानी माल के आयात ने यूरोप की कमज़ोरियों की ओर तेज़ी से ध्यान खींचा है और लोगों ने इस मामले में स्थिति को सुधारने पर बहुत ज़ोर दिया है.

यूरोप की अवनति के कुछ मूल तत्व अवश्यंभावी थे. पुराना महाद्वीप अब विश्व पर फिर से वैसा प्रभुत्व स्थापित नहीं कर सकता जैसा कि उस ने अपने औपनिवेशिक काल में किया था. विश्व की संपदा में यूरोपीयों का हिस्सा आगे भी कम होता जाएगा. सैनिक दृष्टि से अमरीका और सोवियत संघ का महत्व कहीं अधिक रहेगा.

# श्रेष्ठ कौन स्त्री या पुरुष ?

**जो डरडन स्मिथ और द्यान द सीमोन**

हर शक्ति के साथ कोई न कोई दुर्बलता भी जुड़ी हुई है. इसी तरह हर लाभ या सुविधा के साथ कोई न कोई हानि या असुविधा भी जुड़ी रहती है. विज्ञान ने स्त्री और पुरुष में भिन्नताओं के जो नए प्रमाण उपस्थित किए हैं, उन से सिद्ध हो गया है कि स्त्री और पुरुष एक दूसरे के लिए पूरक और अपरिहार्य हैं

वैज्ञानिक अब इस बात को समझने लगे हैं कि स्त्री और पुरुष दोनों में जहां अलग अलग विस्मयजनक शक्तियां हैं, वहीं उन के साथ आश्चर्यजनक दुर्बलताएं भी क्यों जुड़ी हुई हैं. स्त्री की प्रतिरक्षक प्रणाली पुरुष की तुलना में अधिक जटिल क्यों है और उस से उस के शरीर की रक्षा होने के स्थान पर उस का बुरा होने की आशंका क्यों रहती है. आम तौर पर पुरुष गणित के मामले में अधिक होशियार क्यों हैं और कामेच्छा जाग्रत होने पर वे इतने अधिक विचलित क्यों हो उठते हैं अथवा वे मानसिक दृष्टि से अधिक रुग्ण क्यों होते हैं. स्त्रियां बातचीत करने अथवा भाव प्रदर्शन द्वारा अपनी बात प्रकट करने में अधिक समर्थ होते हुए भी अकसर भयभीत और उदास क्यों रहती हैं. बौद्धिकता के दोनों सिरों पर पुरुष ही क्यों अधिक दिखाई देते है – यानी मंदबुद्धि भी वे ही होते हैं और प्रतिभाशाली भी.

स्त्रियों और पुरुषों में अलग अलग विशेषताएं और सुरक्षा की प्रणालियां क्यों हैं और उन्हें अलग अलग क़िस्मों के ख़तरों का सामना क्यों करना पड़ता है, इस पर पूरी तरह प्रकाश डालने के लिए अभी बहुत सी बातों का पता लगाना होगा, किंतु इस संबंध में कुछ महत्वपूर्ण बातें निश्चित रूप से मालूम की जा चुकी हैं.

**हृदय का मामला.** आइए, सब से पहले हृदय रोग को लें. उदाहरण के लिए अमरीका में चार करोड़ २० लाख लोगों को दिल का या रक्त वाहिनी का कोई न कोई रोग है. दिल का दौरा ज़्यादातर पुरुषों को ही पड़ता है. पुरुष कह सकते हैं, "अरे, यह तो वातावरण और परिस्थितियों का प्रभाव है. ज़रा उस समय की

प्रतीक्षा कीजिए जब स्त्रियां भी हमारी तरह आर्थिक ज़िम्मेदारियां उठाने के लिए इतनी ही संख्या में आगे आएंगी. तब देखिएगा तनाव से उन की हालत भी हमारी ही तरह हो जाएगी."

लेकिन नहीं, अगर तीन तथ्यों की ओर ध्यान दिया जाए तो यह बात सही नहीं लगती. पहला तथ्य तो यह है कि नौकरी करने वाली स्त्रियां आम तौर पर नौकरी न करने वाली स्त्रियों से अधिक स्वस्थ होती हैं. दूसरा तथ्य यह है कि स्त्रियां अपने प्राकृतिक हारमोन यानी एस्ट्रोजन के कारण हृदय रोग के सर्वाधिक प्रचलित रूप से बची रहती हैं. तीसरा तथ्य यह है कि पुरुषों की तुलना में उन में मानसिक तनाव को बरदाश्त करने की सामार्थ्य अधिक होती है. ऐसी स्थिति में जहां उन के शरीर की रासायनिक क्रियाएं पुरुष से भिन्न होती हैं, वहीं उन का व्यवहार भी उन से बिल्कुल भिन्न रहता है.

जो पुरुष समय के बड़े पाबंद, कार्यशील, प्रतिस्पर्धा की भावना से युक्त और बर्हिमुखी होते हैं, उन्हें तनावों के कुप्रभावों से जल्द ही ग्रस्त हो जाने का विशेष रूप से ख़तरा रहता है. किंतु अध्ययनों से पता चलता है कि इसी श्रेणी की महिलाओं को जब कार्य से संबंधित समस्याओं को हल करना पड़ता है तो पुरुषों की तरह न तो उन के हृदय की धड़कन तेज़ होती है, न ख़ून का दवाब बढ़ता है और न ही ऐड्रिनेलिन (हृदय को उत्तेजित करने वाला एक पदार्थ) अधिक मात्रा में प्रवाहित होने लगता है. अगर उन का स्वास्थ्य भी पुरुषों जैसा ही हो, तो भी उन्हें दिल के दौरे ज़्यादा नहीं पड़ते.

स्त्रियां मानसिक तनाव से ग्रस्त होती हैं, लेकिन तब जब उन की भावना को ठेस पहुंचती है. उन पर कोरी समस्याओं का कोई असर नहीं पड़ता. हां, लोगों के व्यवहार का और अगर कोई उन से कुछ कह दे तो उस का असर ज़रूर पड़ता है. जब उन्हें कोई धक्का पहुंचता है, असफलता का सामना करना पड़ता है या भावनात्मक दबाव सहना पड़ता है तो वे या तो भावुक हो उठती हैं या उदास हताश हो जाती हैं.

स्त्री और पुरुष में इतनी व्यापक भिन्नता क्यों हैं? शायद इस का कारण विकास के अलग अलग ढंग के दबाव हैं. पुरुष शिकार और सेक्स के मामले में प्रतिस्पर्धी रहे हैं. इस लिए संभवतः ऐसी शारीरिक बनावट की अधिक आवश्यकता थी जो ख़तरे से जूझ सके. इस के विपरीत महिलाएं दूसरों का पालन पोषण करती हैं और सामाजिक इकाइयों का केंद्र होती हैं, इस लिए उन का बेहद भावनात्मक और दक्ष होना अधिक ज़रूरी था.

प्रयोगशाला में नर पशुओं पर शोध करने वाले वैज्ञानिकों ने यह सिद्ध कर दिखाया है कि प्रभुत्व की प्रवृत्ति का (यौन सफलता का तथा अपना एक विशाल अधिकार क्षेत्र बनाये रखने का) उच्च रक्तचाप और धमनियों की कठोरता से सीधा संबंध है और ये मानसिक तनाव के स्पष्ट सूचक हैं. किंतु इस के साथ ही उन्हों ने यह भी देखा कि सब से ज़्यादा सक्षम पशुओं में टेस्टोस्टेरोन नामक मुख्य नर हारमोन बहुत अधिक मात्रा में मौजूद थे. टेस्टोस्टेरोन से हानिकर कोलेस्टेराल की मात्रा बढ़ जाती है जिस से धमनियां कठोर हो जाती हैं. मनुष्य जाति में पुरुषों की यह एक बड़ी समस्या है.

**गणित और जैविक प्रभाव.** आइए, अब उस क्षेत्र में चलें जिस में स्त्रियां कमज़ोर प्रतीत

होती हैं. यह क्षेत्र है गणितीय तर्क योग्यता का.

स्त्रियां कह सकती हैं, "यह वातावरण और परिस्थितियों का प्रभाव है. लड़कियों को शुरू से ही यह सिखाया जाता है कि गणित लड़कों का विषय है. उन्हें गणित सीखने के लिए कोई प्रोत्साहन नहीं दिया जाता." लेकिन बाल्टीमोर (मैरीलैंड) के जांस हापकिंस विश्वविद्यालय के दो मनोवैज्ञानिकों—केमिला परसन बेनबो और जूलियन सी स्टेनली ने दिसंबर १९८० की रिपोर्ट में और फिर अप्रैल १९८१ की रिपोर्ट में यह विचार व्यक्त किया कि पुरुषों और स्त्रियों में गणितीय तर्क योग्यता में पाया जाने वाला अंतर संभवतः उन की जैविक यानी शारीरिक भिन्नताओं के कारण है. बेनबो का कहना है, "आप को मालूम होना चाहिए कि हम ने लिंग भेद के आधार पर गणित की योग्यता के बारे में पड़ताल नहीं करनी चाही थी. जांस हापकिंस विश्वविद्यालय के स्टडी आफ़ मैथेमेटिकली प्रिकोशियस यूथ (गणित की दृष्टि से अधिक विकसित बच्चों के अध्ययन के लिए विशेष दल) ने प्रतिभाशाली बच्चों के बारे में मालूम करने के लिए १९७२ से १९७९ तक छः सर्वेक्षण किए. हम स्कूलों की सातवीं और आठवीं कक्षाओं में जा कर उन बच्चों के बारे में जानना चाहते थे जिन की न केवल गणित में रुचि थी बल्कि जो इस विषय में होशियार भी थे.

"हमें कोई १०,००० बच्चे मिले, किंतु उस सर्वेक्षण में हमें एक ऐसी बात भी पता चली जिस ने हमें चौंका दिया. बात यह थी कि अधिक अंक पाने वालों में लड़कों की संख्या लड़कियों की तुलना में बहुत अधिक थी. लड़कों और लड़कियों में इस अंतर के लिए जो महत्वपूर्ण बातें ज़िम्मेदार हो सकती थीं, उन में से अनेक को दृष्टि में रख कर भी अध्ययन किया गया यानी यह भी देखा गया कि उन्हें गणित की कितनी तैयारी कराई गयी थी, उन में इस विषय के लिए कितना शौक़ पैदा किया गया था और इस के लिए उन्हें क्या प्रोत्साहन दिया गया था. लेकिन इस से कोई ख़ास फ़र्क दिखाई नहीं दिया. १९७९ के बाद हम ने २४,००० और बच्चों को ले कर अध्ययन किया. गणित संबंधी योग्यता के मामले में लड़के लड़कियों में फिर वही अंतर दिखाई दिया."

बेनबो का ख़याल था कि इस का कारण शायद वे वातावरण और परिस्थितियां हों जिन पर अभी तक ध्यान न दिया गया हो. उन्हों ने अपनी अगली जांच पड़ताल में ऐसी लड़कियों को लिया जिन्हें गणित विशेष रूप से पढ़ाया गया था और गणित सीखने के लिए प्रोत्साहित किया गया था. उन का कहना है कि इस के बाद भी परिणाम में कोई ख़ास फ़र्क नहीं आया.

बेनबो का कहना है, "इन सब बातों से यही लगता है कि स्त्रियों और पुरुषों की गणित संबंधी योग्यता में अंतर के लिए संभवतः कुछ हद तक जैविक प्रभाव ही ज़िम्मेदार हैं. ऐसा है तो शायद इस लिए है कि स्त्रियां बातचीत में अधिक निपुण होती हैं और उन के सामने जब भी कोई समस्या आती है तो वे अपनी इन्हीं दक्षताओं का (जिन का नियंत्रण मुख्यतः मस्तिष्क के बाएं भाग द्वारा होता है) उपयोग करती हैं. पुरुष केवल एक क्रम से बंध कर नहीं चलते. वे अधिक अव्यावहारिक होते हैं. वे काम में अधिक निपुण होते हैं — चाहे वह काम ऐसा हो जो उन के सामने पड़ा हो या ऐसा जिस के लिए उन्हें भागदौड़ करनी पड़े (ये ऐसी योग्यताएं हैं जिन का नियंत्रण

मस्तिष्क का दाहिना भाग करता है). पुरुष लकड़ी के खिलौनों से ले कर ब्रह्मांड तक से भी चीज़ों को अपने लिए उपयोगी बना लेना पसंद करते हैं.

बेनबो हंस कर कहती हैं, "स्त्रियां अधिक पराश्रित, अधिक आलापप्रिय होती हैं. उन पर किसी भी बात का अधिक असर पड़ता है और लोगों में उन की दिलचस्पी अधिक होती है." मस्तिष्क की बनावट से जुड़े ये विभेद इस बात को समझने में मदद दे सकते हैं कि किसी व्यवसाय में पुरुष और किसी में स्त्रियां क्यों अधिक छाई हुई हैं.

**अनिश्चित अस्तित्व.** हर शक्ति के साथ कोई न कोई दुर्बलता जुड़ी हुई है. पुरुष दौड़ भाग के कामों में और स्त्रियां बातचीत करने में बेहतर साबित होती हैं. लेकिन दोनों ही एक दूसरे के कामों में अपेक्षाकृत कमज़ोर होते हैं.

अगर आप ने कभी बच्चों को पार्टी दी हो तो देखा होगा कि लड़कियों का विकास अधिक तेज़ी से होता है और वे लड़कों की तुलना में अधिक समझदार होती हैं. वास्तव में स्त्रियों की तुलना में पुरुषों का अस्तित्व शुरू से ही बहुत अनिश्चित रहता है.

माताएं १०० लड़कियों की तुलना में १२० से १४० लड़कों का गर्भ धारण करती हैं, लेकिन इस के बाद स्थिति बदलने लगती है. गर्भावस्था के दौरान लड़कों का गर्भपात अधिक संख्या में होता है. जन्म के समय भी यद्यपि उन की संख्या लड़कियों से अधिक यानी १०० के मुकाबले १०६ रहती है, लेकिन इस के बाद उन की संख्या बराबर गिरती जाती है. लड़कियों की तुलना में लड़के अधिक संख्या में मरे पैदा होते हैं. यही नहीं, लड़कियों की तुलना में ३० प्रति शत अधिक लड़के अपने जीवन के पहले महीने में ही मर जाती हैं. और जिन बच्चों में जन्म से ही कोई बड़ा विकार होता है, उन में भी लड़कों की संख्या ३३ प्रति शत अधिक होती हैं. बड़े होने पर पुरुषों का अनुपात लड़कियों के लगभग बराबर हो जाता है. इस का सीधा मतलब यह है कि इस स्थिति के लिए पुरुषों को काफ़ी क़ीमत चुकानी पड़ती है.

इस का एक कारण यह है कि लड़कों को गर्भ में ज़्यादा बड़े परिवर्तनों से गुज़रना पड़ता है. इस से उन में गड़बड़ी पैदा हो सकती है और वे जन्म के समय लड़कियों के मुक़ाबले कम स्वस्थ होते हैं. उदाहरण स्वरूप जन्म के समय या उस के बाद लड़कों के मस्तिष्क को अगर ज़रा सा भी नुकसान पहुंच जाए तो उस का असर उन पर ज़्यादा बुरा पड़ सकता है. इस क्षति का प्रभाव अकसर दिमाग़ के उस बाएं भाग पर भी पड़ता है जो उन की भाषा संबंधी योग्यताओं को नियंत्रित करता है. लड़कियों की तुलना में लड़कों में भाषागत दोषों से प्रभावित होने की आशंका चार या पांच गुना अधिक रहती है. इसी तरह हकलाने वाली लड़कियों से लड़कों का अनुपात पांच गुना अधिक रहता है. दिवास्वप्न लेने वाले या भ्रांति का शिकार हो जाने वाले लड़कों की संख्या लड़कियों से चार गुना अधिक होती हैं. जो लड़के गूंगे हो जाते हैं या जिन को बोलना सीखने में बेहद कठिनाई होती है, उन की संख्या लड़कियों से पांच गुना होती है. और इसी तरह जिन लड़कों और लड़कियों को पढ़ने लिखने में अत्यधिक कठिनाई होती है, उन में भी लड़कों की संख्या लड़कियों से चार गुना अधिक रहती है.

प्रायः सभी हिंसापूर्ण अपराध पुरुष ही करते हैं. इस का मतलब यह है कि अपराधी प्रवृत्ति वाले व्यक्ति के मस्तिष्क के उस बाएं

भाग में कुछ गड़बड़ी है जो उस के व्यवहार पर नियंत्रण रखता है. वैज्ञानिकों ने हाल ही में एक शारीरिक प्रवृत्ति—आनुवंशिक तत्व—का पता लगाया है जिस के कारण पुरुष आम तौर पर अनेक गड़बड़ियों से पीड़ित हो जाता है, जैसे—बेढंगा व्यवहार, ज़्यादा शराब पीना और स्किज़ोफ्रीनिया नामक मानसिक रोग की प्रारंभिक स्थिति.

एडमंटन (कनाडा) के एलबर्टा विश्वविद्यालय में रोग निदान विषय के प्रोफ़ेसर और मनश्चिकित्सक पियर फ़्लोर-हेनरी का कहना है, "उत्पत्ति विषयक अध्ययनों से यह भी पता चला है कि बच्चे को गोद लेने पर उस का व्यवहार कैसा रहता है. अगर किसी बच्चे, को छोटी उम्र में ही गोद ले लिया जाए तो क्या उस समय भी इस बात की अधिक आशंका रहती है कि वह अपराधी प्रवृत्ति को अपनाने, बेढंगा व्यवहार करने और मानसिक रोग आदि के मामले में गोद लेने वाले माता पिता के बजाए अपने वास्तविक माता पिता का ही अनुकरण करेगा? इस का उत्तर है—हां. प्रकृति कुछ इस प्रकार कार्य करती है कि हम इसे अभी पूरी तरह समझ नहीं पाए हैं."

फ़्लोर-हेनरी का विश्वास है कि मनुष्य के मस्तिष्क के दाहिने भाग का विकास कुछ इस ढंग से हुआ है कि उस के सामने जो काम होता है या जिन कामों के लिए उसे भागदौड़ करनी पड़ती है, उन में उस की प्रवीणता उस की मनःस्थिति और गतिविधियों पर निर्भर करती है. इस में पुरुष के दिमाग़ के दाहिने भाग की बनावट का विशेष महत्व होता है. फ़्लोर-हेनरी के विचार में हिंसक और समाज विरोधी प्रवृत्ति के पुरुषों पर दिमाग़ के उस बाएं भाग का बहुत कम नियंत्रण होता है जो वाणी और सामाजिक प्रवृत्तियों को प्रभावित करता है.

स्त्रियों का विकास अधिक संतुलित रूप में होता है. वे बातों में तो प्रवीण होती ही हैं, मस्तिष्क के दोनों भागों पर भी उन का नियंत्रण होता है. यही कारण है कि स्त्रियां मानसिक रूप से रोगी और हिंसक प्रवृत्ति वाली अपराधी नहीं होतीं. याद रहे, जब भी स्त्रियां तनाव की स्थिति में होती हैं तो वे उदास हताश हो जाती हैं.

**भयग्रस्त महिलाएं.** सच बात तो यह है कि जिस स्थिति में पुरुष सशक्त होते हैं, उसी में महिलाओं को ख़तरा महसूस होता है. उदाहरण स्वरूप, अमरीका में प्रति वर्ष दो करोड़ व्यक्ति अवसाद ग्रस्त हो जाते हैं. उन में महिलाओं की संख्या ६० प्रति शत होती है. निःसंदेह उन के निरुत्साहित और हताश हो जाने का वास्तविक कारण उन के आसपास का वातावरण और परिस्थितियां होती हैं. किंतु इस से यह स्पष्ट नहीं होता कि पुरुषों की तुलना में स्त्रियां ही इतनी अधिक संख्या में उस विसंगति की शिकार क्यों हो जाती हैं जो उन की मनःस्थिति, गतिविधियों और कामेच्छाओं को प्रभावित करती है; या ऊंचाई, बंद जगहों सांपों आदि का भय पुरुषों की तुलना में स्त्रियों को दोगुना क्यों सताता है.

फ़्लोर-हेनरी का कहना है, "दिल का बैठना और मन में भय पैदा होना दोनों ही बातें अकसर साथ साथ होती हैं. ये मस्तिष्क के उस दाहिने भाग पर प्रहार करती हैं जो स्त्रियों में ज़्यादा नाज़ुक होता है. इन दोनों ही बातों का कारण आनुवंशिक प्रवृत्ति होती है, ठीक उसी तरह जिस तरह यह शक्ति संपन्न पुरुषों की बहुत सी विसंगतियों का कारण होती हैं.

स्त्रियों में मासिक धर्म आरंभ होने से पूर्व

भी तनाव पैदा हो जाता है. ब्रिटेन में स्त्री रोग और अंत:स्रावी विज्ञान विशेषज्ञ (एनडाक्रिनालाजिस्ट) कैथेरिना डालटन का कहना है कि मासिक धर्म आरंभ होने से पूर्व दस में से चार स्त्रियां कुछ हद तक तनाव ग्रस्त हो जाती हैं. साथ ही माहमारी शुरू होने से आठ दिन पहले और माहवारी के दौरान चार में से एक के जीवन पर इस तनाव का वहुत गंभीर असर पड़ता है. इस दौरान उन में जो लक्षण दिखाई देते हैं उन में तनाव, स्मरण शक्ति में कमी, भावनात्मक नियंत्रण का न रहना और अपराध की प्रवृत्ति में वृद्धि के अलावा दमे और मिरगी के दौरे पड़ना तथा आधे सिर में दर्द होना भी शामिल हैं.

**सुव्यवस्थित प्रतिरक्षा प्रणाली.** मन:स्थिति का पुरुषों पर उतना बुरा असर नहीं पड़ता जितना कि स्त्रियों पर मगर विषाणुओं और जीवाणुओं के जिस संसार में हम रहते हैं, उस में आम तौर पर पुरुषों को ज्यादा ख़तरा रहता है असल में उन का शरीर उतना इम्यूनोग्लोबुलिन-एम पैदा नहीं करता, जितना कि स्त्रियों का शरीर. यह ख़ून में पाया जाने वाला एक प्रकार का प्रोटीन होता है जो शरीर की रक्षा के लिए बहुत ज़रूरी होता है.

वैसे स्त्री की प्रतिरक्षक प्रणाली पुरुष की तुलना में अधिक जटिल है. आप कहेंगे—क्यों? इस का जवाब है—बच्चे. गर्भवती स्त्री को अपने भीतर नौ महीने तक ऊतकों अथवा कोशाओं के एक समूह (बच्चे) को पालना होता है. इस की उत्पत्ति और संरचना में पिता का योगदान होने के कारण यह उस के लिए विजातीय होता है, फिर भी वह अस्वीकार नहीं करती. साथ ही उसे किसी भी संक्रामक रोग से अपनी और ऊतकों के इस समूह की रक्षा करनी होती है. इस के लिए यह आवश्यक है कि पुरुष की तुलना में उस की प्रतिरक्षक प्रणाली अधिक अच्छी हो.

इस लाभ या सुविधा के साथ एक हानि या असुविधा भी जुड़ी हुई है. कभी कभी स्त्रियों की प्रतिरक्षक प्रणाली आवश्यकता से अधिक सक्षम हो जाती है और उस से जिस शरीर की रक्षा करने की आशा की जाती है, उसी पर यह प्रहार कर बैठती है. पुरुषों की तुलना में स्त्रियां गठिया आदि जोड़ों की सूजन और ल्यूपस (चमड़ी में विकार का एक रोग) जैसी जानी मानी बीमारी से लेकर कर आंख के डेले के गलगंड (एक्सोफ़्थेलमिक गायटर) और अतिगलग्रंथि (हाइपर थायरोइडिज़्म) सरीखी उन रहस्यपूर्ण बीमारियों का ज़्यादा शिकार होती हैं जिन से ग्रंथियों, हारमोनों और व्यक्ति के व्यवहार पर भी प्रभाव पड़ सकता है.

बीसवीं सदी का विज्ञान पुरुषों और स्त्रियों की अलग अलग विरासतों के बारे में अप्रत्याशित रूप से जो रहस्योद्घाटन कर रहा है, वह यह है कि आज हम जो कुछ भी हैं, वह हमारे लंबे इतिहास की वर्तमान अभिव्यक्ति है.

पुरुषों और स्त्रियों में विशेषताओं के साथ साथ कमियां भी हैं और यह स्थिति उन्हें एक दूसरे के लिए पूरक और अपरिहार्य बनाती है. कोई भी दूसरे से बेहतर नहीं है, कोई भी दूसरे से बुरा नहीं है. हमें यह बात समझनी होगी कि इस में मुक़ाबले वाली कोई बात नहीं है.

'प्लेयबाय' (मई १९८२) से संक्षिप्त, कापीराइट १९८२ प्लेयबाय. शिकागो, इलिनाय

ईर्ष्या अपनी जड़ों को आप खोखला किए जाती है. —जरमन कहावत

बर्फ़ीले इलाके में स्लेज की दौड़ सब से कठिन होती है. इसे पूरा करना सचमुच अपने आप में एक साहसिक कार्य है

# बरफ़ गाड़ी पर १६०० किलोमीटर की दौड़

'नेशनल ज्योग्राफ़िक' से संक्षिप्त

सूज़न बूचर

टेकला स्लेज (बिना पहियों की बर्फ़ पर चलने वाली कुत्ता गाड़ी) के निकट बेदम हो कर पड़ी थी. वह इतनी ज़्यादा थक गई थी कि अब एक क़दम भी नहीं चल सकती थी. मैं ने अपनी अनुभवी कुतिया को इस तरह बेदम पड़े देखा तो किस्मत को कोसने लगी.

दौड़ के पहले ही दिन आए उस ज़बरदस्त बर्फ़ीले तूफ़ान में मैं ग़लत तरफ़ मुड़ गई और अपने रास्ते से क़रीब ३० किलोमीटर परे भटक गई. सही रास्ते पर आने में मेरे चार क़ीमती घंटे बरबाद हो गए और मैं संसार की सब से लंबी कुत्ता गाड़ी दौड़ में आगे आगे दौड़ रहे प्रतियोगियों से बहुत पीछे रह गई. १६०० किलोमीटर की इस दौड़ में मेरे लिए सब से बुरी बात यह हो गई थी कि बाक़ी की दौड़ में टेकला मेरा साथ छोड़ रही थी.

अलास्का में १९७३ से प्रति वर्ष हो रही इस जानलेवा दौड़ का रास्ता वही था जो २०वीं शताब्दी के प्रारंभिक दशक में इस बर्फ़ीले प्रदेश में बनाया गया था. यह रास्ता आइडिटाराड से नोम और वहां से बर्फ़ रहित बंदरगाह स्यूअर्ड तक जाता है. पहले इस दूरी को तय करने में १२ से ३२ दिन तक लग जाते थे.

मेरा जन्म कैंब्रिज़ मासाचूसेट्स के एक

'नेशनल ज्योग्राफ़िक' (मार्च '८३). कापीराइट १९८३ नेशनल ज्योग्राफ़िक सोसायटी, वाशिंगटन डी.सी.,

फोटो : कर्बी स्मिथ

अच्छे खाते पीते परिवार में हुआ था. बचपन में मैं गरमियां मेन के समुद्र तट पर बिताया करती थी. मैं हर पल यही सीखने की कोशिश करती कि घुमक्कड़ की ज़िंदगी कैसी होती है. पालतू पशुओं में मुझे सब से अधिक प्रिय अपना कुत्ता ही लगता था.

ज्यों ज्यों मैं बड़ी होती गई, मेरी यह आकांक्षा बलवती होती गई कि मैं घर से बाहर का ऐसा जीवन अपनाऊं जिस में सिर्फ़ कुत्ते ही मेरे साथी हों. भीतर ही भीतर मुझे यह अनुभूति भी थी कि ऐसा स्थान है जहां मैं एकदम आज़ाद पक्षी की तरह उन्मुक्त विचर सकूंगी, जहां मेरा अपना परिश्रम ही मेरी सफलता का मापदंड और मेरे अस्तित्व का आधार होगा.

अपने इसी सपने को साकार करने की ख़ातिर मैं १९७५ में अलास्का आ गई. अब फ़ेयरबैंक्स से २२५ किलोमीटर उत्तर पश्चिम में स्थित तथा अपने निकटतम पड़ोसी से साढ़े छः किलोमीटर की दूरी पर बने अपने केबिन के द्वार पर खड़े हो कर मुझे अपनी स्लेज गाड़ी खींचने वाले कुत्तों के मज़बूत दल को देख देख कर ऐसा लगता है कि मेरा यह सपना उत्तरी अमरीका में सब से ऊंचे पर्वत शिखर माउंट मैकिनली (६२०० मीटर) की तरह एकदम वास्तविक और आइडिटाराड की तरह ही चुनौतीपूर्ण है.

### जीत के लिए कृतसंकल्प

तीन वर्ष तक निर्जन स्थान में रहते हुए मैं १९७८ की पहली दौड़ के लिए अपने कुत्तों को उपयुक्त प्रशिक्षण देती रही, पर मुझे १९वां स्थान ही मिला और इस तरह नाम मात्र का पुरस्कार. (एक लाख डालर यानी लगभग दस लाख रुपए की नकद पुरस्कार राशि नोम में सब से पहले पहुंचने वाले २० प्रतियोगियों में बांट दी जाती है.) अगले वर्ष में नवें स्थान पर और १९८० तथा १९८१ में पांचवें स्थान पर रही.

अब यह १९८२ की दौड़ थी और मैं उसे जीतने का पक्का निश्चय किए थी.

हर वर्ष मार्च के शुरू में होने वाली इस दौड़ की तैयारियां पिछली दौड़ समाप्त होते ही शुरू हो जाती हैं. सितंबर के शुरू में तो धुआंधार अभ्यास होने लगता है. जब तक सूरज पहाड़ी से उभर कर ऊपर आता था, मैं और मेरे कुत्ते घंटों अभ्यास कर चुके होते थे. स्लेज खींचने वाले अच्छे कुत्ते हर घंटे में २० किलोमीटर चल सकने वाले और ३० किलोमीटर दौड़ सकने वाले होने चाहिए. मेरे कुत्ते अलास्का के ही हैं. उन में ख़ूब दमख़म है और बर्फ़ीले क्षेत्र के होने से बर्फ़ पर उन के पांव कटते या गलते नहीं. उन का औसत वज़न २३ किलोग्राम और उन की टांगें लंबी तथा बदन इकहरा है.

इस के बावजूद मेरे ५० कुत्तों में से हर एक की अपनी अलग विशेषता है. मैं एक बार में स्लेज में १५ कुत्तों को जोतती हूं. पर बाकी कुत्तों को भी प्रशिक्षण दे कर तैयार रखती हूं ताकि जब भी ज़रूरत पड़े, मेरी टीम पूरी रहे. करीब १०० किलोमीटर तक दौड़ा कर दिए गए अभ्यास के बाद मैं हर शाम अपने कुत्तों में से कुछ को अपने केबिन में बुला कर उन से दिन भर के क्रिया कलाप पर 'बातचीत' करती हूं. जब मैं दिन भर के अभ्यास के लिए 'कोपायलट' की प्रशंसा करती हूं तो वह 'भौं भौं' कर के अपना आभार प्रकट करती है. जिस जिस कुत्ते का नाम मैं लेती हूं, वही पूंछ हिला कर अपनी प्रसन्नता प्रकट करता है. जब मैं यह देखती हूं कि किसी के पंजे को चोट तो नहीं आई तो टेकला और डाइक्विरी पीठ के बल लेट कर अपने पंजे ऊपर उठा कर मेरा ध्यान खींचने की कोशिश करते हैं.

फ़रवरी आ गई थी और मुझे ६८० किलोग्राम खाद्य सामग्री तथा अन्य सामान एकत्र करना था. यह सब सामान दौड़ के रास्ते में बने २४ निरीक्षण स्थलों पर रखा जाना था. कुत्तों के लिए ७५ थैलों में भर कर गोश्त व मछली

जुटानी थी. कुत्तों के पंजों को बर्फ़ के असर से बचाने के लिए ख़ास किस्म के मोज़े लेने थे. हेड लैंप के लिए अतिरिक्त बैटरियों की भी व्यवस्था करनी थी.

गोश्त छोटे छोटे टुकड़ों में कटा होना चाहिए तांकि चलते चलते आसानी से चबाया जा सके. गोमांस, शहद, वनस्पति तेल और विटामिनों तथा खनिज तत्वों से 'हनी बाल' भी तैयार कर लेने चाहिए. स्लेज में प्लास्टिक के नए कवर, काबले, चाबुक तथा थैले आदि भी लगवा लेने चाहिए.

कुत्ता गाड़ियों की दौड़ में भाग लेने के लिए मैं अपने कुत्ते कुतियों के साथ ऐंकरिज पहुंच गई थी. वहां कुल मिला कर ५४ प्रतियोगी और ७९६ कुत्ते कुतियां थे. वहां हम ने बर्फ़ भरे दुर्गम मार्ग और ख़तरनाक मोड़ों की बात सुनी. इस से मेरी घबराहट ही बढ़ी. दौड़ शुरू होने में केवल एक दिन रह गया था. कल मैं अपने कुत्ते कुतियों के साथ अकेली उस जीवन पथ पर निकल जाऊंगी जिस से मुझे बेहद प्यार है.

इस साल ऐंकरिज में बर्फ़ इतनी कम पड़ी थी कि हमें अपनी दौड़ ८४ किलोमीटर उत्तर में सेटलर्स बे से शुरू करनी थी. हर प्रतियोगी को तीन तीन मिनट बाद दौड़ शुरू करनी थी. मेरा नंबर २६वां था.

### दौड़ की शुरुआत

मेरे कुत्ते दौड़ पड़ने को इतने व्यग्र थे कि मुझ से पहले दौड़ शुरू करने वाले प्रतियोगियों को जाने देने तक दस आदमियों ने उन्हें पकड़े रखा. मेरी सहेली कैथी जोंस मेरी स्लेज में बैठी थी. उस ने इस दौड़ का ख़र्च जुटाने में मेरी मदद की थी. दौड़ के नियमानुसार शुरू में ही कोई गड़बड़ न हो जाए, इस दृष्टि से हर प्रतियोगी को दौड़ के पहले १३ किलोमीटर तक एक यात्री को अपनी स्लेज में ले जाना होता है.

आख़िर मेरी प्रतीक्षा की घड़ी समाप्त हुई और मैं ने अपनी कुत्ता गाड़ी दौड़ा दी. अभी डेढ़ किलोमीटर ही चले होंगे कि एक बर्फ़ीली पहाड़ी पर एक टूटे पेड़ से टकरा कर हमारी गाड़ी उलट गई. मैं और कैथी दोनों ही ज़मीन पर आ गिरे. कुछ खरोंचें भी आईं. पर दुर्घटना का कारण तुरंत समझ में आ गया कि हमारी गाड़ी के तीन कुत्ते अपनी अलग चाल चल रहे थे. इस के बावजूद हमें मज़ा आ रहा था. तभी मैं ने टेकला को दाईं ओर मुड़ने को कहा और वह मुड़ गई. एक एक कर के हम दो प्रतियोगियों से आगे निकल आए.

शीघ्र ही कैथी हम से अलग हो गई. अब मैं अकेली आगे बढ़ी. एक के बाद एक किलोमीटर तय होता गया. अंधेरा होते ही बर्फ़ गिरनी शुरू हो गई. एक एक कर के मैं २२ प्रतियोगियों से आगे निकल गई. अब केवल तीन प्रतियोगी ही मुझ से आगे थे.

क्रैकर, रफ़ और स्क्रीमर बुरी तरह लंगड़ाने लगे थे. कोई और गड़बड़ न होने पाए, इस विचार से मैं ने उन तीनों को हटा कर गाड़ी में चढ़ा लिया. इस से मेरे शेष कुत्तों पर ७० किलोग्राम का अतिरिक्त भार खींचने का काम आ पड़ा.

फिर भी वे बराबर दौड़ते रहे. मेरे हिसाब से अब तक स्क्वेंटना चौकी आ जानी चाहिए थी. मुझे लगा कि कोई गड़बड़ हो गई है. भोर होते ही सामने की दिशा से एक प्रतियोगी आता दिखाई दिया. उस ने आवाज़ लगाई, "लगता है, हम मार्ग से कम से कम १५ किलोमीटर दूर आ गए हैं."

मैं ने अपने कुत्तों को मोड़ा. मैं उस समय का अपना दुःख बयान नहीं कर सकती. साल भर मैं दौड़ जीतने का सपना देखती रही थी. ज़ाहिर था कि निर्धारित मार्ग पर आने के लिए यह ३० किलोमीटर की व्यर्थ की दौड़ मुझे कहीं का न रखेगी. मेरी आशाओं पर पानी फिर गया.

अब टेकला ने लंगड़ाना शुरू कर दिया था. बिना विश्राम किए ३० किलोमीटर की इस फालतू दौड़ ने उसे बेहद थका दिया था. मैं ने

उसे आगे से हटा कर कोपायलट को अली के साथ लगा दिया.

सुवह ६:५५ पर निर्धारित समय से पूरे चार घंटे बाद मैं स्क्वेंटना की चौकी पर पहुंची. पोस्ट मास्टर डेलिया के केविन में जांच पड़ताल के बाद मैं और मेरे कुत्ते सब मशीन जैसे लग रहे थे. मैं ने उन्हें खाना दिया और फिर क्रैकर, रफ़ और स्क्रीमर को उस जगह छोड़ दिया जहां से उन्हें विमान द्वारा घर वापस भेजा जा सके. मैं ने टेकला का कंधा सहलाया. दौड़ के इस प्रारंभिक चरण में ही मैं उसे नहीं छोड़ सकती थी.

हम आगे बढ़े. ७२ किलोमीटर और आगे बढ़ने पर जब मैं फ़िगर लेक पहुंची तो मुझे लगा कि अब और आगे बढ़ना टेकला के बस के बाहर है. मेरी आंखों से आंसू झरने लगे. इस से पहले की तीनों दौड़ों में टेकला रास्ते भर मेरे कुत्तों के दल की नेता रही थी. उस ने कई बार मेरी जान बचाई थी. वह मेरे मन की बात को तुरंत जान जाती थी. लेकिन अब उसे मेरा साथ छोड़ना पड़ रहा था. लगता था वह भी मेरी ही तरह दुखी है. दूर पेड़ से बंधी टेकला निरंतर मेरी ओर देखे जा रही थी, पर वह विमान से घर जाने को विवश थी.

अब केवल ११ थके हुए कुत्तों के साथ मैं फिर नोम की ओर दौड़ पड़ी. नोम अभी १५१० किलोमीटर दूर था. मुझे मालूम था कि केवल १६ क़िलोमीटर बाद ही हमें रुकना होगा. मैं अली और कोपायलट के साथ बर्फ़ पर पड़ी थी. वे अपने शरीर मुझ से सटा कर मुझे ठंड से बचाने की कोशिश कर रहे थे, मैं भी उन के कंधे और पांव सहला रही थी. अन्य कुत्ता गाड़ियां एक एक कर के मेरे सामने से गुज़रती गईं. जीतने का मेरा संकल्प ढीला पड़ने लगा. फिर भी मैं ने हिम्मत नहीं हारी.

मैं ने फिर दौड़ शुरू की. अब मैं सिर्फ़ रोन चौकी पहुंचने की बात सोच सकती थी. वहां मेरे लिए २४ घंटे तक विश्राम करना ज़रूरी था. दौड़ के इन पहले दो दिनों में मैं केवल चार घंटे ही सो पाई थी.

### बाधा पर बाधा

जब हम रेनी दर्रे की सीधी चढ़ाई पर चढ़ने लगे तो मैं यह सोच कर स्लेज से उतर गई कि इस से कुत्तों को मेरा भार नहीं ढोना पड़ेगा. लेकिन मैं ने अपने कुत्तों की शक्ति को बहुत कम आंका था. वे शीघ्र ओझल हो गए.

दस किलोमीटर तक मैं उन के पीछे पीछे उसी दिशा में भागती रही. आख़िर एक मोड़ पर मेरे कुत्ते मुझे दिखाई दे गए. मेरी गाड़ी उलटी पड़ी थी, पर सुरक्षित थी. उन्हों ने भौंकना और पूंछ हिलाना शुरू कर दिया, मानो कह रहे हों, "तुम कहां थीं?" हम शाम को ५:०१ पर रोन पहुंचे. हमें सेटलर्स बे से चले दो दिन हो गए थे.

२४ घंटे के विश्राम और चार गरमागरम खानों के बाद मेरे दल के कुत्ते दौड़ने के लिए व्यग्र थे. दौड़ में बने रहने का मेरा संकल्प और भी दृढ़ हो गया था. पंजे घायल हो जाने के बावजूद जिमी भी स्लेज खींचने को बेचैन था. मैं निरंतर उस के पंजों पर दवा लगा रही थी.

बर्फ़ गिरने में और तेज़ी आ गई थी. इस से रास्ते के निशान मिटते जा रहे थे. मैं ने दौड़ जारी रखी और आख़िर हम इस दौड़ में सब से आगे रहे लोगों तक पहुंच ही गए. वे बर्फ़ में रास्ते से भटक गए थे और दिन निकलने की प्रतीक्षा कर रहे थे.

अब तक दौड़ में भाग लेने वाले हर व्यक्ति को बस अपनी अपनी पड़ी थी, मगर अब हमें मिल कर काम करना था; गहरी बर्फ़ में से रास्ता बनाने के लिए हमें बारी बारी से काम करना था. हां, रास्ता बनते ही हम फिर से दौड़ शुरू कर सकते थे.

हम लोग इसी तरह बर्फ़ में रास्ता बनाते हुए धीरे धीरे आगे बढ़ते रहे. हम ने ५६८ किलो-मीटर की दूरी साढ़े चार दिन में तय की. आख़िर आसमान साफ़ हुआ, लेकिन तापमान गिर कर शून्य से ४३ अंश सेलशियस नीचे चला गया. मैं अकेली ही युकोन नदी के जमे हुए पानी पर अपनी गाड़ी दौड़ा रही थी. अजीब मुसीबत थी. यदि मैं इसी तरह स्लेज दौड़ाती रही तो मेरे पैरों को पाला मारे जाने का डर था और अगर गाड़ी से उतर कर उस के पीछे पीछे भागती तो उस से मेरे फेफड़े ख़राब हो सकते थे. इस लिए मैं ने बीच का रास्ता अपनाया. मैं कुछ देर गाड़ी में रहती और कुछ देर नीचे बर्फ़ पर दौड़ती. इस बीच जिमी के पंजे और ख़राब हो गए. आख़िर मुझे उस को गैलीना में छोड़ना पड़ा.

एक भीषण बर्फ़ीले तूफ़ान ने एक बार फिर रास्ते के सब चिह्न मिटा डाले. दौड़ में अग्रणी हम लोग फिर एक हो कर बर्फ़ काट काट कर रास्ता बनाने लगे. क़रीब ८० किलोमीटर की दूरी तय कर हम ने रात एक तंबू में बिताई.

अगले पूरे दिन दौड़ लगा कर हम अनैलैकलीट पहुंचे. यह स्थान नोम से केवल ४३६ किलोमीटर की दूरी पर है. पर मौसम फिर ख़राब हो गया था. ९५ किलोमीटर प्रति घंटा की रफ़्तार से तूफ़ानी हवाएं चलने लगीं. दिखाई देना एकदम बंद हो गया. मेरे साथ साथ कुत्तों की आंखें भी बर्फ़ के कारण बंद होने लगीं. मैं रुक रुक कर उन की आंखें साफ़ करती और उन के पंजों पर भी नज़र डालती.

### अंतिम चरण

इसी तरह दौड़ते दौड़ते आधी रात हो गई. हेड लैंप के बावजूद मुझे उस निर्जन और आकारहीन प्रदेश में रास्ते का निशान बनाने के लिए खड़ी की गई लकड़ी की तिपाइयां तक दिखाई नहीं दे रही थीं. एक एक तिपाई टटोलते टटोलते आख़िर मैं शाकटूलिक पहुंच गई. मेरे चेहरे को पाला मार गया था.

वहां लूसी साकपीलक ने अपने घर में मेरा और मेरे कुत्तों का स्वागत किया. बाहर इतनी ठंड और तेज़ हवा थी कि वे न तो आराम कर सकते थे और न कुछ खा सकते थे. हवा से उन के बरतन तक उड़े जा रहे थे.

सुबह तक तूफ़ानी हवाओं की गति १३० किलोमीटर प्रति घंटा हो गई और क़रीब दस दस मीटर बर्फ़ की तह जम गई. तूफ़ान कम होने तक मैं लगभग ५२ घंटे उसी गांव में रही. दौड़ में भाग लेने वाले कुछ और लोग भी वहां रुके हुए थे. तूफ़ान कम होने पर हम सब ने नए उत्साह के साथ फिर दौड़ शुरू की. अब ३७२

किलोमीटर की दूरी बाकी थी, पर सभी प्रतियोगी जीत के लिए दृढ़ प्रतिज्ञ थे. तूफ़ान जारी रहने के बावजूद व्हाइट माउंटेन तक हम सात प्रमुख प्रतियोगी लगभग साथ साथ रहे.

ऐसे में भारी हिमपात की मार से पीड़ित अपने टेबू कुत्ते को मुझे गाड़ी से हटाना पड़ा. अब मेरी गाड़ी में केवल ९ कुत्ते रह गए थे, जब कि एमिट पीटर्स की गाड़ी में १०, रिक स्वेनसन की गाड़ी में १२ तथा जेरी आस्टिन की गाड़ी में १४ कुत्ते जुते हुए थे. इस के बावजूद मैं उन में से किसी को विजेता नहीं मान रही थी.

मंज़िल अभी ६५ किलोमीटर दूर थी कि हमें फिर तूफ़ान ने घेर लिया. तूफ़ान का प्रकोप कम होने तक मेरा सब से अच्छा अग्रणी कुत्ता अली एक क़दम चलने लायक नहीं रहा. इस लिए मैं ने स्ट्राइप को कोपायलट के साथ लगा दिया, दोनों कुत्तों ने फिर ज़ोर मारा और हमारी गाड़ी ने तेज़ी पकड़ ली.

जल्द ही मैं पांचवें नंबर पर आ गई. अब मुझ से केवल रिक, जेरी, एमिट और अर्नी बोमगार्टनर ही आगे थे. ये भी कुछ ही क़दम आगे थे. दौड़ का अंतिम चरण शुरू हुआ. मंज़िल अब केवल ४८ किलोमीटर दूर थी. मुझ में नए उत्साह का संचार हो उठा.

मैं ने अर्नी को पीछे छोड़ दिया तथा एमिट से भी आगे निकल गई. पर एमिट मेरे एकदम पीछे बना रहा. अंतिम चौकी तक हमारी यह दौड़ इसी तरह जारी रही. यहां से मंज़िल केवल ३५ किलोमीटर दूर थी. तभी कोई चिल्लाया कि रिक और जेरी मुझ से केवल दो मिनट की दूरी पर आगे हैं. एमिट बराबर मेरे पीछे था.

तभी स्ट्राइप ढीला पड़ने लगा. मैं ने तत्काल सोचा, क्यों न मैं फिर अली को आगे ले आऊं? पर सवाल था कि क्या उसे काफ़ी आराम मिल गया है. मेरे लिए यह ख़तरा उठाना ज़रूरी था. मैं ने जल्दी से– ४० सेकंड में– कुत्ते बदले. एमिट मेरे बहुत नज़दीक आ गया. अली और कोपायलट को तेज़ी से आगे बढ़ाने के लिए मैं चिल्लाई और जैसे ही मेरी गाड़ी तेज़ी से आगे बढ़ी, मैं समझ गई कि मेरा प्रयास सफल हो गया है. एमिट फिर काफ़ी पीछे छूट गया था.

अली पहले भी मेरे साथ नोम तक दौड़ चुका था. वह जान गया था कि वह जाने पहचाने रास्ते पर आ गया है. उस ने पूरी तेज़ी दिखाई. मेरे सभी कुत्तों ने उस के नेतृत्व में पूरा ज़ोर मारा और मेरी गाड़ी तेज़ी से दौड़ते दौड़ते जेरी से आगे निकल गई. पर अभी रिक बाकी था और वह ठीक से दिखाई भी नहीं दे रहा था.

मैं ने और मेरे कुत्तों ने उस से आगे निकलने के लिए पूरा ज़ोर लगा दिया, लेकिन इस के बावजूद वह हम से ३ मिनट ४३ सेकंड पहले नोम में दाख़िल हो कर दौड़ का विजेता रहा. यह दौड़ १६ दिन में पूरी हुई. मेरे इर्द गिर्द सब लोग तालियां बजा रहे थे. मैं ने १६,००० डालर (लगभग एक लाख ६० हज़ार रुपए) का द्वितीय पुरस्कार आभार सहित स्वीकार किया. दौड़ में भाग ले रहा अंतिम प्रतियोगी १० दिन बाद मंज़िल पर पहुंचा.

वीरानगी ही अब मेरा जीवन है, और आइडिटाराड की दौड़ ही मेरा अंतिम लक्ष्य. मुझे अलास्का से प्यार है. इस ने मुझे अपने सपनों को साकार करने के अवसर दिए हैं. मेरा अब एक ही सपना है– मैं इस दौड़ में प्रथम आना चाहती हूं.

## आदमी

आदमी के लिए तर्क से बढ़ कर जुगुप्सा जगाने वाली चीज़ दूसरी नहीं हो सकती बशर्ते वह अपने पक्ष में न जा रहा हो.

—लार्ड हैलिफ़ैक्स
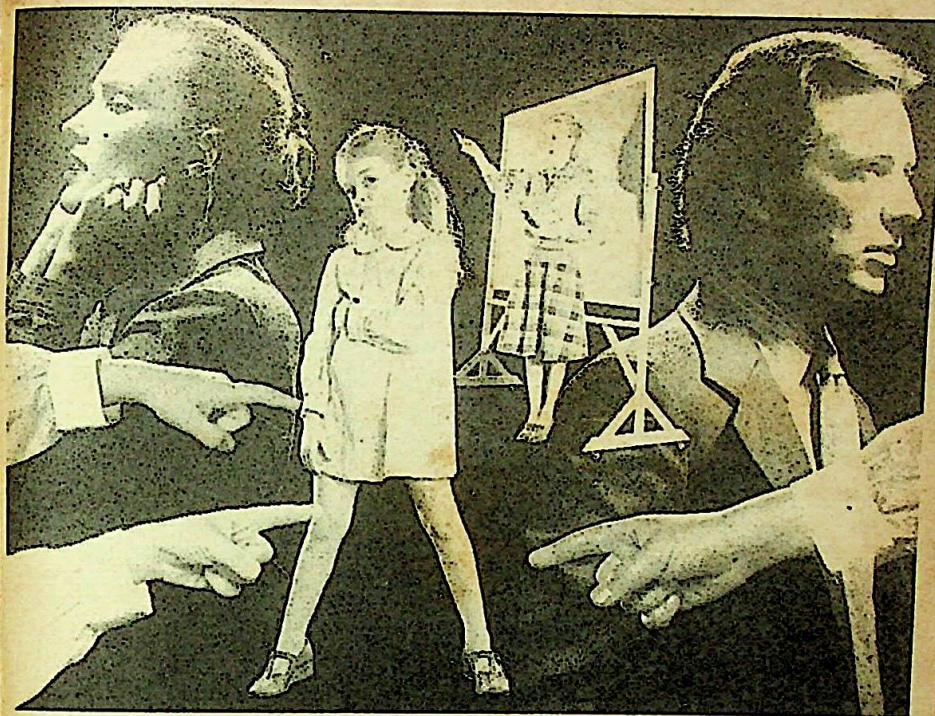
# बच्चों को कितना बताएं

*बच्चों को आत्मविश्वासी एवं पूर्ण बनाना चाहते हैं, तो उन से सच्चाई कभी न छिपाएं*

**इडा लेशान**

वह चार बरस के एक बेटे की मां थी. लेकिन दूसरी बार मां बनने वाली हुई तो अकस्मात पांचवें महीने गर्भपात हो गया. उसे गहरी ठेस लगी थी, लेकिन बेटे को वह इस परेशानी से दूर ही रखना चाहती थी. सो उस ने सीधे सपाट ढंग से बेटे को बस, इतना जता दिया कि अब उस के पेट में कोई मुन्ना नहीं पल रहा है. हां, अपने दुःख से

व्याकुल हो कर वह रोती ज़रूर थी, लेकिन तभी जब बेटा सो जाता अथवा स्कूल चला गया होता. फिर भी बेटे की उद्विग्नता बढ़ती ही गई. अब वह सुबह सुबह रोने लगता. अब वह न अपने हाथ से खाना खाता न कपड़े पहनता. तमाम दिन मां से चिपटे रहना चाहता.

मैं नें सलाह दी कि तुम लड़के को सारी बात बता दो..सुन कर बेचारी मां संत्रस्त हो उठी. बोली, "क्या कहते हो! उस चार साल के बच्चे को बता दूं कि गर्भपात क्या होता है!" लेकिन एक दिन उस ने बेटे से बात बात में पूछ लिया, "तुम क्या यह सोचते रहते हो कि जो मुन्ना आने वाला था, उसे क्या हो गया?" बेटे ने चेहरा हाथों में छिपा लिया. धीमे से बोला, "तुम यह नहीं चाहती थीं न, मां, कि मेरे ही जैसा एक और शैतान मुन्ना आ जाए."

यह किसी सच्चाई पर परदा डाल कर रखने की ही विकट प्रतिक्रिया थी. बेटा मां को कभी रोते भी नहीं देखना था, सो उस ने सोच लिया कि उस मुन्ने के चले जाने से मां को ख़ुशी हुई है. और इतना ही नहीं, उस का ख़याल था कि शायद मां ने जान बूझ कर उस मुन्ने से छुटकारा पा लिया क्योंकि वह एक और ऐसा मुन्ना नहीं चाहती, जो मेरी तरह ही कभी कभी मां को दुखी करे. सुन कर मां फूट पड़ी. उस ने बेटे को बांहों में भींच लिया और सुबकते हुए सारी बात सच सच बता दी कि मुन्ने को कैसे क्या हो गया. साथ ही उस ने बेटे को यह भी बताया कि मुन्ने के इस तरह जाने से उसे कितनी गहरी ठेस लगी है. बेटे के लिए इस सत्य को झेल पाना अपने कल्पित सत्य के मुक़ाबले कहीं ज़्यादा आसान था.

क़रीब क़रीब हर बच्चे को बचपन में ऐसी भ्रामक अनुभूतियां जकड़ लेती हैं. स्विट्ज़रलैंड के मनोवैज्ञानिक जीन पियेजेट के अनुसार, नौ दस साल की उम्र तक बच्चे हर घटना को अपने संदर्भ में ही सोचते हैं. कोई परेशान करने वाली घटना हो जाती है तो वे समझते हैं कि क़सूरवार वही हैं.

काश, कोई बता देता... मेरी एक सहेली को आज भी एक ऐसी घटना याद है. तब वह कुल सात या आठ वर्ष की थी. उस ने बताया, "एक दिन सुबह मैं बहुत परेशान हुई, क्योंकि मां रोज़ की तरह नाश्ता बनाने नहीं उठी. मेरे भाई ने मुझे खिलाया पिलाया पर उस ने मुझे कुछ बताया नहीं, सो मैं ने सोचा, शायद मां बीमार है. स्कूल जाते वक़्त विदा कहने के लिए मैं दौड़ी दौड़ी मां के कमरे में घुसी तो देखा कि पिता जी मां की बांहों पर सिर टिकाए सुबक रहे हैं. मुझे जैसे पाला मार गया. मेरे मन में यह बात जम गई कि ज़रूर मैं ने ही कोई ऐसी ग़लती की है जिस के कारण वे इस तरह से रहे हैं.

"मैं कमरे से भागी और पड़ोसी के गैरेज में जा दुबकी. अब तो मुझे पूरी तरह याद भी नहीं कि उस वक़्त मेरे मन में कितनी बुरी बुरी बातें आई थीं, जिन्हें मैं अपना क़सूर समझती थी. बस, इतना याद है कि मैं बड़ी ही त्रस्त थी. लेकिन तब मैं यह सोच ही नहीं सकती थी कि मुझ से अलग कोई और भी बात हो सकती है जिस पर मेरे पिता इतने दु:खी हो सकते हैं. वह तो युवा होने पर मुझे पता लगा कि उस दिन पिता जी के व्यापार का दिवाला पिट गया था. काश! कोई मुझे उस समय बता देता कि असल में हुआ क्या था!"

वयस्कों के पास तो बच्चों के व्यवहार को समझने के लिए बड़े साधन हैं, पर वे यह कभी नहीं सोचते कि ख़ुद उन का कोई जटिल व्यवहार बच्चों को कितनी बड़ी परेशानी और

रहस्यजाल में उलझा सकता है. हम में से अधिकांश मां बाप यही सोचते हैं कि वे अपने बच्चों को दुःख भरी सूचनाओं और कटु अनुभवों से बचा कर रखना चाहते हैं, पर हम बच्चों को 'जीवन की वास्तविकता' से तो नहीं बचा सकते. इस प्रकार के बचाव का परिणाम हमेशा उलटा होता है—बच्चे इस से और भी अधिक भ्रमित हो और आतंकित हो जाते हैं.

बाप तो बेचारा इस लिए परेशान है कि उस का महत्वपूर्ण ग्राहक हाथ से निकल गया, लेकिन उस की परेशानी देख कर बेटी यह समझती है कि गणित में उसे फिसड्डी नंबर मिले हैं, इसी लिए पिता जी इतने परेशान हैं. कोई बच्चा मां बाप को लड़ते देखता है तो उसे लगता है कि लड़ाई उसी की शैतानी की वजह से हो रही है. दांपत्य जीवन या घर की आर्थिक समस्याओं के बारे में बच्चों को जानकारी देना हो सकता है, अच्छा न लगे; परंतु अनुभवों से यही सिद्ध होता है कि बच्चों के लिए अपनी कपोल कल्पित यंत्रणा की तुलना में कठोर वास्तविकता को झेल पाना कहीं आसान है.

हम अगर यह चाहते हैं कि हमारे बच्चे अपने को भला समझते हुए आत्मविश्वास के साथ विकसित हों तो उन्हें इस सच्चाई से ज़रूर अवगत करा देना चाहिए कि बड़ों की ज़िंदगी में कितनी ही ऐसी परेशानियां भी होती हैं जिन के ज़िम्मेदार बेटा बेटी नहीं होते. उन्हें यह समझाना चाहिए कि बड़े भी कभी कभी चिंतित या भयभीत हो सकते हैं. हम यह नहीं चाहते कि बड़ों की कमज़ोरियां नन्हे बच्चों को झेलनी पड़ें, लेकिन हम उन्हें किसी भी मामले में ठीक ठीक जानकारी तो दे ही सकते हैं और साथ ही उन्हें पूर्णतः आश्वस्त कर सकते हैं कि मां बाप हर हाल में उन का ख़याल रखेंगे.

**तंग मत करना.** कभी कभी बच्चों के शोर, गंदगी तथा मांगों से हम इस कदर बौखला उठते हैं कि चीख़ पड़ने का मन करता है. इस पर हम अपने को अपराधी अनुभव करते हैं. डरते हैं कि बच्चे अपने आप को अवांछित न समझ बैठें, सो हम ख़ामोश, संजीदा तथा कर्तव्य परायण बन जाते हैं—अपने आप को धोखा देते हैं. बच्चे जानते हैं कि कुछ गड़बड़ है, लेकिन वे अपने को अपराधी समझ लेते हैं. इस ग़लतफ़हमी से अच्छा तो यह है कि बच्चे से साफ़ साफ़ कह दें कि "तुम्हारा शोर मुझे पागल कर रहा है और रसोई में फैली यह गंदगी मुझे ग़वारा नहीं. मैं कुछ देर अपने कमरे में शांत बैठना चाहती हूं. मुझे तंग मत करना."

बच्चे जिस स्थिति को समझ लेते हैं, उसे झेल भी लेते हैं. वे शोर से परेशान किसी बड़े के लिए एकांत की आवश्यकता भी समझ सकते हैं. हम जब ईमानदारी से स्वीकार कर लेते हैं कि "आज तुम लोगों की मांग पर ध्यान दे पाना मेरे लिए मुश्किल है, क्योंकि मैं तुम्हारी दादी की तबीयत के बारे में परेशान हूं" अथवा "मेरे रोने का कारण तुम नहीं हो, बल्कि मैं और तुम्हारे पापा किसी और ही समस्या से जूझ रहे हैं," तो बच्चों को अपराध भावना और भ्रामक धारणाओं के जाल से मुक्त कर देते हैं. वस्तुतः सत्य इतना घातक नहीं होता जितना बच्चों के भ्रामक अनुमान.

**तुम्हारा कसूर नहीं.** बच्चों के प्रति ईमानदार होने के साथ साथ उन्हें भी अपने बड़ों के प्रति ईमानदार बनने को प्रोत्साहित करना चाहिए. वयस्कों के व्यवहार में जो भी उलझन और आतंक पैदा करने वाली बातें लगती हों, उन के बारे में बच्चों को पूरी सूचना देने तथा ज़रूरी सवाल पूछने की छूट होनी चाहिए. उन्हें यह विश्वास होना चाहिए

कि कोई भी बात ऐसी नहीं है जो मां बाप से कहने या पूछने लायक़ न हो. जब बच्चा इतनी स्वतंत्रता अनुभव करे कि वह अपने किसी भी सवाल का जवाब पा सकता है, तभी हम उसे वास्तविकता से जूझने लायक बना सकते हैं.

अपनी असफलताओं और परेशानियों में बच्चों को हिस्सेदार बना कर ही हम उन्हें ज़िंदगी के ज़रूरी सबक़ सिखाते हैं. जब बड़े अपनी असफलताओं को स्वीकार करते हैं तो बच्चे भी अपनी कमियों को सहज ढंग से लेना सीखते हैं. बच्चों से ईमानदारी निभाने का सब से बड़ा लाभ बाद में चल कर यह होता है कि हम उन के लिए आदर्श बन जाते हैं. जिस बच्चे को हमेशा सच्चाई बताई जाती रही हो, वही अपने साथ होने वाली बातों को सच सच बताने में समर्थ हो सकता है.

एक मां के दांपत्य जीवन में समस्याएं ही समस्याएं थीं. उस ने मुझे बताया कि उस की नन्ही सी बेटी ने कितनी ही बार उसे रोते देखा. "मैं ने अपनी गुड़िया को विश्वास दिलाया कि इस में उस बेचारी का कोई क़सूर नहीं है. मैं ने उसे समझाया कि उस के पिता और मुझ में कुछ अनबन है जिसे सुलझाने की हम कोशिश कर रहे हैं. मेरी इस बात से उसे ज़रूर कुछ नया ही मिला होगा, तभी तो दूसरे ही दिन मेरी बेटी ने मुझ से कहा—मां, मैं परेशान हूं क्योंकि टोनी मुझ से ज़्यादा जूली को पसंद करता है. मैं बहुत दु:खी हूं, पर मेरे इस दु:ख के लिए तुम क़तई ज़िम्मेदार नहीं हो."

'वूमंस डे' (१२ फ़रवरी १९८०) न्यू यार्क से संक्षिप्त. कापीराइट १९८० हर्स्ट
सेशान

## भूल चूक लेनी देनी

एक अख़बार से: स्कूल के छात्रों के लिए शिशिर सत्र के पहले उदासीपूर्ण दिन की घंटी सोमवार प्रातः ८:३० पर बजेगी.

एक समाचार से : संघ के पदाधिकारियों ने हड़ताली अभिनेताओं से अनुरोध किया है कि वे अनुबंध के विधिवत लागू हो जाने तक कान से परे ही रहें.

एक विज्ञापन से : हमारे मेटीरियल मैनेजमेंट विभाग में क्रेता पद के लिए आवेदन स्वीकार किए जा रहे हैं. केवल रोग्य व्यक्ति ही आवेदन करें.

एक सूचना पट्ट से : वातानुकूलन यंत्र की मरम्मत प्रारंभ होने के कारण दफ़्तर में अगले तीन दिन तक बहुत उमस रहेगी—कृपया हमारे साथ भोगिए.

शोक सूचना स्तंभ से : क्या मछली पकड़ता था और क्या ख़ूब लग्गी लंगाता था!

# हंगरी में लाल पूंजीवाद

मास्को के नेताओं ने इन आर्थिक सुधारों की हंसी उड़ाई थी, लेकिन धीरे धीरे उन्हों ने देखा कि पूर्वी यूरोप के कम्युनिस्ट देशों में हंगरी के लोगों का जीवन स्तर सब से अच्छा हो गया है

'डेर श्पीगल' से संक्षिप्त

हंगरी में सुख समृद्धि के चिह्न : बुडापेस्ट के मुख्य व्यापारिक केंद्र वाल्सी स्ट्रीट में ख़रीदारों का जमघट

बुडापेस्ट शहर के मुख्य भाग में वात्सि स्ट्रीट और ठंडी सड़क के बीच ऐसा बाज़ार है जहां पूर्व जरमनी के शहर विटनबर्ग और सोवियत संघ के नगर व्लादीवस्तोक के लोग ख़रीदारी करने के लिए आना चाहते हैं. यहां की दुकानों पर स्थानीय मुद्रा में विदेशी वस्तुएं मिलती हैं. यहां आप फ्रांस में बनी शृंगार सामग्री, अमरीकी लौंग

फोटो : हैझम कैमरा प्रेस

प्लेइंग रिकार्ड, स्टीरियो के जापानी पुर्ज़े तथा हंगरी में बनी ऐसी वस्तुएं ख़रीद सकते हैं जो पश्चिमी देशों में बनी चीज़ों जैसी ही होती हैं.

अनेक कट्टर कम्युनिस्ट डेन्यूब नदी के किनारे बसे इस शानदार बाज़ार को एक ऐसा ख़तरनाक राजनीतिक त्रिभुज समझते हैं जो केंद्रीकृत आयोजन के प्रति पुरातनपंथी निष्ठा को समाप्त करता जा रहा है. उन्हें यह भी आशंका है कि हंगरी का यह परीक्षण कहीं सीमा न लांघ जाए.

आज हंगरी के अनेक नागरिक स्वतंत्र उद्यम की सीमा के समीप रहने लगे हैं. मात्याश क्रैव्श को ही लीजिए. ५४ वर्ष का यह कृषि इंजीनियर मोर क़सबे के पास लेनिन सहकारी समिति में काम करता है. १९८० में उसे ऐसा काम करने की अनुमति दे दी गई जिस की हंगरी के बाहर पूर्वी यूरोप के अन्य देशों के लोग कल्पना भी नहीं कर सकते. उसे राज्य की ओर से ६,००० वर्ग मीटर पहाड़ी का टुकड़ा ५० साल के लिए पट्टे पर दे दिया गया. इस इलाक़े में जंगल खड़ा था. क्रैव्श ने अपने ख़ाली समय में इस पहाड़ी ढलान पर अंगूर की बेलें लगाईं. उस का अनुमान है कि कुछ समय बाद वह प्रति वर्ष ३०,००० से ४०,००० लीटर तक शराब बनाने लगेगा. उसे वह ४० से ६० फ़ोरिंत (लगभग २० से ३० रुपये) प्रति लीटर के हिसाब से बेच सकेगा. रात में चंद्रमा की चांदनी में अंगूरों की खेती करने का ख़र्चा निकालने और कर आदि देने के बाद उस का ९०,००० फ़ोरिंत (लगभग ४५,००० रुपए) का वार्षिक वेतन दोगुने से भी अधिक हो जाएगा.

फ़ेरेंत्स तौकाच भी अपनी आमदनी बढ़ाने के लिए ख़ाली समय में काम करता है. ख़राद का काम करने वाला ४० वर्षीय तौकाच बुडापेस्ट टेलीफ़ोन फ़ैक्टरी में काम करता है. उसे कारख़ाने में प्रति सप्ताह ४२ घंटे काम करने के ६५,००० फ़ोरिंत (लगभग ३२,५०० रुपये) वार्षिक मिलते हैं. अपना काम समाप्त करने के बाद ख़ाली समय में और सप्ताहांत में वह और उस के २२ अन्य साथी कारख़ाने की मशीनें इस्तेमाल कर के ऐसे औज़ार बनाते हैं जिन की कारख़ाने में बराबर ज़रूरत पड़ती रहती है. इन हिस्सेदारों ने 'आर्थिक कार्य संघ' बना लिया है. इस संघ का एक प्रतिनिधि कारख़ाने के अधिकारियों से पुरज़ों के आर्डर लेने और अतिरिक्त समय काम करने की तनख़्वाह के बारे में बातचीत करता है. तौकाच को आशा है कि वह पूंजीवादी पद्धति के अनुसार ज़्यादा मेहनत कर के अपनी आमदनी प्रति वर्ष ५०,००० फ़ोरिंत (लगभग २५,००० रुपए) बढ़ा लेगा.

### द्वितीय अर्थ व्यवस्था

ख़ाली समय में मेहनत करने से दोनों ही पक्षों को लाभ होता है. कारख़ाना बहुमूल्य विदेशी मुद्रा बचा लेता है क्योंकि अब उसे पश्चिमी यूरोप के देशों से औज़ार मंगाने की ज़रूरत नहीं पड़ती. दूसरी ओर तौकाच ने ज़मीन का एक टुकड़ा ख़रीद कर उस पर सप्ताहांत बिताने लायक़ मकान बनाने के लिए रुपया भी बचा लिया है. टेलीफ़ोन कारख़ाने के 'आर्थिक कार्य संघ' जैसे अनेक संगठन बड़े बड़े सरकारी उद्योगों में बन गए हैं. उदाहरण के लिए चैपेल के मोटर कारख़ाने के २३ कर्मचारी ख़ाली समय में ट्रकों के लिए तेल की टंकियां बनाने का काम करते हैं. सरकारी कारख़ाने से तेल की टंकियों की सप्लाई अब तक जितने ख़र्च पर होती थी, उस की अपेक्षा ये लोग कम ख़र्च में जल्दी और बड़ी तत्परता के साथ यह काम पूरा कर

देते हैं. केवल चैपल में ऐसे ३५ संगठन काम कर रहे हैं तथा अन्य कई संगठन बनाए जा रहे हैं.

उद्योग और सेवा के क्षेत्र में सरकार द्वारा प्रेरित इस 'द्वितीय अर्थ व्यवस्था' से अब हंगरी के एक लाख से अधिक लोग लाभ उठा रहे हैं. कम्युनिस्ट पार्टी के अख़बार भी कहते हैं कि "पहल करने और जोखिम उठाने की यह भावना अवश्य पुरस्कृत की जानी चाहिए."

जिन लोगों ने अपनी ज़िम्मेदारी पर कोई काम शुरू कर के अतिरिक्त पैसा बनाने के इस अवसर से लाभ उठाया है, उन्हों ने अपने देशवासियों के रहन सहन का स्तर ऊंचा उठाने में भी हंगरी को बहुत सहयोग दिया है. आज हंगरी के लोगों का जीवन स्तर पूर्वी यूरोप के अन्य देशों के निवासियों की तुलना में कहीं अच्छा है. सोवियत संघ के लोगों को अपने पेट भरने के लिए पश्चिमी देशों से अनाज मंगाना पड़ता है और पोलैंड को पश्चिम देश खाने के पैकेट भेजते हैं, किंतु हंगरी अपनी आधी कृषि उपज निर्यात कर रहा है. पूर्वी यूरोप के अन्य सभी देश अपने नागरिकों को विदेश नहीं जाने देते, किंतु हंगरी ने तो १९८३ में ही ४,७८,००० नागरिकों को सैर करने के लिए पश्चिमी यूरोप जाने दिया.

जिन घटनाओं ने हंगरी को सोवियत बर्बरता का प्रतीक बना दिया था, उन्हें ध्यान में रखते हुए हम हंगरी की सफलता का महत्व भली भांति समझ सकते हैं. १९५६ के जन आंदोलन में हंगरी के लगभग ३,००० नागरिक मारे गए थे, सैकड़ों को फांसी पर लटका दिया गया था तथा दो लाख व्यक्ति भाग कर विदेश चले गए थे. दस वर्ष पहले जब हंगरी सरकार ने निजी उद्यमों द्वारा जनता की आम ज़रूरतें पूरी कर के फिर से जन समर्थन पाने की कोशिश की तो क्रेमलिन के नेताओं ने हंगरी की इन कोशिशों को 'गुलाश (हंगरी वालों का विशेष खाद्य) कम्युनिज़्म' कह कर उस का मज़ाक उड़ाया था.

किंतु हंगरी के आर्थिक सुधारों की सफलता ने उन का मुंह बंद कर दिया है और इस ओर ध्यान देने पर मजबूर कर दिया है. १९८१ में सोवियत कम्युनिस्ट पार्टी के २६वें अधिवेशन में सोवियत संघ के स्वर्गीय प्रेसिडेंट लिओनिद ब्रेज़नेव ने कृषि के क्षेत्र में हंगरी की सफलताओं की चर्चा की थी और कहा था कि इन सुधारों को अपनाया जाना चाहिए. पोलैंड के मार्शल ला शासक जनरल वायचेक यारूज़ेल्स्की ने तथा उस के द्वारा ग़ैर क़ानूनी घोषित सोलिडेरिटी ट्रेड यूनियन ने हंगरी के इन परीक्षणों में दिलचस्पी दिखाई है. युगोस्लाविया की कम्युनिस्ट पार्टी के अख़बारों ने भी हंगरी के आर्थिक सुधारों और कृषि के क्षेत्र में प्रभावशाली नए क़दम उठाने के बारे में लेख प्रकाशित किए हैं, हालांकि युगोस्लाविया स्वतंत्र रूप से कम्युनिज़्म पर अमल करने के कारण अन्य कम्युनिस्ट देशों की अपेक्षा अपने को सदा ऊंचे दर्जे का मानता रहा है.

### सुधारों का प्रभाव

हंगरी के प्रमुख अर्थशास्त्री रेज़्शो न्येर्श देश के आर्थिक सुधार के प्रधान शिल्पी हैं. १९६८ में उन्हों ने आर्थिक समस्याओं से संबद्ध केंद्रीय समिति के सचिव की हैसियत से अपने प्रस्ताव प्रकाशित किए थे, तब उन के ये प्रस्ताव मास्को को अवश्य ही सिद्धांत विरुद्ध लगे होंगे. इन प्रस्तावों में कहा गया था कि उत्पादन का विकेंद्रीकरण बड़े पैमाने पर होना

चाहिए. कारख़ानों के मैनेजरों को धीरे धीरे ज़िम्मेदारी सौंप दी जानी चाहिए. मांग और पूर्ति के हिसाब से चीज़ों के भावों में उतार चढ़ाव आना चाहिए. मुनाफ़े का भी ध्यान रखा जाना चाहिए. इन प्रस्तावों का मतलब था कि कम्युनिस्ट पार्टी के समर्थन वाले साम्यवाद में दूरगामी आर्थिक परिवर्तन क़िए जा रहे हैं.

तथाकथित 'नवीन आर्थिक प्रक्रिया' को शुरू से ही उल्लेखनीय सफलताएं मिलने लगीं. १९६८ के बाद के दस वर्षों में देश की राष्ट्रीय आय हर वर्ष ६.२ प्रति शत की दर से बढ़ने लगी. सरकारी आयोजन की ज़ंजीरों से छुटकारा पाते ही देश के कारख़ाने बाज़ार में ७ प्रति शत अधिक माल भेजने लगे. १९७१ के बाद से उद्योगों ने अधिक उत्पादकता के कारण अपनी विकास दर ५ प्रति शत वार्षिक बनाए रखी है. पांच वर्ष में ही हंगरी का विदेश व्यापार ६२ प्रति शत बढ़ गया.

इन सुधारों का सब से अधिक प्रभाव खेती पर पड़ा है. हंगरी की अर्थ व्यवस्था का मुख्य आधार आज भी कृषि ही है. स्तालिन के ज़माने के सामूहिक फ़ार्मों को 'कृषि उत्पादन सहकारी समितियों' में बदल दिया गया. ये समितियां ऐसे चुने हुए प्रशिक्षित लोगों के हवाले कर दी गईं जो स्वयं निर्णय ले सकते हैं. सरकार कृषि उत्पादनों की इतनी क़ीमत देती है जिस से लागत पूरी हो जाती है. कृषि उत्पादन सहकारी समितियां उद्योगों तथा सेवा क्षेत्र की मांग पूरी करने के लिए तरह तरह की चीज़ें भी बना सकती हैं. आज इन कृषि सहकारी समितियों की कार्यशालाओं में कंप्यूटर के रिले अथवा टेलीविज़न सर्किट बनते देखना मामूली बात हो गई है.

कृषि उत्पादन सहकारी समितियों में कृषि उत्पादन का निश्चय वैज्ञानिक पद्धति से किया जाता है. देज़्शो लाज़ार का कहना है कि "कृषि वैज्ञानिक हमारे खेतों की उर्वरक भूमि की परीक्षा करते हैं. वे यह भी देखते हैं कि ज़मीन के अंदर पाला कहां तक पहुंचता है. कृषि वैज्ञानिक कोई फ़सल बोने का सुझाव देने से पहले यह भी देखते हैं कि वहां कितने दिन धूप निकलती है और कितने दिन वर्षा होती है." लाज़ार कापेल्नोशन्येक में ४,५०० हेक्टेयर के आदर्श कृषि फ़ार्म की देखरेख करते हैं. संसार के अत्यधिक उपजाऊ फ़ार्मों में इस की गिनती होती है. यहां हंगरी में विकसित किए गए संकर बीज से एक हेक्टेयर में ६.४ टन गेहूं पैदा होता है (सोवियत फ़ार्मों में गेहूं की औसत पैदावार १.४ टन है). अनाज के बीज फ़्रांस, युगोस्लाविया और अमरीका से मंगाए जाते हैं. पश्चिम जरमनी और अमरीका से कुछ मशीनें भी मंगाई जाती हैं.

### आयात नहीं, निर्यात

कई वर्षों से हंगरी को विदेशों से गेहूं नहीं ख़रीदना पड़ा है. इस के विपरीत १९८३ में ही हंगरी ने ८६ अरब फ़ोरिंत (लगभग ४३ अरब रुपए) मूल्य के अनाज और अन्य कृषि उत्पादनों का निर्यात किया जिस में से दो तिहाई से अधिक भाग का मूल्य डालरों में मिला. इसी प्रकार मांस के कुल अंतरराष्ट्रीय निर्यात में ५ प्रति शत से अधिक भाग हंगरी का था. ट्यूलिप के फूलों की जो डोंडियां हालैंड अपने नाम से निर्यात करता है, उन में से कुछ हंगरी के हरितगृहों में उगाई जाती हैं.

१९७३ के प्रथम तेल संकट के कारण सुधारों की गति धीमी हो गई, पर रुकी नहीं. हंगरी के निवासियों ने उस संकट का तथा १९८२ के तेल संकट का भी मुक़ाबला किया. १९८२ के तेल संकट के कारण हंगरी पर पश्चिमी देशों का आठ अरब डालर का क़र्ज़

हो गया था. दोनों ही अवसरों पर देश के नेताओं ने पश्चिमी देशों के आयात पर पूरी तरह पाबंदी नहीं लगाई. इस के बजाए उन्हों ने उद्योगों में पूंजी निवेश पर नियंत्रण लागू किया, घरेलू बाज़ार को दी जाने वाली सरकारी आर्थिक सहायता घटाई, खाने पीने की कुछ वस्तुओं के भाव धीरे धीरे २० प्रति शत तक बढ़ाए तथा ईंधन की कीमत और किराए १०० प्रति शत तक बढ़ाए. रेज़्शो न्येर्श का कहना है, "यदि हम अंतरराष्ट्रीय मंडी में अपना अस्तित्व बनाए रखना चाहते हैं तो हमें बाज़ार की उथल पुथल का अभ्यस्त होना ही पड़ेगा."

विदेश व्यापार के क्षेत्र में पूर्वी यूरोप के देशों में से हंगरी की फ़र्मों ने ही सब से पहले पश्चिमी देशों की कंपनियों का सहयोग प्राप्त कर विश्व व्यापार के उतार चढ़ाव का मुक़ाबला किया. इन दिनों लगभग १,००० कंपनियां पश्चिमी देशों के सहयोग से चलाई जा रही हैं. इन में से तीन चौथाई कंपनियों को पश्चिमी देशों की टेक्नालाजिकल जानकारी भी दी गई है. इस तरीक़े से हंगरी ने अपना आयात घटाया है. इस के अतिरिक्त १९८२ के मुकाबले दुर्लभ मुद्रा वाले देशों को हंगरी का निर्यात १७ प्रति शत बढ़ गया है.

निजी उद्यम की भावना को और अधिक प्रोत्साहित करने के लिए १९८२ में सरकार ने घोषणा की कि सेवा करने वाले ऐसे छोटे सरकारी प्रतिष्ठान जिन में १५ व्यक्ति नियुक्त हों, पांच वर्ष के लिए ग़ैर सरकारी लोगों को पट्टे पर दे दिए जाएंगे. बुडापेस्ट में समय समय पर ऐसी नीलामी होती रहती है जिन में सरकार को सब से अधिक आमदनी की गारंटी देने वाले को कोई उद्योग आदि अपनी इच्छानुसार चलाने का ठेका दे दिया जाता है. इस उद्योग से प्राप्त मुनाफ़े में से कर आदि देने के बाद जो रुपया बच रहता है, वह ठेकेदार का होता है. जो सरकारी कंपनियां नीलाम की जाती हैं, उन में से अधिकांश घाटे में चल रही होती हैं. अब तक ९,००० सरकारी फ़र्में नीलाम की जा चुकी हैं. उन में २५,००० से अधिक कर्मचारी हैं. नीलाम की जाने वाली कंपनियों की संख्या बढ़ती जा रही है. मरम्मत करने, कपड़े धोने, फ़ैशनेबल कपड़े बेचने की दुकानें और जलपान गृह आम तौर पर नीलाम कर दिए गए हैं और अब उन में आम ज़रूरत का सामान तथा अन्य सुविधाएं प्रदान करने की होड़ चल रही है.

### उद्यम युक्त समाजवाद

३६ वर्षीय यानोश किश हंगरी के प्रसिद्ध निजी उद्यमियों में से है. जून १९८२ की एक नीलामी में उस ने बुडापेस्ट के एक भूमिगत रेलवे स्टेशन पर टूटा फूटा सार्वजनिक शौचालय तथा स्नानागार चलाने के लिए तीन साल का ठेका ले लिया. उस ने सारी जगह साफ़ कराई और शौचालय की दीवारों पर टाइलें लगा कर नहाने के लिए फ़व्वारे लगवाए. बच्चों के पोतड़े बदलने के लिए मेज़ रखी, शौचालय में टायलेट पेपर रखा. इन सुविधाओं के अलावा उस ने वहां ताज़े फूल और मालिश करने की मशीन रखी, जूतों पर पालिश करने तथा लगातार संगीत जारी रहने का प्रबंध किया. पूर्व बर्लिन, बुखारेस्ट या मास्को में इन चीज़ों की कल्पना भी नहीं की जा सकती.

इस भूमिगत शौचालय-स्नानागार का इस्तेमाल करने के लिए किश प्रत्येक व्यक्ति से दो फ़ोरित (एक रुपया) लेता है. उस ने नीलामी में स्नानागार का ठेका लेने के लिए २४,५०० फ़ोरित (लगभग १२,२५० रुपए)

मासिक की बोली लगाई थी. यह राशि किसी कर्मचारी के सरकारी वेतन से छः गुना अधिक थी. किंतु बोली लगाने से पहले उस ने उपनगरीय रेलवे स्टेशन पर एक दिन बैठ कर वहां आने जाने वालों की गिनती कर ली थी. उस स्टेशन पर लगभग २०,००० लोग आते हैं. उस ने अनुमान लगाया कि अगर स्टेशन पर आने वालों में से हर दसवां व्यक्ति शौचालय-स्नानागार का इस्तेमाल करेगा तो उसे हर महीने लगभग ३०,००० फ़ोरिंत का लाभ होगा. अब तक उस का यह अनुमान ठीक निकला है और अब उस ने एक भागीदार के साथ मिल कर बुडापेस्ट के बड़े पूर्वी रेलवे स्टेशन पर भी शौचालय स्नानागर चलाने का ठेका लिया है.

हंगरी के कुछ अर्थशास्त्री अनुभव करते हैं कि सुधारों की गति तेज़ नहीं है. उन में ६० वर्षीय तिबोर लिश्का भी हैं जो बुडापेस्ट के कार्ल मार्क्स विश्वविद्यालय में उद्यमियों के अनुसंधान दल के अध्यक्ष हैं. उन का विश्वास है कि उद्यम युक्त समाजवाद का अर्थ है 'राज्य संपत्ति के बिना समाजवाद.' ऐसी व्यवस्था में व्यक्ति या व्यक्तियों के समूह अपने अपने व्यापार चलाने में एक दूसरे के साथ प्रतिस्पर्धा कर सकते हैं. इस दिशा में पहला क़दम ठेके पर कोई काम देना होगा. सरकार इस पद्धति को इन दिनों आज़मा रही है. किंतु लिश्का चाहते हैं कि ठेके की यह पद्धति सेवा क्षेत्र के अतिरिक्त सांस्कृतिक क्षेत्र तथा बड़े बड़े उद्योगों में भी लागू की जानी चाहिए. उन के विचारों की पहली परीक्षणात्मक प्रयोगशाला दक्षिण पश्चिम हंगरी में सेंतेश का सहकारी फ़ार्म है. यहां पर सहकारी समिति के ट्रैक्टर और ट्रक सब से ऊंची बोली बोलने वाले को दे दिए गए. ये उपकरण अब तक बेकार पड़े थे या उन का पूरी तरह से उपयोग नहीं किया जा रहा था. किंतु अब इन से ठेकेदार और सहकारी समिति को अच्छा ख़ासा मुनाफ़ा होने लगा है. इस सहकारी फ़ार्म के अध्यक्ष अब यही व्यवस्था फलों के सामुदायिक बाग़ों जैसे बड़े बड़े फ़ार्मों पर लागू करना चाहते हैं.

क्या हंगरी का आर्थिक सुधार पूर्वी यूरोप के अन्य देशों के लिए भी आदर्श है? हंगरी की कम्युनिस्ट पार्टी के नेता यानोश कादार की सदा यही कोशिश रही है कि हंगरी का उदाहरण प्रस्तुत न किया जाए.

उन्हें शतरंज खेलने का बहुत शौक है. विदेशी नीति में वे सोवियत संघ के प्रति वफ़ादार रहे हैं. वे अपने प्रिय खेल शतरंज के बारे में जो कुछ कहते हैं, उस से उन की राजनीति का आभास मिलता है: "आप को अपनी विजय बहुत धूमधाम से कभी नहीं मनानी चाहिए. हार का मुक़ाबला करना चाहिए और गतिरोध को वर्तमान समय के लिए अनुकूल अवसर समझना चाहिए. दूसरा खिलाड़ी कभी न कभी जीत सकता है और उसे जीतना चाहिए भी."

डेर श्पीगल (२७ दिसंबर १९८२) से संक्षिप्त. कापीराइट १९८२ डेर श्पीगल, २००० हैंबर्ग ११, ब्रांडस्त्विते १९/ओस्तवेस्ट स्ट्रासे, पश्चिम जरमनी

## पति उवाच

मेरे पति हमारी डाक पेटी से डाक निकालने गए और मुट्ठी भर लिफ़ाफ़े ले कर लौटे तो बोले: हां जी, दो तो हैं 'भुगतान कीजिए', चार हैं 'भेज दीजिए' और तीन हैं 'ख़रीद लीजिए'.

— मार्गी

सर्वोत्तम पुस्तक

# सिर उठा के जियो

स्वयं लेखक द्वारा अंकित सुंदर कलाकृति

**तोमीहिरो होशीनो**

'प्रेम : नरक की गहराइयों से'

से संक्षिप्त

मां तथा पत्नी के बीच पहिए वाली कुरसी पर तोमीहिरो होशीनो

# सिर उठा के जियो

तोमीहिरो होशीनो

२४ वर्षीय तोमीहिरो होशीनो को जूनियर हाई स्कूल में नियुक्त हुए दूसरा महीना बीत रहा था. वह छात्रों में बड़ा लोकप्रिय था. उन जैसा ही नवयुवक, उत्साही, और हंसमुख. भविष्य उसे बड़ा ही उजला लगता था — उछाह, आशा और उद्देश्य से भरपूर.

लेकिन एक दिन हवा में कलाबाज़ी कैसे खाई जाती है, यह दिखाते हुए तोमीहिरो होशीनो सिर के बल गिर पड़ा, और उस की गरदन टूट गई. उस एक क्षण में जीवन का सारा नक्शा ही बदल गया

यह दर्द भरी कहानी तोमीहिरो होशीनो ने स्वयं नमदे की नोक वाली क़लम दांतों से पकड़ कर सात महीनों में लिखी है. इस में दस वर्ष की घटनाओं को दरसाया गया है — दुर्घटना से ले कर भीषण विषमताओं से जूझते हुए अंततः एक प्रतिभाशाली चित्रकार के रूप में उस के पुनरोदय तक की प्रेरणादायी गाथा

जून १९७० की १७ तारीख़. काफ़ी देर से पड़ती बारिश आख़िर थम ही गई. अंधियारे सार्वजनिक सेवा कक्ष की खिड़कियों के उस पार बादलों से मुक्त धुला धुला नीला आकाश इशारे से बुलाता सा लगा. मैं ने जब से ताकासाकी शहर के कुरागानो जूनियर हाई स्कूल में पी टी प्रशिक्षक का कार्य संभाला था, तब से एक बार भी अपने कपड़े धोने का समय नहीं मिल पाया था. तो भी इस समय इस अंधियारे सार्वजनिक सेवा कक्ष में तमाम मैले कपड़े पांव के पास एक थैले में धरे कपड़े धोने की मशीन के सामने मैं ने अपने आप से कहा – 'इस समय तो मुझे व्यायामशाला में अपने छात्रों के साथ कसरत में जुटा होना चाहिए!' और मैं थैला वहीं फ़र्श पर छोड़ कर व्यायामशाला की ओर दौड़ चला.

व्यायामशाला चहचहाती आवाज़ों और पांवों की भारी धमक से गूंज रहा था. लगता था मानो वहां अथाह शक्ति की लहरें उमड़ रही हों. छात्रों ने मुसकरा कर मेरा स्वागत किया. मैं भी लड़कों की उस क़तार में खड़ा हो गया जहां वे छलांग की कलाबाज़ी दिखाने के लिए बारी की प्रतीक्षा में खड़े थे. मैं स्प्रिंग बोर्ड तक पहुंचा तो मन में ख़ुशी की लहर दौड़ गई.

छात्र ज़्यादा ऊंची छलांग नहीं लगा पा रहे थे, सो उन्हें छलांग की युक्ति कर के दिखाने के लिए मैं ने एक नया ही तरीक़ा अपनाया और इस व्यायाम की पूरी प्रक्रिया को तीन भागों में विभाजित कर लिया – प्रस्थान, छलांग और हवा में कलाबाज़ी.

पूरी तेज़ी प्राप्त करने के लिए पहले मैं चंद क़दम दौड़ा, बाज़ू ऊपर उठा लिए और स्प्रिंग बोर्ड को झटके के साथ छोड़ कर छत की ओर उछाल मारी. पहले मैं ने शरीर को पूरी तरह फैला दिया. फिर तेज़ी से गेंद जैसा गोल बना लिया, और इस के साथ साथ एक कलाबाज़ी खाई. पल भर के लिए मुझ में एक सनसनी सी व्याप गई. यह लचकदार बोर्ड से हवा में उछाल लेने पर होने वाली सनसनी से भिन्न नहीं थी. तभी कानों के भीतर कहीं गहराई में 'धमाके' की आवाज़ सुनाई पड़ी और मैं ने अपने को चारों ख़ाने चित पाया. आंखें छत पर टंगी थीं.

छत को सहारा देने वाला स्टील का ढांचा जाने क्यों पहले से कहीं अधिक ऊंचा दिख रहा था. और लगता था, वह धीरे धीरे घूम रहा है. व्यायामशाला के उत्तरी छोर पर बास्केट बाल की फेंक पकड़ की आवाज़ ज़ोर ज़ोर से गूंज रही थी. भला, वह पटाख़ा सा क्या था? शायद कोई चीज़ व्यायामशाला की छत पर आ गिरी थी. होगा. लेकिन मैं कितनी देर तक इस तरह पड़ा पड़ा छत की ओर ताकता रहूंगा? मैं वैसा ही चारों ख़ाने चित पड़ा था, और समय जैसे सपने की तरह बीता जा रहा था. फिर अचानक ही मुझे लगा कि बास्केट बाल की धम धमाक की आवाज़ें ग़ायब हो गई हैं, और व्यायामशाला में शक्ति की बाढ़ का सा जो परिवेश था, उस की जगह अब खलबली मच गई है. और मेरे चारों ओर छात्र घेरा बना कर खड़े हैं.

मैं ने जल्दी से खड़े होने की कोशिश की. लेकिन अजीब बात थी, खड़े होने की मेरी इच्छा का मेरे शरीर पर कोई असर नहीं पड़ा. मैं ने ज़ोर भी लगाया, पर अपने को तिल भर भी न हिला सका. मुझे ज़रूरत से ज़्यादा गरमी लग रही थी, और हाथ पांव तो जैसे भाप बन कर उड़ते से जान पड़े. और तब मस्तिष्क के किसी कोने में एक अनजाना सा भय जाग उठा.

"ज़रा मेरा हाथ उठा कर मुझे दिखाओ

तो." मैं ने प्रथम वर्ष के एक छात्र से कहा, जो टकटकी लगाए मुझे ताक रहा था.

उस ने ऐसा ही किया. लेकिन मुझे न तो उस की उंगलियों का स्पर्श महसूस हुआ और न अपना हाथ ही उठता हुआ लगा. तब मन में एक बात कौंधी – शायद मुझे जीवन भर इसी हालत में रहना पड़ेगा, और मैं घोर अवसाद में डूब गया.

व्यायामशाला की घड़ी उस समय ५.४५ बजा रही थी.

गुनमा विश्वविद्यालय का विकलांग चिकित्सा विभाग. परीक्षण कक्ष में सफ़ेद वर्दी वाले अनगिनत लोग एकत्र थे. उन में से कुछ मेरे विभिन्न अंगों को हथौड़े जैसी किसी चीज़ से बार बार ठोकते नज़र आ रहे थे. और ठोकने के साथ साथ मुझ से पूछते जाते, "दर्द होता है?" फिर उन्हों ने मेरे शरीर में जगह जगह सूइयां चुभोनी शुरू कीं. मुझे कुछ भी महसूस नहीं हो रहा था.

अंत में उन्हों ने मुझे इस तरह संभाल कर उठाया, मानो किसी बड़ी ही नाजुक चीज़ को उठा रहे हों, और एक अलग कमरे में ले जा कर पलंग पर लिटा दिया. वहां जल्दी जल्दी मेरे एक नथुने में रबर की नली खोंस दी गई और उस में से आक्सीजन निकल कर सिसकारती हुई मेरी नाक में चढ़ने लगी. इस से मुझे बड़ा आराम मिला क्योंकि मुझे सांस लेने में बड़ी कठिनाई हो रही थी.

इसेसाकी शहर में रहने वाली मेरी वहन और जीजा जी सब से पहले मेरे पास पहुंचे. मेरे मां बाप उन के कोई दो घंटे बाद पहुंचे. ख़बर मिलने के समय वे दोनों धान के खेत में काम कर रहे थे. उन्हें यह जताने के लिए कि मुझे कुछ ख़ास चोट नहीं आई है, मैं मुसकरा दिया. साथ ही हाथ उठाने, टांगें हिलाने और फिर उठ कर बैठ जाने की कोशिश भी की. लेकिन यह सब किसी ऐसी साइकिल पर पैडल मारने जैसा था जिस की चेन उतरी हुई हो. मैं हिल तक नहीं सकता था.

मैं ने सोचा, शायद यह सपना है. सवेरे आंख खुलेगी तो मैं अपने छः बिस्तरों वाले कमरे में होऊंगा. यह सफ़ेद छत, कमरे में निरंतर आती जाती ये नर्सें, ब्लड प्रेशर वाले ये तमाम यंत्र – सब कुछ लुप्त हो जाएगा, और मैं हमेशा की तरह जल्दी जल्दी नाश्ता करते हुए सोचूंगा, रात मुझे कैसा भयानक सपना आया था!

"नींद आ रही है?" मां की चिंता से थरथराती आवाज़ मुझे यथार्थ जगत में खींच लाई. मैं ने डरते डरते धीमे से आंखें खोलीं – ओह, यह तो अस्पताल ही है!

"तुम्हें नाहक तकलीफ़ उठानी पड़ी. मां! इतनी दूर चली आईं. घबराना मत. वैसी कोई बात नहीं."

डाक्टर और नर्सें रात भर आते जाते रहे और दुनिया भर की काररवाई करते रहे. अनगिनत बार मेरी नाड़ी देखी गई और स्टेथिस्कोप से छाती का निरीक्षण किया गया. इन तमाम हरकतों से मेरी हालत की गंभीरता का अंदाज़ा होता था. मेरी ग्रीवा के सात कशेरुकों में से दो – चौथे और पांचवें – बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गए थे; यह बात डाक्टरों ने मुझे बाद में बताई.

१८ जून १९७०. कल से ही मैं इस भ्रम का शिकार था कि मैं घुटने मोड़े पड़ा हूं. इस से बड़ी दिक़्क़त हो रही थी और मैं बुरी तरह थकन महसूस करने लगा था. मैं ने अपनी बहन से कहा: मेरी टांगें सीधी कर दो. मुझे

लगता था कि पांव मैं ने खुद नहीं मोड़े, बल्कि अपने आप मुड़ गए थे. लेकिन बहन ने कहा कि टांगें तो फैली हैं, और शुरू से ही फैली पड़ी हैं.

"नहीं, नहीं!" मैं उत्तेजित हो कर चीख़ पड़ा, "अब बरदाश्त नहीं हो रहा है."

मेरी आंखों से आंसू बह निकले. उस समय कुछ डाक्टर भी मेरे पलंग के पास खड़े थे. वे मुझे ऐसी बुरी हालत में देखें, यह मुझ से बरदाश्त नहीं हुआ. मैं ने चेहरा हाथों से ढांपना चाहा, लेकिन हाथ उठे ही नहीं. लगा, मैं बिना हाथ का हूं. बिजली की तीखी रोशनी बड़ी निर्दयता से मेरी आंखों पर चुभ रही थी, और मैं अपना चेहरा दूसरी ओर मोड़ तक नहीं सकता था. मुझे जैसे बड़ी नृशंसता के साथ इस बात का एहसास कराया गया कि मैं पूरी तरह अपंग हो कर रह गया हूं.

## संकट के मोड़ पर

**१९ जून १९७०.** एक नर्स कैंची और रेज़र लिए आई. बोली, "तुम्हें ट्रैक्शन में रखना पड़ेगा, सो तुम्हारे बाल काटने आई हूं."

पता चला कि ट्रैक्शन का मतलब है: खोपड़ी में वज़न बांध दिया जाएगा, जिस से वह पीछे की ओर तनी रहे. इस से यह संभावना थी कि मेरी ग्रीवा की सरकी हुई हड्डियां फिर अपनी जगह बैठ जाएं.

डाक्टरों का एक पूरा जत्था कमरे में धंस आया. मुझे दवा दे कर मेरे शरीर के उस विशेष भाग को सुन्न कर दिया गया. फिर मोटर की घुरघुराहट गूंजने लगी. उन्हों ने मेरे मुंडे सिर के दोनों ओर एक एक छेद करना शुरू कर दिया. मशीन से हड्डी में छेद करने की रगड़ से पैदा होने वाले ताप की दुर्गंध मेरे नथुनों में घुसने लगी. धातु के एक टुकड़े में गुलेल की भांति जुड़े दो कांटे खोपड़ी में किए छेदों में कस कर बिठा दिए गए. फिर 'गुलेल' के हत्थी वाले भाग के साथ वज़न बांध कर उसे मेरे पलंग के सिरहाने एक घिर्री में लटका दिया गया. इस वज़न से मेरा सिर पूरी तरह पीछे की ओर खिंच गया. यह ढंग कितना बर्बर था! पर जो भी हो, मुझे दर्द नहीं हो रहा था. सच तो यह है कि इस हालत में मेरी गरदन को पहले से ज़्यादा आराम मिल रहा था. फिर मुझे यह सोच कर अथाह प्रसन्नता हुई कि इस तरह के भारी इलाज का मतलब यह है कि मेरी ग्रीवा की हड्डियां ज़रूर ठीक जगह बैठ जाएंगी.

**२० जून १९७०.** सांस लेने में मुझे दिक़्क़त हो रही थी. गहरी सांस लेता तो आधे ही में कुछ चिपकने सा लगता और महसूस होता, जैसे छाती को किसी लोहे की पट्टी से जकड़ा जा रहा हो. ढंग से सांस लेने के लिए मुझे शरीर की सारी ताक़त निचोड़ कर आख़िरी बूंद तक लगा देनी पड़ती.

नथुने में चढ़ी नली के कारण नाक से ख़ून आने लगा, जो बंद होने को ही नहीं आता था. सो नाक में जालीदार पट्टी भर दी गई और मुंह पर आक्सीजन मास्क लगा दिया गया. मैं ने मुंह से सांस लेने की कोशिश की लेकिन पर्याप्त हवा नहीं खींच सका. दम घुटता महसूस होता. सो और गहरी सांस लेने के लिए मैं और ज़ोर लगाता. इस प्रक्रिया से मैं इतना थक जाता कि मैं ने यह चिंता ही त्याग दी कि सांस आती भी है या नहीं.

क्या मैं किसी विशेष मोड़ पर पहुंच गया था? क्या संकट का क्षण आ पहुंचा था? मैं टकटकी बांध कर कमरे में मौजूद अपने मां बाप, पांचों बहनों और भाई की ओर ताकने

लगा. पहले मैं साधारण व्यक्ति के मुकाबले दोगुना तंदुरुस्त था, और मेरी शारीरिक शक्ति औसत से अधिक थी. फिर मैं जवान भी तो था! किसी भी हिसाब से देखें, मौत मेरे लिए बहुत दूर की बात थी. नहीं, नहीं; मौत के बारे में उस वक्त कोई सोचता ही क्यों?

२२ जून १९७०. आधी रात की बात है. मेरे सिर पर भरपूर रोशनी कौंध रही थी. सांस लेने के निरंतर आयास से मैं इतना थक गया था कि सुस्ताने के लिए पल भर को सांस लेने की चेष्टा भी रोक देता था. मैं सांस क्यों नहीं ले रहा, यह देखने के लिए बेचैनी से मेरे ऊपर झुकी बहनों के चेहरे मेरी नज़र में अचानक धुंधलाने लगते. पहचानना कठिन हो जाता था. आख़िर एक डाक्टर ने बताया, "तुम आसानी से सांस ले सको, इस के लिए हम तुम्हारी सांस की नली का आपरेशन करने वाले हैं. इस से तुम कुछ दिनों के लिए बोल तो नहीं पाओगे, लेकिन तुम्हें आराम मिल जाएगा."

मेरी आंखों पर पट्टी बांध दी गई. फिर शरीर के ऊपरी भाग को सुन्न कर दिया गया. ठोड़ी के नीचे कहीं से धातु के औज़ारों की खनक सुनाई पड़ रही थी. मेरे गले में छेद कर के एक विशेष नली डाल दी गई. ताज़ा हवा तेज़ी से मेरी छाती में पैठी. सांस लेने का काम मैं ने मशीन को सौंप दिया और मुझे तत्काल आराम आ गया. आराम के इस एहसास के साथ ही मुझ पर पिछले चंद दिनों की थकन हावी हो गई, और मुझे ज़ोर से नींद आने लगी.

मेरे मां बाप, मेरी कुंवारी बहनें, भाई तथा दोनों विवाहिता बहनों और उन के पतियों ने मेरी देखभाल के लिए पारी लगा ली. उन लोगों की नींद शायद ही पूरी हो पाती हो. सब के चेहरों से थकान टकपने लगी थी. इस से मैं बड़ा दुखी होता. कुरागानो जूनियर हाई स्कूल के कई अध्यापक भी छुट्टी के बाद मुझे देखने आ जाते. इस से मेरे परिवार के उस सदस्य को अपनी ड्यूटी से छुट्टी मिल जाती, जिस की उस समय बारी होती थी. स्कूल में बाल कल्याण विभाग की इनचार्ज श्रीमती मुराकी मिलने आई तो उन्हों ने बताया, "सार्वजनिक सेवा कक्ष में तुम्हारे जो कपड़े पड़े रह गए थे, उन्हें मैं ने धो डाला."

फिर मुझे बोलने में असमर्थ होने का कड़वा अनुभव झेलना पड़ा. पहले मैं भले ही उंगली तक नहीं हिला पाता था, लेकिन लोगों से बातचीत कर के मन तो बहला लिया करता था. अब तो अभिव्यक्ति का हर ज़रिया मुझ से छिन गया था. मैं पूरी तरह मोहताज़ पड़ा पड़ा छत की ओर ताकता रहता. बात करने को मन मचल रहा था. मैं बार बार मुंह खोल कर दूसरों का ध्यान अपनी ओर खींचने का प्रयास करता. फिर मैं अपना मुंह ख़ूब चौड़ा खोल कर एक एक अक्षर की ध्वनि के आकार बनाने की चेष्टा करने लगा. मेरी बहनें मेरे होंठों को पढ़ने के लिए स्वयं अपने मुंह चौड़े खोल देतीं और मैं अपने होंठों से जो शक्ल बनाता था उस की नकल कर के वह उन शब्दों का उच्चारण करतीं जो उन की समझ में उन आकारों से मेल खाते. लेकिन परिणाम उलटा सीधा निकलता और बात न बन पाती. शुरू शुरू में तो इस प्रक्रिया की धीमी गति पर मुझे इतनी चिढ़ होती कि कह नहीं सकता, लेकिन कुछ भी हो, आहिस्ता आहिस्ता यह चक्कर हमारे लिए ख़ासा खेल हो गया. और कुछ करने लायक तो मैं था नहीं, सो यही मेरे लिए मनोरंजन का एकमात्र साधन बन गया.

मेरी बहनों ने थोड़े ही दिनों में मेरे होंठों को पढ़ने में अच्छी ख़ासी महारत पा ली. मुझे सूझा कि जापानी भाषा की ध्वनियों और पदांशों के जो चिह्न उपयोग में लाए जाते हैं, यदि उन का एक चार्ट बना लिया जाए तो यह प्रक्रिया काफ़ी तेज़ की जा सकती है; तब बात भी ठीक ठीक समझी जा सकेगी. लेकिन अपने इस विचार को ही उन्हें समझा पाने में मुझे कठिनाई हो रही थी.

संयोग से एक दिन मेरी चौथी बहन को भी वही विचार सूझ गया, और वह एक चार्ट बना लाई. लेकिन जब वांछित चिह्न की ओर उंगली से संकेत कर के मुझ से पूछा गया तो दुर्भाग्यवश मैं हां में सिर नहीं हिला सकता था. सो बात जहां की तहां धरी रह गई. आख़िर मैं ने एक तरकीब खोज निकाली—यह जताने के लिए कि सही चिह्न चुना गया है, मुझे जीभ से हलकी सी आवाज़ कर देनी चाहिए. साथ ही यह कि हर चिह्न की ओर बारी बारी संकेत करने के लंबे और उबाऊ क्रम के बजाए पहले पंक्तियों की ओर संकेत कर के पूछा जाए, जिस से पता लग जाए कि वांछित चिह्न किस पंक्ति में है. फिर तो केवल उसी पंक्ति में अंकित संकेतों के बारे में पूछना रह जाता.

मुझे जो भी कहना होता उसे समझाने में बड़ा समय लग जाता. फिर भी जैसे जैसे हमें प्रक्रिया का अभ्यास होता गया, हम छोटे छोटे शब्दों और वाक्यांशों से बढ़ कर लंबे और परिष्कृत वाक्यों तक पहुंच गए. अब ज़रूरी बातों के बारे में परामर्श कर लेने की क्षमता तो आ ही गई थी, साथ ही साथ मुझे दिन दिन भर की उकताहट से भी छुटकारा मिल गया था. मृत्यु के आतंक के उस साये में भी हम शब्दों के इस रोचक खेल में तल्लीन रहते.

२७ जून १९७०. दुर्घटना के बाद दसवां दिन. मेरे परिवार के लोग सहिष्णुता की सीमा पर पहुंच चुके थे और थक कर चूर हो गए थे.

और मैं! मेरा हाल यह था कि तरल आहार पहुंचाने के लिए मुंह से ले कर पेट तक एक नली पड़ी थी. गले के छेद से निकली एक दूसरी नली मेरी श्वास नली को कृत्रिम श्वसन यंत्र से जोड़े थी. एक हाथ और एक टांग में अंतश्शिरीय (इंट्रावीनस) नलियां घंसी थीं. मालपुए की सी आकृति वाली एक विशेष गद्दी पर टिके मेरे सिर से कर्षण भार लटका था, और नीचे मूत्रनली लगी थी. और इन की जांच करने के लिए नर्सों की आवाजाही लगी ही रहती. वे नाक का ख़ून बंद करने के लिए उस में ठुंसी पट्टी बदल देतीं, गले से पंप द्वारा बलग़म निकाल देतीं, और तापमान तथा रक्तचाप मापती रहतीं.

मैं इस बात को किसी भी तरह भुला नहीं पाता था कि ये लोग—मेरा परिवार, तमाम नर्सें और डाक्टर—मेरी जान बचाने की जी तोड़ कोशिश कर रहे हैं. मेरे मन में आया कि जो कुछ मेरे लिए किया जा रहा है उस के प्रति कृतज्ञता जताने के लिए मुझे, बस, इतना ही करना है कि ज़िंदा रहने के लिए कृत संकल्प रहूं.

## रोशनी जगमगा उठी

बचपन से ही मैं खूब स्वस्थ और तगड़ा था, साथ ही मुझ में जीतने की लालसा भी बड़ी प्रबल रही है. जूनियर हाई स्कूल में मैं दौड़ों में भाग लिया करता था और एथलीटों के लिए आयोजित एक प्रतियोगिता में मैं ने बांस कूद में विजय भी प्राप्त की थी.

हाई स्कूल में पहुंचने पर मैं हैवी जिमनास्टिक क्लब का सदस्य बन गया था.

साथ ही पर्वतारोहण में भी मेरी दिलचस्पी हो गई थी. और मैं उस का प्रशिक्षण भी लेने लगा था.

विश्वविद्यालय में मैं ने फ़िज़िकल एजुकेशन में ही उच्च शिक्षा प्राप्त की क्योंकि मैं उच्च स्तरीय जिमनास्टिक का अभ्यास जारी रखना चाहता था. मैं पी टी प्रशिक्षक भी इसी लिए बना कि अधिक से अधिक शारीरिक कसरत होती रहे. विश्वविद्यालय के दिनों से ही मैं जान बूझ कर विकट परिस्थितियों में जीने का अभ्यास करने लगा था. कुल एक छतरी, छोटा सा बिस्तर और कुछ गिने गिनाए पैसे ले कर मैं देश भर में घूमता फिरा—पूजा स्थलों के छज्जों के नीचे या समुद्र तट पर सो जाता, और अजनबियों से मांग मांग कर पेट भर लेता. मैं पहाड़ों की सैर करता फिरा. कई कई दिन तक वहीं पड़ाव डाले रहता. मुझे ऐसे ख़ेलों में दिलचस्पी थी जिन में जिमनास्टिक की तरह ख़तरा उठाने का मौक़ा मिले. मैं पर्वतारोहण का दीवाना था क्योंकि उस में मौत से दो दो हाथ करने का मौक़ा लगातार मिलता था. मैं सोचता था कि हमेशा ख़तरनाक परिस्थितियों से जूझते जूझते ताक़त बढ़ती जाएगी.

तो भी आज, इस विकट दुर्घटना के बाद, इस बेबसी की हालत में जिस चीज़ ने मुझे जीवित रखा था वह मेरे उन अनुभवों से प्राप्त की हुई कल्पित शक्ति नहीं थी, मुझे जीवित रख छोड़ा था मेरे अपने लोगों ने—मेरे पिता ने, मेरी मां ने, मेरे भाइयों ने, मेरी बहनों ने, मेरे दोस्तों और सहयोगी अध्यापकों, डाक्टरों और नर्सों ने. मुझे ज़िंदा रखा था मेरे छात्रों ने, जापान के रीति रिवाजों के अनुसार जिन्हों ने काग़ज़ मोड़ मोड़ कर सैकड़ों सारस बनाए और स्वस्थ होने की दुआओं के साथ मुझे भेजे. मुझे जिस शक्ति ने जीवित रख छोड़ा था वह आंतरिक नहीं थी, बल्कि यह शक्ति वह थी जो औरों ने मुझ पर बरसा दी थी.

३० जून १९७०. डाक्टर कीरयू ने मेरे कमरे में प्रवेश किया. "एक्सरे की रिपोर्ट मिल गई है. ग्रीवा की उखड़ी हड्डियां ठीक से बैठ गई हैं." उन्हों ने हर्ष भरे स्वर में सूचना दी.
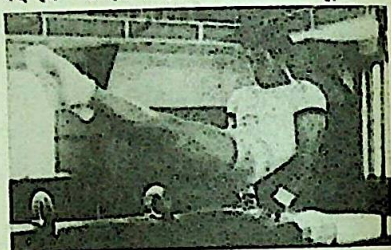
*दुर्घटना से पहले विश्वविद्यालय की व्यायामशाला में अभ्यास करते तोमीहिरो होशीनो*

कर्षण में जुते जुते १२ दिन हो गए थे, मेरा ख़याल था कि अभी और काफ़ी दिनों तक मुझे इसी हालत में रहना होगा, लेकिन डाक्टर कीरयू से मिले समाचार से मेरे सामने पसरी लंबी अंधेरी सड़क पर मानो रोशनी जगमगा उठी.

१७ जुलाई १९७०. संवेदना हरण विभाग (अनेस्थेटिक डिपार्टमेंट) के डाक्टर यामातो रोज़ श्वास यंत्र ठीक करने या जांच के लिए ख़ून लेने कमरे में आया करते थे, "तुम अब ठीक हो रहे हो," वह मेरा हौसला बढ़ाते, "बस, थोड़े दिन और झेल जाओ."

और उस दिन वे श्वास यंत्र से जुड़ी मेरी श्वास नली में पड़ी ट्यूब बदलने लगे. गले में घुसे ट्यूब का छोर निकाला गया तो गुनगुनी सांस की चंद फुफकारें सी निकलीं. पल भर का अंतराल... मैं फिर से स्वयं सांस लेने लगा.

"मैं शर्त लगा सकता हूं, तुम ज़रूर कुछ कहना चाहते हो! नहीं?"

डाक्टर यामातो ने मेरे गले के छेद को पट्टी से बंद कर दिया, फिर कहा, "बोलो, कुछ भी बोलो."

आवाज़ खोए मुझे पूरा महीना हो चला था. इस बीच मैं बोलने को तरसता रहता था, लेकिन अब जो बोलने का अवसर आया तो सूझा ही नहीं कि क्या बोलूं. अनगिनत शब्द मेरे मन में उफनते उमड़ते रहते थे, लेकिन अब उन में से एक भी मुंह से नहीं निकल पा रहा था. मैं बौखला सा उठा और उन क़ीमती क्षणों को बीतते देख बरबस बोल उठा, "अ . . . अ ... टेस्टिंग . . . टेस्टिंग . . . आज मौसम अच्छा है."

और मेरी इस हरकत का स्वागत एक ज़ोरदार ठहाके से हुआ. यह पहली हंसी थी जो मेरे कमरे में सुनी गई, और इस के साथ ही तनाव का वातावरण कुछ हलका हो गया.

२३ जुलाई १९७०. इधर कुछ दिनों से डाक्टर यामातो रोज़ सलाह देते कि मैं श्वास यंत्र का सहारा लेना छोड़ दूं, ताकि अपने आप सांस लेने का अभ्यास कर सकूं. हवा मेरे मुंह में प्रवेश करेगी, और मैं तुरंत मन की बात बता सकूंगा. सचमुच बोल पाना भी कितनी बड़ी नेमत है!

२९ जुलाई १९७०. मुझे बताया गया कि अब मेरी खोपड़ी से बंधा कर्षण हटा कर मुझे करवट लिटाया जाएगा. ४२ दिन बाद पहली बार मेरे शरीर की स्थिति में परिवर्तन होने वाला था. इस के लिए डाक्टरों और नर्सों का पूरा एक दल तत्परता से आ जुटा.

करवट लिटाए जाने के बावजूद मुझे इस का एहसास नहीं हो रहा था कि मैं करवट पड़ा हूं. छत अब मेरे कान के पीछे पहुंच गई थी, और सामने की दीवार छत बन गई. डाक्टर और नर्सें दीवारों पर खड़े जान पड़ते थे. मेरा सिर चकराने लगा और सांस लेने में कठिनाई होने लगी, इस लिए उन्हों ने फिर मुझे पहले की तरह चित लिटा दिया. मेरा दृष्टि क्षेत्र इतने लंबे अरसे से छत और दीवारों के ऊपरी भाग तक सीमित रहा था कि मेरा संतुलन बोध भी गड़बड़ा गया था. आगे से मुझे प्रति दिन थोड़ी थोड़ी देर के लिए करवट लिटा कर रखने का निश्चय किया गया ताकि मैं धीरे धीरे उस का आदी हो जाऊं.

## मेरी मां, मेरी हमसफ़र

३० अगस्त १९७०. मेरे अंदर संवेद क्षमता नाम को भी नहीं रह गई थी, इस लिए मैं शारीरिक हरकतों पर नियंत्रण नहीं रख पाता था. लेकिन डाक्टरों का मत था कि मेरा मूत्राशय अब अपने आप सिकुड़ना फैलना शुरू कर देगा, और उन्हों ने मेरे पेट में डाली गई रबर की उस नली को निकाल देने का फ़ैसला किया जिस के द्वारा मूत्राशय को पेशाब के रास्ते से मिला दिया गया था.

मेरी मां शीशे की पेशाबदानी मेरे शरीर से सटाए प्रतीक्षा करती रहीं. तीन घंटे बीत गए. मां को लगा, मूत्राशय के आसपास की जगह कुछ सख़्त हो रही है. एक नर्स ने जल्दी से आ कर उस स्थान को ज़ोर ज़ोर से दबाया; लेकिन पेशाब न उतरा.

इस विपत्ति के कारण हमारी सांस टंगी की टंगी रह गई थी, तभी पतली सी धार गिरने की आवाज़ आई.

"हो गया! हो गया!"

मां की उल्लास भरी किलकारी कानों में

गूंज उठी. मैं भी उछाह से भर उठा. स्वास्थ्य की ओर एक और क़दम—एक उपलब्धि.

लेकिन यह ख़ुशी थोड़ी ही देर की थी पेशाब हो जाया करे, इस के लिए मां को हर दो तीन घंटे बाद, यहां तक कि रात को भी, मेरे पेट की मालिश करनी पड़ती. इस से मेरी चमड़ी तक छिल गई. मुझ में पेशाब की हाजत महसूस करने की क्षमता तो थी नहीं, सो मां को घड़ी घड़ी मेरे मूत्राशय की जांच करनी पड़ती थी.

गले में अब भी अधिकांश समय तक नली लगी रहती थी. जिस जगह नली गले में धंसी थी, वहां कभी कभी बलग़म जमा हो जाता. मां का इस से पहले कभी किसी मशीन से पाला नहीं पड़ा था. शुरू शुरू में तो मेरे गले का छेद देखते ही वह मरने मरने को हो जाती. लेकिन अब उसी मां की हालत यह थी कि वे श्वास यंत्र चलातीं; उस में लगी रबर की नली को गले के छेद में धंसा देतीं और बलग़म भी साफ़ करतीं. इन कामों में तो वे अब नर्सों से ज़्यादा दक्ष हो गई थीं.

मां ने मेरे पलंग के पास वाली संकरी सी जगह में ही जैसे तैसे अपना बिस्तर जमा दिया था. लेकिन उन के लिए आराम या रात को चैन से सो पाना असंभव था. यह सिलसिला कितने दिन चल पाएगा! मां पहले ही बड़ी दुबली थीं, अब और सिकुड़ गई थीं. मां मेरी हमसफ़र बन गई थीं, एक ऐसे सफ़र की साथी जिस का कोई छोर न दिखाई पड़ता.

**१ सितंबर १९७०.** मेरा बिस्तर अब एक बड़े कमरे में लगा दिया गया था. इस में छः बेड थे. मेरा बेड खिड़की के पास था. इस कमरे में रोशनी ही रोशनी थी.

अस्पताल में भरती होने के बाद से आज पहली बार मुझे आकाश दिखाई पड़ा—पतझड़ के मौसम का स्वच्छ, पारदर्शी, गहरा नीला आकाश. कितना अद्‌भुत लग रहा था! जिस इमारत में पड़ा पड़ा मैं घोर पीड़ा और ज़िंदगी और मौत के झूले में झूलता अनिश्चय की यंत्रणा भुगत रहा था, वह इस जगमगाते, मोहक आकाश के नीचे खड़ी थी!

अब एक हद तक मुझे अपनी विकलांगता का आभास हो चुका था. मैं समझ गया था कि फिर कभी वैसा नहीं हो सकूंगा जैसा दुर्घटना के पहले था. श्वास यंत्र हटा दिया गया था, और मूत्र नलिका (कैथीटर) भी निकाल कर मुझे इस बड़े कमरे में स्थानांतरित कर दिया गया था, ताकि मुझे लोगों का साथ मिल सके. दुर्घटना के तत्काल बाद के दिनों में मैं बहुत कमज़ोर हो गया था, यहां तक कि उंगलियों के नाख़ून तक उतर गए थे इधर स्वास्थ्य में कुछ सुधार होने लगा तो नए नाख़ून आने लगे. जैसे भी हो, मुझे लगता कि मेरा शरीर, लकवे का मारा निकम्मा शरीर, धीरे धीरे स्वस्थ हो रहा है.

नवंबर के अंत तक पीठ के नीचे कब्जे के सहारे बिस्तर ऊंचा कर के मेरे ऊपरी आधे शरीर को उठाया गया. डाक्टर का आदेश था कि हर दिन मुझे थोड़ा अधिक उठाया जाए ताकि मैं बैठने का आदी हो सकूं. बिस्तर अगर एकाएक ऊंचा कर दिया जाता तो मैं ठेस लगने से बेहोश हो जाता.

***मेरी मां के संस्मरण.*** *बड़े कमरे में स्थानांतरण से माहौल बदल गया. जहां तक तोमीहिरो के पक्षाघात की बात है, हालत बड़ी निराशाजनक थी. लेकिन जब कभी उस की हालत ज़रा ठीक लगती, या रोज़ के मुक़ाबले थोड़ा अधिक खा लेता तो मैं चैन की सांस लेती और अपने को हौसला बंधाती कि वह ठीक हो रहा है.*

नवंबर में बिस्तर का सहारा ले कर तोमीहिरो, पूरी तरह न सही, आधा अधूरा तो बैठ ही लेता था. अभी झुक पाने की क्षमता बड़ी ही मामूली थी. मैं इस विषय में बहुत अधीर थी, क्योंकि ज़रा सी चूक से अगर उस का सिर कभी अपने ही भार से तकिए पर से लुढ़क जाता तो उसे तेज़ बुख़ार हो जाता. पेशाब के रास्ते में कभी रुकावट आ जाती तो तीन तीन चार चार घंटे तक पेशाब न उतरता. ऐसे में उसका पेट सूज जाता और तबीयत भारी हो जाती. होंठ नीले पड़ जाते और भूख ग़ायब हो जाती.

ऐसा अकसर होता रहता. ऐसी छोटी मोटी बातें, जिन का दुर्घटना से पहले कोई महत्व नहीं था, अब इतनी महत्वपूर्ण हो गई थीं कि उन पर तोमीहिरो का जीना मरना निर्भर करता था. यातना के उस दौर में कुछ अच्छे दिन भी आए थे जब हमें लगता कि उस के घाव सचमुच भर रहे हैं और मन में आशा की किरण कौंध जाती.

९ दिसंबर को दिन के १२.४५ पर मैं ने तोमीहिरो को अजीब सी आवाज़ में कुछ कहते सुना: मैं ने उस की ओर ताका तो त्रस्त हो उठी.

उस की आंखें उलटने लगी थीं और हाथ पांव ठंडे पड़ गए थे. मैं ने नाम ले ले कर ज़ोर ज़ोर से पुकारा, पर कोई जवाब नहीं. डाक्टर ने उसे होश में लाने की कोशिश की, लेकिन कोई फ़ायदा नहीं.

डाक्टर ने चेतावनी दी, "इस के सगे संबंधियों और दोस्तों को, जिसे भी ख़बर देनी हो, दे दीजिए—अंत आ पहुंचा है!"

आख़िर वही होने वाला है। मैं थर थर कांपने लगी. टेलीफ़ोन के नंबर तक नहीं घुमा पा रही थी.

९ दिसंबर १९७०. आधी रात को आंख खुली तो देखा, तमाम डाक्टर और नर्सें घेरे खड़े हैं, "शुक्र है भगवान का! तोमीहिरो, शुक्र है!" मां को जैसे अनमोल निधि मिल गई थी. मुझे कुछ पता ही नहीं था कि वे किस बात के लिए भगवान को धन्यवाद दे रही थीं. हां, इतना ज़रूर लग रहा था कि कोई बहुत बड़ी बात हो गई है.

बाद में चल कर सब कुछ याद आया—उस समय अचानक ही मुझे लगा था कि मेरे पांव सुन्न हो रहे हैं और धीरे धीरे यह जड़ता रेंगती सी मेरे ऊपरी धड़ पर हावी होती जा रही है. साथ ही साथ मुझ पर घोर वैराग्य छाने लगा. फिर मैं ने अपना चीत्कार सा सुना, "मां, मेरी टांगें पथरा रही हैं!" और बेहोश हो गया.

अगले दिन जब मां ने बताया कि क्या हुआ था तो मुझे झुरझुरी आ गई. लेकिन नसीब मुझ पर मेहरबान था—लोग आख़िर मुझे होश में लाने में सफल हो ही गए. जान बच गई. पर मुझे यह प्रतीत हो रहा था कि मेरा जीवन—मेरे तन से परे मुक्त अस्तित्व—स्वयं वहां खड़ा था, अतुलनीय आभा से दप दप अनूठा जीवन.

## एक और वसंत

मार्च १९७१. अस्पताल में ९ महीने बीत चुके थे. मैं पहली बार कमरे से बाहर निकला—स्ट्रेचर पर. मुझे बाहरी रोगियों के विभाग में एक्सरे के लिए ले जाया जा रहा था. एक्सरे फ़ोटो मेरे कमरे में भी लिया जा सकता था, लेकिन मेरी गरदन अब मज़बूत हो गई थी और मेरे डाक्टर का ख़याल था कि दृश्य परिवर्तन मेरे लिए अच्छा रहेगा. उन्हों ने मेरे सिर को ठीक से स्थिर कर दिया, फिर बड़ी सावधानी से उठा कर मुझे स्ट्रेचर पर डाला गया. पहिया गाड़ी मुझे कमरे के बाहर ले

चली. मां आगे आगे चल रही थीं. "यह असिस्टेंट प्रोफ़ेसर का कमरा है," उन्हों ने बताया. वह काफ़ी ख़ुश थीं. "और वह बाथरूम है."

भीतरी आंगन में खड़े चेरी के विशाल पेड़ पर फूल खिल आए थे. नर्स कामीमुरा ने स्ट्रेचर रोक दिया ताकि मैं उस दृश्य को आंख भर निहार सकूं.

इस के कोई चार पांच साल बाद मैं ने मिस कामीमुरा को बताया कि उस समय मैं भावविभोर हो गया था. "चेरी के उस खिले पेड़ को देख कर मुझे लगा कि मेरा बच जाना कितना अच्छा रहा! चेरी के उस वृक्ष जैसी सुंदर वस्तु को मैं अपनी आंखों से देख तो पाया. जीवित रहना भी कितना विलक्षण है!"

लेकिन उस समय तो भावावेग के कारण मुंह से एक शब्द भी नहीं फूटा था.

**जून १९७१.** मेरे फेफड़े अब सामान्य रूप से काम करने लगे. आख़िर श्वास नली के छेद को भी बंद कर देना संभव हो गया. मां भी ख़ुश थीं: अब अचानक श्वास यंत्र संभालने के लिए या मेरे गले में अटकते बलग़म को साफ़ करने के लिए मां को खाना पीना छोड़ कर भागना तो नहीं पड़ेगा.

धातु की आक्सीजन नली कैनुला गले से निकाल दी गई तो छेद तेज़ी से भरने लगा. उस के भरने के बाद सांस का खरखराना बंद हो गया, और मैं ज़रा ऊंची आवाज़ में बोलने लायक हो गया.

**अगस्त १९७१.** अस्पताल के एक सहायक प्रोफ़ेसर का ख़याल था कि जिन लोगों की ग्रीवा की हड्डी क्षतिग्रस्त हो जाती है, उन पर गरमी का तीक्ष्ण प्रभाव पड़ता है. उस का यह ख़याल ज़रूरत से ज़्यादा सही निकला. गरमी आई तो भले ही मुझे गरदन से नीचे कुछ भी महसूस नहीं होता था, फिर भी लगता मानो मैं तपते तवे पर पड़ा हूं. शरीर पर बर्फ़ रखने से भी ठंडक मालूम न होती. मेरे बदन का तापमान ३८० अंश सेल्शियस (१०१ फ़ारेनहाइट) तक पहुंच जाता था, और काफ़ी देर तक इतना ही बना रहता.

इस की वजह यह थी कि मुझे पसीना नहीं आता था. दुर्घटना में लगी चोट के कारण पसीना लाने वाली ग्रंथियां निष्क्रिय हो गई थीं. मैं ने एक आईने की मदद से देखा कि मेरा पेट और मेरी टांगें सूख गई थीं और झुलसी झुलसी लगती थीं. आहत होने के बाद मैं ने पहली बार अपनी सूरत देखी थी. ओह, मेरा शरीर क्या था और क्या बन कर रह गया था!

"तुम्हारा शरीर ठंडा रखने के लिए हमें बर्फ़ की थैलियां रखनी होंगी और तुम जितना भी पानी पी सको, पिलाते रहना है." डाक्टर ने कहा. "फिर, पेशाब होने पर तुम्हारा तापमान कम हो जाएगा."

मैं जीभ बाहर निकाल कर ज़ोर ज़ोर से हांफने लगा. मां घबरा कर मेरी ओर लपकीं. हो क्या गया! "मैं कुत्ता जो ठहरा," मैं ने हंसते हुए कहा, "और तापमान से छुटकारा पाने के लिए मैं भी वही कर रहा हूं जो गरमी से परेशान होने पर कुत्ते करते हैं."

**फ़रवरी १९७२.** उस दिन तीसरे पहर बर्फ़ गिरने लगी. पहले बर्फ़ गिरते देख मेरा मन बच्चों की तरह उछल कूद करने को मचल उठता था. मैं ने मां को, स्ट्रेचर से मुझे बाहरी रोगी विभाग वाले गलियारे में ले जाने को राज़ी कर लिया. वहां मैं शीशे की बड़ी खिड़की से सट कर लेटा लेटा बर्फ़ गिरना

देखता रहा. सफ़ेद सफ़ेद गोले निरंतर आकाश से गिरते रहे — मुझे लग रहा था मानो मेरा शरीर हवा में उठते उठते अंतरिक्ष में तैरने लगा है.

अपने कमरे में लौटा तो श्वास नली बलग़म से रुंध सी चली थी और सांस लेना दूभर हो रहा था. मैं ने गलियारे में ढेर सारी ठंडी हवा फेफड़ों में खींच ली थी. अब गले में छेद तो था नहीं, इस लिए नर्स ने श्वास वाली ट्यूब मेरे मुंह में उड़स दी. यह सुई के छेद में से हवा खींचने जैसा लग रहा था.

डाक्टर निशिमुरा लपकते हुए कमरे में घुसे, "मुंह खोलो," उन्हों ने आदेश दिया. और अपना मुंह मेरे मुंह पर दृढ़ता से जमा कर उन्हों ने कई बार मेरे फेफड़ों में हवा धकेली — आंखों के आगे छाई धुंध छंटती जान पड़ी.

अगले दिन फिर मेरे गले में छेद किया गया, और दोबारा उस में ट्यूब खोंस दी गई — तब तक के लिए, जब तक जमे हुए बलग़म से मेरा दम घुट जाने का ख़तरा दूर न हो जाए.

मार्च १९७२. एक और वसंत. अस्पताल में मेरे भरती होने के बाद यह दूसरा वसंत था सुहानी धूप हम से लिपट गई: दिन बड़े और पहले से गरम होते गए. वसंत के ये लक्षण मेरे लिए आशा ले कर आए थे. मेरा स्वास्थ्य धीरे धीरे सुधर रहा था और मैं एक अनजाना सा उल्लास अनुभव करने लगा था. आदत के अनुसार, जो भी पास होता मैं उस के साथ घुल मिल कर बातें करने लगता और उसे चुटकुले सुना सुना कर हंसने हंसाने लगता.

लेकिन ऐसे भी क्षण आते जब आकाश की ओर टकटकी बांध कर ताकते ताकते मैं कल्पना में अपने आप को एकदम ऐसी ही दशा में देखता था — अगले वर्ष भी ठीक इसी दशा में, दस वर्ष बाद भी. कुछ भी तो नहीं बदलने का. मुझे जीभ चबाने की आदत पड़ गई थी. यह उन यंत्रणा भरे दिनों की निशानी थी, जब मैं दांत से जीभ काट कर आत्महत्या करने की सोच बैठता था. लेकिन इतनी हिम्मत कभी जुटा नहीं पाया था.

## "मैं लिखना चाहता हूं।"

१९७२ की गरमियां. अस्पताल में मेरी जान पहचान ताकाकू से हो गई. वह जूनियर हाई स्कूल का छात्र था, और गुरदे की बीमारी का इलाज कराने के लिए तोकियो के किसी अन्य अस्पताल में भेजे जाने के पहले मेरे ही वार्ड में रखा गया था. एक दिन उस की मां अन्य रोगियों के साथ साथ मुझ से भी मिलीं. उस से पता चला कि उस का बेटा वहां बेहद अकेलापन महसूस करता है, क्योंकि वहां किसी से उस की जान पहचान नहीं है. उस की मां 'टेप' ले कर आई थीं, ताकि उस पर हमारी आवाज़ में अभिनंदन रिकार्ड कर सकें. साथ ही वह अपने बेटे का 'ट्यूलिप हैट*' भी लाई थीं. ताकाकू चाहता था कि हम उस हैट पर अपनी ओर से कुछ संदेश लिख कर हस्ताक्षर कर दें. मैं मन मसोस कर रह गया. जी होता था कि मैं भी कुछ लिख कर भेजूं. जब वह यहां था तो मेरी उस से ख़ूब गहरी पट गई थी. मुझे मालूम था कि मेरे एक भी शब्द से उसे बड़ी प्रसन्नता होगी, मैं बीमारी में उस का साथी जो था.

और सहसा आवेग में आ कर मैं ने एक ऐसा काम कर डाला जिस की पहले कभी कोशिश नहीं की थी. मैं ने किसी से कहा कि नमदे की

* कपड़े का बना विशेष हैट, जिस की झालरदार किनारी होती है. यह हैट सिर पर औंधे फूल जैसा दिखाई पड़ता है.

नोक वाली क़लम (फ़ेल्ट पेन) मेरे मुंह में थमा दे. मैं ने कलम दांतों में पकड़ ली. और मेरी मां ने लड़के का हैट मेरे सामने थाम लिया. मैं ने शरीर की समूची ताक़त निचोड़ कर अपने सिर और गरदन में समेट ली. फिर सिर ज़रा उठाया. क़लम की नोक हैट पर छू गई और तिल जितना धब्बा बन गया. लेकिन सिर चंद मिलीमीटर ऊपर उठाने में ही मेरे अंदर की सारी ताक़त लग गई थी.

सांस इस तरह फूल आई, जैसे मैं मैराथन दौड़ से आ रहा हूं और सामने वाले दांत क़लम को मज़बूती से पकड़ने के कारण एक दम सुन्न पड़ गए थे. भिंचे गए होंठों के बीच से राल टपकने लगी थी. स्वयं सिर हिलाने की कोशिश कर के मैं ने अपने शरीर की सारी प्रणाली को झकझोर डाला था. मेरे दांतों के बीच क़लम अभी तक मज़बूती से दबी थी. मां ने हैट को क़लम के और पास ला दिया. उन्हों ने धीरे धीरे कर के उसे दाहिने और बाएं हिलाया, तो मैं ने जैसे तैसे उस पर चित्राक्षर 'तोमी' अंकित कर दिया. यह चीनी भाषा में मेरे नाम के दो अक्षरों में से पहला है.

चंद दिन बाद ताकाकू का फ़ोन आया. मां ने बात करने के लिए फ़ोन मेरे कान से लगा दिया. हैट पर मेरे हस्ताक्षर देख कर उसे बड़ी प्रसन्नता हुई थी. उस की बात सुनते सुनते और उस की खुशी का आनंद लेते हुए मेरे अंतर में एक अदम्य इच्छा उफ़न आई — अपने मुंह से लिखने की इच्छा.

अस्पताल के कमरे की बंद दुनिया में जकड़े आदमी को बाहर से आने वाले पत्र कितनी खुशी देते हैं. काश! मैं उन सब को आभार पत्र लिख सकता — अपने छात्रों को, पर्वतारोहण के साथियों को, अस्पताल में काम करने वाली प्रशिक्षणार्थी नर्सों को, और उन तमाम लोगों को जिन्हों ने मुझे पत्र भेजे थे. इस विचार से अभिभूत मैं ने मां से एक कापी और कुछ फ़ेल्ट पेन मंगवाने को कहा.

लेकिन एक लाइन भी ठीक तरह से खींच पाने में अभी महीनों लगने थे. जब मुझे लगता था कि सिर काफ़ी ऊंचा उठा सकूंगा, तब उसे तकिए से बड़ी मुश्किल से दो या तीन मिलीमीटर से अधिक नहीं उठा पाया था. और क़लम चलाने लायक़ हरकत देने के लिए अतिमानवीय शक्ति की ज़रूरत पड़ती थी. मैं ने कोशिश छोड़ी नहीं, क्योंकि हिम्मत हारने का मतलब लिखने का विचार छोड़ना ही नहीं, कुछ भी कर पाने की, यहां तक कि जीने की भी आशा छोड़ने जैसा था.

**दिसंबर १९७२.** दिन में दो तीन बार करवट बदलाई जाती ताकि पलंग पर पड़े पड़े मेरी पीठ में और घाव न होने लगें. एक दिन मैं करवट से पड़ा था. एक नर्स छात्रा मिस शिनोहारा ने सुझाव दिया, "करवट लेटे लेटे लिखने की कोशिश कर के देखो."

वह एक पैड ले आई और उसे मेरी आंखों के आगे टिका दिया. क़लम पर कपड़े की पट्टी लपेट दी गई, ताकि मैं उसे आसानी से दांतों के बीच पकड़ सकूं, और मुंह से टपकती लार भी वह सोख ले. नर्स ने कापी इतने पास कर दी कि वह क़रीब क़रीब क़लम की नोक छूने लगी. मैं ने सिर ज़रा सा सरकाया. काग़ज़ पर एक निशान बन गया. इस तरह मुझे सिर नहीं उठाना पड़ता था. सो ज़ोर लगाने की ज़रूरत ही नहीं रही. पहला अक्षर जो मैं ने लिखा वह एक बड़ा सा 'कटाकाना' (जापान की ध्वन्यात्मक लिपि की वर्णमाला) अक्षर था: आ. फिर उसी लिपि का मैं ने दूसरा अक्षर लिखा : ई.

सर्वोत्तम
रीडर्स डाइजेस्ट
जीवन कैसे शुरू हुआ?
भारत का प्रांत
पांडिचेरी

धीरे धीरे सफ़ेद काग़ज़ पर मकड़ी के जाले के काले धागों जैसे वर्गों के प्रतीक उभर आए. कलम पर लिपटी पट्टी राल से भीग गई. और राल ने रिस रिस कर तकिए को गीला कर दिया. इन समस्याओं के होते हुए भी मैं अपनी इस उपलब्धि से इतना प्रसन्न था कि फिर रुका नहीं. यहां तक कि गरदन दुखने लगी और जो प्रयास कटाकना वर्णमाला से शुरू हुआ था वह धीरे धीरे टेढ़ी मेढ़ी रेखाओं में सिमट कर रह गया. शाम को मुझे तेज़ बुख़ार हो गया. लेकिन मैं अगले दिन के इंतज़ार में था — कल मैं और अधिक शांत रह कर अभ्यास करूंगा. बुख़ार होते हुए भी उस रात मैं बड़े लंबे अरसे के बाद मीठी नींद सोया.

मार्च १९७३. लिखना शुरू किए चार महीने बीत गए थे और जिस काम के करने की मुझे बड़ी तमन्ना थी, अब उसे पूरा करने में सक्षम था — अपने छात्रों, अपने परिवार और अपने दोस्तों को पत्र लिखने की तमन्ना. कभी कभी एक पत्र लिखने में ही पूरा सप्ताह लग जाता, फिर भी मुझे महसूस होता था कि हर अक्षर जो मैं लिखता हूं, वह काग़ज़ पर कोरी लिखाई नहीं, बल्कि स्वयं मेरा अपना एक टुकड़ा है जो दूर दूर तक सफ़र कर रहा है.

## मां का स्पर्श

मई १९७३. मेबाशी क्राइस्ट चर्च मंडली की सदस्या मिस वातानेब मुझ से मिलने आईं. उन्हें अपने पादरी से मेरे बारे में पता लगा था. वे मेरे लिए ख़ूबसूरत गुलदस्ता लाई थीं. सफ़ेद नाजुक पंखड़ियों से घिरे पीताभ गर्भ केसर वाले ये फूल और नन्ही नन्ही छुई मुई सी पत्तियां बड़ी ही सुंदर लगीं. मैं इन्हें अपनी स्केच बुक में चित्रों के रूप में सुरक्षित कर लेने को ललक उठा और इस काम में जुट गया.

चित्र में पूरे तीन दिन लग गए. यद्यपि यह था कुल २०X१० सेंटीमीटर का, लेकिन यह छोटा सा चित्र मुझे पहले के उन तमाम चित्रों से अधिक सशक्त और सजीव लगा जिन्हें मैं ने कभी हाथ से बनाया था. मुझे इतनी प्रसन्नता हुई कि मैं ने चित्र के चारों ओर एक संदेश लिख कर उसे एक मित्र के पास भेज दिया. धीरे धीरे मेरी स्केच बुक आइरिसिस पुष्पों तथा सेमल के से रोएंदार फूलों के नन्हे नन्हे चित्रों से भर गई. ये फूल अकसर कमरे में पहुंच जाया करते थे.
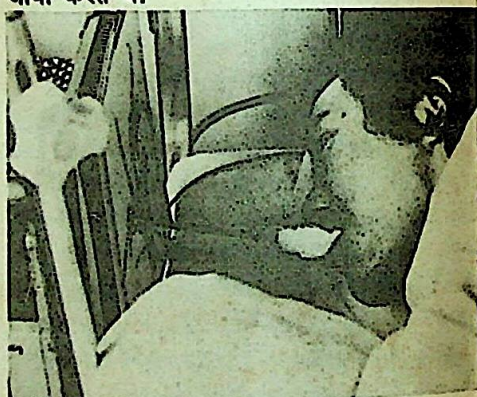
*चित्रकारी में लिप्त होशीनो*

१० जुलाई १९७३. मूत्राशय से पथरी निकालने के लिए मेरा आपरेशन किया जाना था. सो मेरी बदली मूत्र रोग विभाग में कर दी गई.

मुझे पेशाब करने में दिक़्क़त होने लगी थी. साथ ही मेरा तापमान ३९ डिगरी सेल्शियस (१०२ फ़ारेनहाइट) तक चढ़ गया था और पूरे दस दिन तक नहीं उतरा था. जांच करने पर पता चला कि मूत्राशय में कई पथरियां हो गई हैं. मुझ जैसे रोगियों को, जो लंबे समय तक बिना हिले डुले पड़े रहते हैं, अकसर पूरा

पेशाब नहीं होता. वही तलछट धीरे धीरे सख़्त हो कर पथरी बन जाती है.

मूत्र रोग से संबंधित तमाम आपरेशनों में यह सब से आसान होता है. इस के लिए वैसी चिंता की बात नहीं थी. लेकिन शारीरिक सहन शक्ति के अभाव और दिन प्रति दिन भयावनी होती गरमी से मैं इतना कमज़ोर हो गया था कि बोल भी मुश्किल से पाता था. पीठ पर पड़े छोटे छोटे बेड सोर (शय्या व्रण) भी बड़े होते चले गए. मैं शरीर से इतना तंग आ गया था, और मन इस कदर टूट चुका था कि समझ में न आता, अपने साथ क्या कर डालूं.

**१७ अगस्त १९७३.** मैं फिर विकलांग विभाग के अपने कक्ष में लौट आया था, जहां मैं खुश रहता था. फिर हेड नर्स की मेहरबानी से मुझे खिड़की के पास वाली अपनी पुरानी जगह भी मिल गई. उन का कहना था कि पीठ के ज़ख्मों पर धूप लगती रहे तो फ़ायदा होगा. शायद वे मुझे खुश करना चाहती थीं, क्योंकि ताज़ा घटनाओं ने मेरा मन तोड़ दिया था.

अब मुझे लगातार यह बात कुरेदती रहती कि इस तरह दूसरों पर इतना निर्भर नहीं होना चाहिए; अपने काम खुद करने की और, एक सीमा तक ही सही, सकारात्मक और प्रगतिशील ढंग से जीने की युक्ति खोजनी चाहिए. लेकिन घूम फिर कर मैं फिर वहीं पहुंच गया — आखिर हूं तो मैं एक गदा, बास मारता रोगी ही, जिसे घड़ी घड़ी बुखार चढ़ आता है और पेट सताता रहता है. ऐसे क्षणों में मैं मां पर भी बरस पड़ता और सब के लिए मुसीबत बन जाता.

**नवंबर १९७३.** दिन में तीन बार मां मुझे खाना खिलातीं. एक तो हिलने डुलने में असमर्थ मैं पीठ के बल पड़ा रहता, दूसरे, खाने की घड़ियों में अंतर भी बड़ा कम होता था, इस लिए भूख कभी लगने ही नहीं पाती थी. उस दिन खाने की ज़रा भी इच्छा न थी तो भी मां खाना लाईं. जाने कैसे ज़रा सा सूप छलक कर मेरे चेहरे पर गिर गया. बस, मैं गुस्से से फट पड़ा. मुंह में भरे चावल ज़ोर से थूक कर गरजा, "बेवकूफ़ औरत, हटा मेरे सामने से! मुझे नहीं खाना है!"

मां की आंखें छलछला आईं. उन्हों ने बिस्तर और फ़र्श पर बिखरे चावल समेटे. और मुड़ती मुड़ती रुंधे गले से बोलीं, "मैं तो हर तरह से जान लड़ा देती हूं, बस, यही 'बेवकूफ़ औरत' कहलाने के लिए..."

"चुप करो और दफ़ा हो जाओ यहां से! मेरा कुछ भी हो. तुम ने तो मुझे नाहक ही जना!"

आंसू पोंछती मां बाहर चली गईं.

बड़ी देर बाद वे लौटीं. चेहरे पर भिनभिनाती मक्खियां मुझे खाए जा रही थीं. मां ने दाहिना हाथ उठाया. मैं चांटे की प्रतीक्षा करने लगा — अब भड़ास निकालने की बारी मां की थी. लेकिन उन का हाथ हौले से मेरे चेहरे पर आया, मानो वे प्यार से हाथ फेर रही हों. मक्खियां उड़ गईं. हां, गाल पर मां के हाथ की सुखद नमी बनी रह गई — उन का हाथ काम करते करते खुरदरा हो गया था, पर उस का स्पर्श कितना मृदु था! और चेहरे पर व्याप्त वह सुखद सनसनी धीरे धीरे समूचे शरीर में फैलती जान पड़ी.

मां के बिना मैं बच नहीं सकता था.

उसी दिन से मैं ने फिर चित्रकारी शुरू कर दी, जो बीच में ठप सी हो गई थी.

**अक्तूबर १९७४.** मां अंदर आईं. उन के चेहरे से भरपूर आशा छलकी पड़ती थी.

उन्हों ने अस्पताल के स्टोर के सामने एक नए ढंग की पहिए वाली कुरसी रखी देखी थी, जिसे घेर कर खड़े तमाम डाक्टर जांच परख कर रहे थे. आम पहिए वाली कुरसियों से अलग, इस में सिर टिकाने के लिए एक विशेष व्यवस्था थी – हो सकता है, यह मेरे लिए ही मंगाई गई हो.

कुछ दिन पहले मैं ने डाक्टर से कहा था कि मैं पहिए वाली कुरसी चलाना सीखना चाहता हूं. जो भी हो, मैं इतने लंबे समय से निष्क्रिय पड़ा था कि मेरे लिए घुटने मोड़ पाना ही लगभग असंभव था. जैसे तैसे कर के मुझे बिठा भी दिया जाता तो मेरी गरदन सिर का बोझ नहीं संभाल सकती थी. और अभी तक हालत यह थी कि उठाने, बैठाने या अवस्था बदलने पर मेरे बेहोश हो जाने की आशंका थी. इन सब के बावजूद मेरे लिए एक ऐसी पहिए वाली कुरसी का बंदोबस्त किया जा रहा था जो मेरी विशेष आवश्यकताओं के अनुरूप हो.

मां ने जो पहिए वाली कुरसी देखी थी, उस में सिर तथा पांवों के लिए विशेष व्यवस्था थी और वह मेरे लिए पूरी तरह उपयुक्त थी. जैसे हिदायत दे कर बनवाई गई हो. इस के अतिरिक्त उस में एक और विशेषता थी – उस के पृष्ठ भाग को ४५० अंश तक पीछे झुकाया जा सकता था. जब हम पहली बार गलियारे में पहुंचे – मां कुरसी धकेल रही थीं – तो मेरी खुशी का पार नहीं था. जो भी रास्ते में मिला, मैं ने उसे हांक लगा कर ख़ास तौर पर बात की.

मां और मैं ने गलियारे में कई चक्कर लगाए. चार साल पहले अस्पताल में भरती होने के बाद इस क्षण तक मुझे कभी इतनी खुशी नहीं नसीब हुई थी.

मार्च १९७५. मुझे जो पत्र आते थे, उन में से मैं भरसक ज़्यादा से ज़्यादा पत्रों के उत्तर देता. इन दिनों मैं इबारत के साथ अक्सर फूलों के रेखा चित्र भी अंकित कर देता. मेरे मित्र इन सचित्र संदेशों को पा कर खुश होते थे. मैं और उछाह के साथ लिखता रहा. अस्पताल के कमरे में मुझ से मिलने आने वालों के लाए फूल ही प्रकृति से मेरे गहन संपर्क के माध्यम थे. मुझे लगता कि इन सजीव फूलों में न आकृति दोष होता है न किसी प्रकार का अभाव. मुझे चित्रकारी या पेंटिंग के बारे में कोई जानकारी नहीं थी, पर मैं समझता था कि अगर कोई फूलों को जैसा का तैसा अंकित कर सकता हो तो वह बढ़िया चित्रकारी या पेंटिंग कर सकता है.

किसी फूल को गहन एकाग्रता से चित्रित करते समय मैं स्वयं को चींटी जितना सूक्ष्म अनुभव करता – फूल के भीतर, पंखुड़ियों के बीच रेंगता, सिर से पांव तक पीले पराग से लथपथ.

## भविष्य

मैं ने अपने भाई से कहा कि कुछ जुगाड़ लड़ा कर कोई ऐसी टेक तैयार करो, जिस के सहारे कापी मेरे पलंग के पास रखी रहे और कापी को ऊपर नीचे, दाहिने बाएं, आगे पीछे करने की सुविधा भी हो. लेकिन वह होनी चाहिए काफ़ी छोटी ताकि कमरे के कोने में रखी जा सके.

स्टील के तरह तरह के पाइपों और मशीन के कुछ पुरज़ों की जोड़ तोड़ लगा कर मेरे भाई ने एक शानदार यंत्र सा बना डाला जो मेरी हर ज़रूरत पूरी करता था. अब मैं चित्रांकन में अधिक समय लगाने लगा, और मां को भी अब काफ़ी फ़ुरसत मिल गई थी. वे मेरे चित्रों

में रंग भरने लगीं. मेरी कापी में फूल ही फूल निखर आए.

मई १९७६. सातवीं मंज़िल पर स्थित नए विभाग के अपने कमरे की खिड़की से मुझे अकागी पर्वत की हरी भरी लहलहाती ढाल दिखाई पड़ती थी. मुझे घर की पुकार सी सुनाई पड़ती. लौट कर वहां पहुंचने को दिल मचलने लगता.

"डाक्टर साहब, क्या मैं एक रात के लिए घर नहीं जा सकता?" अंततः हिम्मत बांध कर मैं डाक्टर से पूछ ही बैठा.

"घूमने फिरने के लिए जाना चाहते हो? मेरे ख़याल में अब तो कोई हरज नहीं."

और छः साल बाद मैं पहली बार घर जाने वाला था.

दो एक दिन बाद मेरा भाई मुझे ले चला. कोई डेढ़ घंटे का सफ़र कार से तय करना था. हम ज़रा चिंतित थे – मैं इसे झेल भी पाऊंगा या नहीं. लेकिन खुले देहाती इलाके में पहुंचते ही मेरी सारी व्यग्रता दूर हो गई और उस की जगह गेहूं के लहलहाते खेतों और शहतूत के बागों की हरियाली से उमगे उल्लास ने ले ली

मां, भाई और भाभी ने मिल कर मुझे कार से उतारा और बरामदे में गद्दे पर लिटा दिया. पास ही से नहर में बहते पानी की कल कल छल छल और बंसवारी से आती हवा की कोमल सरसराहट गूंज रही थी. बुनी हुई ततामी चटाइयों की भूली बिसरी सुगंध नथुनों में सुरसुरा रही थी.

"बोलो, क्या खाओगे? जो भी मन कर रहा हो, बोलो." मां ने कहा.

"वही खाऊंगा, जो पिता जी रोज़ खाया करते हैं." मेरे लिए घर के सादा खाने से बढ़ कर क्या हो सकता था?

दूर, आंगन में फूलों से लदे एजालिया के उस पार, मुझे शांत पर्वत दिखाई पड़ रहा था. बचपन से ही मुझे इस से बड़ा लगाव रहा. मैं पर्वत को तब तक निहारता रहता, जब तक थक न जाता. आज लग रहा था, जैसे उन की सुंदरता पहली बार देख पाया हूं.

उसी समय से मुझे साल में चार बार घर जाने की अनुमति मिल गई थी. बाद में घर हो कर अस्पताल लौटते समय मुझे उदासी व्याप लेती. अस्पताल जाते समय मेरा मन बग़ावत करने लगता. मुझे महसूस होने लगा था कि मैं अब इतना स्वस्थ तो हो ही चुका हू कि अस्पताल के बाहर भी ज़िंदा रह सकूं.

अब सोचना यह था कि मुझे करना क्या है – अपने बारे में नहीं, मां के बारे में भी. हर रात उस संकरी सी जगह में सिकुड़ कर सोते सोते मां को कितना अरसा गुज़र गया – मेरे पलंग और खिड़की के बीच वाली, ततामी चटाई की चौड़ाई से भी संकरी जगह में मां कितने ही वर्षों से मेरे हाथ पांव बनी थीं. जब याद आया कि मां किस प्रकार इतने लंबे समय से अपनी ओर ज़रा भी ध्यान दिए बिना मेरी देख रेख में खटती रही हैं, तब जाना कि मुझे भविष्य के बारे में कुछ निर्णय करने ही होंगे. मैं ने एक कविता लिखी :

### गड़रिए का बटुआ

*काश, ईश्वर*
*एक बार – सिर्फ़ एक बार*
*मुझे बाज़ू हिलाने का दे दे दम*
*तो सहलाऊंगा मैं मां के दुखते कंधे*
*उन का दर्द कुछ तो हो कम*

*गड़रिए का बटुआ*
*झूलता है हवा में*

*और कहता है*
*आएगा वह दिन, ज़रूर आएगा.*

जुलाई १९७८. विकलांग विभाग के डाक्टर निशिमूरा और कोइजूमी शारीरिक विकलांग केंद्र में एक प्रदर्शनी देखने जा रहे थे. उन्हों ने सोचा, शायद मैं भी वहां जाना चाहूं.

मिस्टर वाशीज़ूका, जो विलकुल अपाहिज थे, मुह से आयल पेंटिंग करते थे जिस के विषय में पत्र पत्रिकाओं में काफ़ी चर्चा हो चुकी थी. मैं उन की चित्रकारी देखना चाहता था.

"ये मिस्टर होशीनो भी मुंह से बहुत बढ़िया चित्रकारी करते हैं." डाक्टर निशिमूरा ने केंद्र के निदेशक श्री कुबोता को बताया.

मैं शर्म से लाल हो गया क्योंकि मिस्टर वाशीज़ूका के चित्र बहुत बड़े आकार के भी थे, साथ ही कोई बड़े ध्यान से जांच कर भी यह अनुमान नहीं लगा सकता था कि ये चित्र मुंह में बुरुश थाम कर बनाए गए होंगे. केंद्र से लौटते समय मैं उत्साह से भरा था – मैं भी ऐसे ही बढ़िया चित्र बना सकता हू.

## मेरे चित्रों की प्रदर्शनी

फ़रवरी १९७९. डाक्टर निशिमूरा मेरे लिए एक संदेश ले कर आए: "श्री कुबोता का सुझाव है कि तुम अपने चित्रों की प्रदर्शनी करो. क्या ख़याल है?"

मैं इस सुझाव पर चकित रह गया. मैं ने डाक्टर से ही अनुरोध किया कि मेरी ओर से माफ़ी मांग लें.

डाक्टर कोइजूमी भी इधर ही आ निकले. दोबारा सोचा तो ख़याल आया कि इस मामले में श्री कुबोता को सहमत करने का सब से कारगर तरीक़ा यह रहेगा कि उन्हें अपने चित्र ही दिखा दिए जाएं कि ये क़तई प्रदर्शनी के योग्य नहीं हैं.

मार्च के अंत में श्री कुबोता स्वयं पधारे. "तुम्हारे चित्रों को देख कर तो मैं चकित रह गया. सचमुच कमाल के हैं. हम प्रदर्शनी कर ही डालें. ठीक रहेगा न? तुम जानो, कोई वैसा लंबा चौड़ा आडंबर नहीं करना है. बस, केंद्र की दीवारों पर तुम्हारे चित्र लटका दिए जाएंगे. उन्हें देखने वालों में विशेषकर केंद्र के निवासी होंगे और वे लोग जो फिज़िकल थेरेपी के लिए आते हैं."

सोचा यह गया कि प्रदर्शनी के बारे में यह कहने के बजाए कि ये चित्र मुंह से बनाए गए हैं, बेहतर यह रहेगा कि एक एकाकी मानव के जीने के ढंग का विस्तृत परिचय दिया जाए. प्रदर्शनी में शुरू शुरू के फ़ेल्ट टिप्ड पेन से किए गए प्रयास भी शामिल किए जाने थे–वे सारी कविताएं, जिन की मैं ने बुख़ार की हालत में प्रतिलिपि तैयार की थी. रोएंदार फूलों के छोटे छोटे चित्र. फिर रेखा चित्रों की वे कापियां थीं जो अब अतीत की आतुर स्मृतियों का माध्यम बन कर रह गई थीं. उन में अंकित अथवा चित्रित हर रेखा अपने निर्माण के क्षण के भावावेग में डूबी थी. अब तक ऐसी दस से अधिक कापियां भर चुकी थीं.

अप्रैल १९७९. श्री कुबोता प्रदर्शनी की व्यवस्था के संबंध में बातचीत करने आए. "हर चित्र के साथ लगाने के लिए टिप्पणियां भी लिख दो तो कैसा रहे?" उन्हों ने सुझाव दिया. "उसे चित्रित करते समय तुम्हारी जो चिंतन धारा थी, उस के विषय में लिख सकते हो या इन के बारे में जो कुछ सामान्य रूप से तुम सोचते हो, वही लिख दो."

कहना जितना आसान था, करना उतना ही मुश्किल. मुझे यक़ीन था कि मैं वास्तव में जो कुछ महसूस करता हूं, वह लिख नहीं पाऊंगा. मुझे लगा कि किसी कठिन से कठिन प्रयास के मुक़ाबले कलेजा चीर कर दिखा पाना कहीं ज़्यादा कठिन है.

**१५ मई १९७९.** आख़िर प्रदर्शनी का उद्घाटन हो ही गया. मैं अस्पताल में बेड पर पड़ा पड़ा छत की ओर ताक रहा था—बस, एक ही कामना थी—काश, मैं अंतर्धान हो सकता. प्रदर्शनी के बारे में ख़याल तो यह था कि वह एक साधारण सी घटना साबित होगी, लेकिन पत्रिकाओं ने उस में गहरी दिलचस्पी दिखाई. यहां तक कि एक टेलीविज़न कंपनी का ग्रुप भी आ धमका.

**२० मई १९७९.** मैं अस्पताल के गलियारे में अपनी पहिए वाली कुर्सी पर बैठा था. तभी नर्सों की सहायक कुछ परिचारिकाएं आ पहुंचीं. "हम ने आप की प्रदर्शनी देखी," उन में से एक बोली, "और हम सब रो दीं. नहीं, नहीं, ऐसा नहीं कि दया या तरस वरस जैसी कोई बात हो, बस यों ही. आप की मां भी वास्तव में कुछ और ही हैं!" वह बोलती गई, "मैं भी आप का एक चित्र लेने की सोच रही थी, लेकिन वहां तो हर चित्र पर लाल लाल गोले लगे थे—मतलब, सब के सब पहले ही बिक चुके थे. यही बात है न?"

मेरे अधिकांश चित्र बिक गए, यह सुन कर मैं हकबका उठा. मैं ने जल्दी से एक आर्ट गैलरी के मालिक श्री युताका इशीदा को बुलवा भेजा. मेरे चित्रों को लगाने का काम उन्हीं की देखरेख में हुआ था. वे समय समय पर मुझे सलाह भी देते रहते थे. आने पर वे बोले, "लोगों ने तुम्हारे चित्र ख़रीदे तो उन से प्रभावित हो कर ख़रीदे हैं. तुम उन पर कोई ज़ोर ज़बरदस्ती तो करने गए नहीं. इस लिए शान से सिर उठाओ! अनुभव करो. इस में परेशानी की क्या बात है?"

श्री कुबोता रोज़ प्रदर्शनी के कोने में रखी आगंतुक हस्ताक्षर पुस्तिका के पृष्ठों की फ़ोटो प्रतिलिपि ले कर आते. "एकदम कल्पनातीत लगता है!" उन्हों ने बताया, "प्रदर्शनी का गलियारा ठसाठस भरा रहता है! लोगों की टोली पर टोली छोटी छोटी बसों में उमड़ी पड़ती है! खुद मैं ने सपने तक में न सोचा था कि ऐसा हो जाएगा."

**हस्ताक्षर पुस्तिका से**

*"मैं ख़ुद भी विकलांग हूं. मुझे लगा कि हर चित्र से श्री होशीनो की भावनाएं, उन की पीड़ा, उन का विषाद, और उन का हर्ष सब कुछ पूरी तरह अभिव्यक्त होता है. मैं पक्षाघात से पीड़ित हूं. होशीनो की इन कृतियों से मुझे अपार हर्ष के साथ साथ प्रोत्साहन भी मिला है."* —कुरोडा

*मुझे अब इस बात पर उतना अचरज नहीं रहा कि श्री होशीनो ने बुरुश मुंह में पकड़ कर चित्र बनाए हैं, और इसी तरह मुंह में क़लम पकड़ कर लिखाई भी की है. मैं भी तो अभिभूत हुआ उन के संकल्प और हृदय की दृढ़ता से. मैं आप का आभारी हूं."* —को सेकिगूची (कीरी-इ* कलाकार)

मां के अथवा मेरे पास जो चित्र और रेखाचित्र थे वे अब केवल हमारे नहीं रह गए थे. वे हमारे छोटे से अस्पताल की सीमाओं से परे औरों के हृदय में समा गए थे. पिछले पांच वर्षों में कोई ६० कृतियां तैयार हुई थीं. एक एक कर के सब चली गईं तो मुझ में

*कीरी-इ : काग़ज़ में कट आउट कर के चित्र बनाने की विशेष जापानी कला.

आशातीत स्फूर्ति और प्रसन्नता का संचार हुआ.

पिछले काफ़ी दिनों से मुझे एक सवाल परेशान कर रहा था कि अस्पताल छोड़ने के बाद मैं घर चला जाऊं, या विकलांगों की किसी संस्था में भरती हो जाऊं. मैं ने श्री कुबोता से परामर्श किया. उन्हों ने बड़ी तत्परता से स्पष्ट सलाह दी. "तुम्हारा शरीर स्वस्थ हो गया है तो सीधी सी बात है, घर जाओ. संस्था तो आख़िर संस्था ही होती है."

अस्पताल से इतनी दूर जाते भी मुझे घबराहट होती थी. पर श्री कुबोता ने साहस बंधाया, "क्यों, तुम्हारे पास चित्रकला नहीं है क्या? तुम कितने भाग्यशाली हो कि तुम्हारे पास भावाभिव्यक्ति का ऐसा विलक्षण माध्यम है. तुम तो घर जा कर पूरे उत्साह और तत्परता के साथ चित्रकारी में जुट जाओ."

मैं ने अपने भाग्य को सराहा कि मुझे ऐसे भले और हितैषी व्यक्ति का संपर्क मिला.

वैसे सोचा जाए तो क्या मैं पहले ही अस्पताल से बाहर नहीं पहुंच गया था! क्या मेरे चित्र, मेरे शब्द इस चारदीवारी के पार के स्थानों की शोभा नहीं बढ़ा रहे थे? क्या समाज ने पहले ही अपनी सीमाओं में मेरा हार्दिक स्वागत नहीं किया था?

## नई जड़ें

**१४ सितंबर १९७९.** अप्रैल में एक नई व्हील चेयर आ गई जो बिजली से चलती थी. यह मेरी ठुड्डी की हरकत से चलती थी. शरीर का एक मात्र अंग ठुड्डी ही ऐसी रह गई थी जिसे मैं इच्छानुसार घुमा फिरा सकता था. अप्रैल से मैं इस नई कुरसी पर चल रहा था और इसे इतनी आसानी से चला लेता था मानो वह मेरी नई टांगें हों. रहीं मां, सो वे अब मेरा कामकाज करने में किसी नर्स जितनी निपुण हो गई थीं. आख़िर मेरे अस्पताल छोड़ने का समय आ ही पहुंचा.

उस रोज़ हेड नर्स तीन चार बार मेरे पास आईं. मैं जा रहा हूं, इस बात से वे ख़ुश थीं, लेकिन साथ ही मेरे जाने का उन्हें दुःख भी हो रहा था. विदा होने से पहले जब वे अंतिम बार मेरी नब्ज़ देख रही थीं. तब लगा जैसे उन की उंगलियों के पोरों से निकलती क्षमा की एक गुनगुनी धारा ने मेरी नौ वर्षों की खीझ और शिकायतों को धो बहा दिया है.

मैं कमरे से बाहर निकला तो देखा, दूसरे वार्डों की नर्सें और परिचारिकाएं भी मुझे विदा कहने के लिए गलियारे में आ जुटी थीं. वे मां का हाथ थाम कर रो पड़ीं. मुझे बरबस आंसू पी जाना पड़ा क्योंकि आंसू पोंछने के लिए मुझे मां से ही कहना पड़ता, और तब वे शायद और भी ज़ोर ज़ोर से रोने लगतीं.

**अकागी पर्वत** की तलहटी में वह घाटी थी जिस में वातारासे नदी बहती थी. वातावरण में जानी पहचानी सुगंधियां मंडराने लगी थीं. गांव के घरों पर लाखों वर्षों की तराश से उभरी, पर्वत की कोमल गोलाइयों का साया था. इन्हीं पर्वतों की ओर निहारते निहारते बचपन में मैं ने कितने ही सतरंगे सपने देखे थे, तो भी आज मैं कुछ भी ऐसा न संजो सका जिन में उस की आंशिक झलक भी होती. लेकिन आज मैं अपनी कमर सीधी किए और सिर ऊंचा उठाए लौट रहा होऊंगा. मुझे महसूस होता था कि जिस घोर यंत्रणा और हताशा के दौर से मुझे गुज़रना पड़ा है उस ने मुझ पर एक अमूल्य निधि सी बरसा दी है, जो मेरे अंतस्तल की गहराइयों में समा गई है. पर उसे भौतिक नेत्रों से नहीं देखा जा सकता.
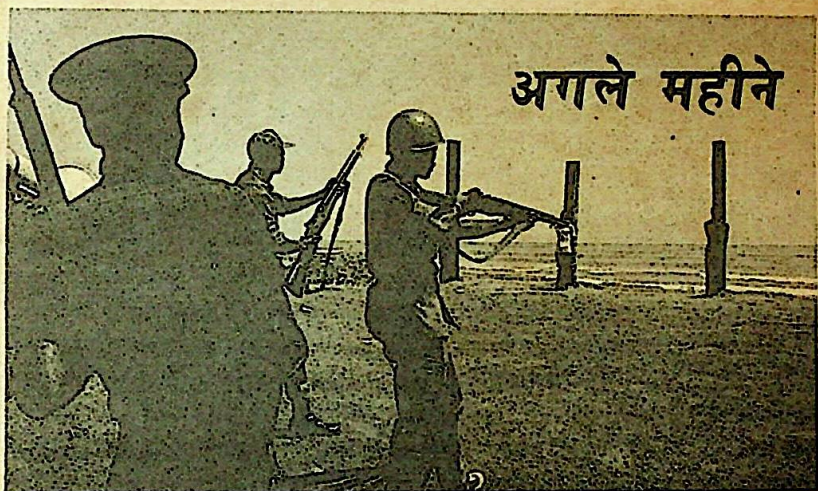
**सारे जहां से अच्छा**
जी हां, हिंदोस्तां हमारा. वह देश जो अपने आप में एक पूरी दुनिया समोए है, जहां के रहने वाले एक दूसरे से बहुत अलग लेकिन एक हैं

**व्यायाम अष्टक**
ऐसे सहज व्यायाम जो हर कोई कर सकता है और अपने शरीर को सुंदर सुडौल बना सकता है

**दांपत्य एक तराजू**
इस का काम पति और पत्नी को एक दूसरे से ज़्यादा वज़नी साबित करना नहीं है, बल्कि उन में संतुलन स्थापित करना है

**डबिंग का कमाल**
डबिंग से किस प्रकार एक भाषा की फ़िल्म आज सारे संसार के अन्य भाषा भाषी लोगों की समझ में आ सकती है, पढ़िए

**अफ्रीका का अंधा युग**
यह महाद्वीप अभी तक साम्राजी शोषण का शिकार था—और अचानक इसे आधुनिक औद्योगिक देशों से मुकाबला करना पड रहा है... इस स्थिति ने बड़ी विकट सामाजिक और राजनीतिक तनावों को जन्म दिया है. रोचक और सहज पठनीय समीक्षा... सर्वोत्तम पुस्तक

**तौबा, मेरी तौबा**
नया साल आ रहा है. मैं कसम खाता हूं कि इस साल कौन कौन सी बेहूदगियां नहीं दोहराऊंगा...

**डायबिटीज यानी मधुमेह**
यह बीमारी एक बार आती है तो जाने का नाम नहीं लेती... लेकिन आप इसे अपने काबू में रख सकते हैं और स्वस्थ जीवन बिता सकते हैं...

**यह सब तथा बहुत कुछ सर्वोत्तम के जनवरी ८५ अंक में**

और अब, आगे से मैं निरंतर सक्रिय रहूंगा—वह लिखने में जो केवल मैं ही लिख सकता हूं, और उन चित्रों को बनाने में, जिन्हें केवल मैं ही बना सकता हूं.

मेरे सामने प्रशस्त भविष्य पसरा पड़ा है.

**सरसों के फूल**

*यह डंठल कितनी आसानी से टूट गया*
*ठीक उस डंठल सा जो मेरी गरदन था*
*लेकिन इस टूटे डंठल से सरसों ने*
*नई कोंपल फोड़ दी*
*और एक फूल खिला दिया*
*मैं भी वही पानी पीता हूं जो यह फूल*
*पीता है और मुझ पर भी सूरज की*
*वही किरणें बरसती हैं— मैं भी एक*
*मज़बूत डंठल बन जाऊंगा*

**संपादकीय टिप्पणी :** लेखक अपने घर लौट गया और अप्रैल १९८१ में उस ने मसाको वातानेब से शादी कर ली, मेबाशी चर्च आफ़ क्राइस्ट की सदस्या वही मसाको वातानेब जिस के तारक पुष्पों के उपहार ने तोमीहिरो के अंतर में चित्रकारी की प्रेरणा जगाई थी. वे दोनों अब गुनमा में तोमीहिरो के पैतृक घर में रहते हैं. तोमीहिरो की दूसरी पुस्तक, 'काज़े नो तावी' (पवन का सफ़र) १९८२ में छपी थी, और उस के चित्र तथा लेख अनेक पत्र पत्रिकाओं में छपते रहते हैं. उस की मां तोमोनो को आज भी आशा है कि उन का बेटा एक न एक दिन बिलकुल ठीक हो जाएगा.

'अई, फूकाकी फूची योरी' (प्रेम : नरक की गहराइयों से) से संक्षिप्त. कापीराइट १९८१. तोमीहिरो होशीनो. प्रकाशक : रिप्प-शोबो तोकियो

## अटपटे चटपटे

छुट्टियां भी कैसी अटपटी आती हैं. हर अमरीकी यही चाहता होगा कि १६२१ की बढ़िया फ़सल की स्मृति में होने वाली शुक्राने की छुट्टी नवंबर के चौथे बृहस्पति के बजाए सितंबर में आए, बच्चों के स्कूल खुलने के बाद. —लास एंजेलस टाइम्स सिंडिकेट

गिरवी रख कर क़र्ज़ लेना चटपटा ही नहीं बल्कि बड़ा अटपटा भी होता है. क़र्ज़ की बात करते समय शर्म आती है. क़र्ज़ मिल रहा हो तो ख़ुशी होती है. पर सूद की दर सुनते हैं तो जी जलता है, और क़र्ज़ लिया नहीं कि चारों खाने चित्त. —आरबंस़ करंट कामेडी

## नाम नाम की बात

उस माइक्रो कंप्यूटर की स्क्रीन पर तसवीरें अपनी सारी सूक्ष्म बारीक़ियां लिए होती थीं अतएव उस का नाम भी था माईक्रोएंजेलो. —'कंप्यूटर डिज़ाइन'

ओहायो के बाथ नगर में वज़न घटाने की शौक़ीन महिलाओं ने जौगिंग करने वालियों का एक क्लब बनाया. इन की दौड़ने की पोशाक की पीठ पर इस महिला संगठन का नाम भी छपा था : बाथ टब्स.
—टीसी

## सांस की बदबू हटाइए. दांतों की सड़न रोकिए.
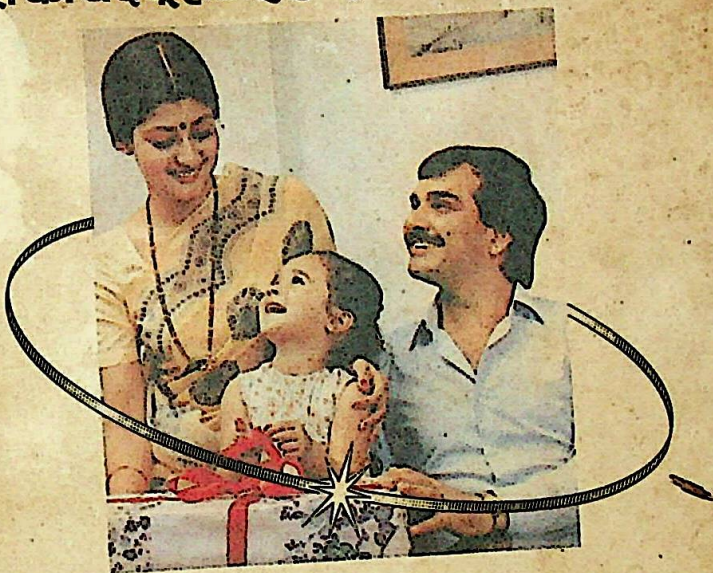
# कोलगेट का सुरक्षा चक्र अपनाइए !

कोलगेट से नियमित रूप से दांत साफ़ करने से
आपके परिवार में सभी की सांस ताज़ा व साफ़ और दांत मज़बूत व स्वस्थ.
यानि कोलगेट की सुरक्षा.

यह देखिए कोलगेट का परोसेमंद फ़ार्मूला किस तरह आपके दांतों की सुरक्षा करता है :

दांतों में छिपे अन्नकणों से सांस में बदबू और दांत में सड़न पैदा करनेवाले कीटाणु बढ़ते हैं.

कोलगेट का अनोखा असरदार झाग दांतों के कोने में छिपे हुए अन्नकणों और कीटाणुओं को निकाल देता है.

कोलगेट से नियमित रूप से दांत साफ़ करने से सांस ताज़ा व साफ़ और दांत मज़बूत व स्वस्थ.

ध्यान रखिए कि आपके परिवार में सभी हर भोजन के बाद कोलगेट से ही दांत साफ़ करें.
सांस की बदबू हटाइए. दांतों की सड़न रोकिए.
कोलगेट का सुरक्षा चक्र अपनाइए.
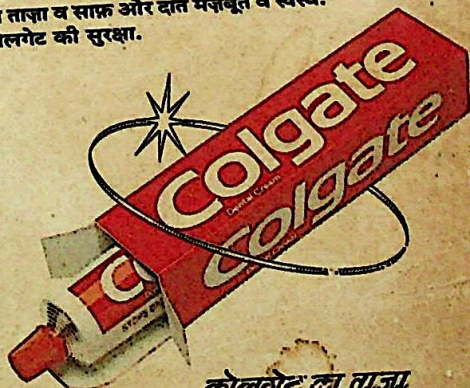
GK&E.B84 55 Hin

*कोलगेट का ताज़ा पेपरमिंट जैसा स्वाद मन में बस जाता है!*

नीरव : एड्रियन बुजक, आस्ट्रेलिया